तुलसी रामायन

1008 पंक्तिन मां

(संछिप्त रामचरितमानस)

अवधी गद्य अनुवाद सहित

सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता

अनुवादक

विनीता मिश्रा

श्री राम चरित भवन

ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

तुलसी रामायण

1008 पंक्तिन मां

(संछिप्त रामचरितमानस)

अवधी गद्य अनुवाद सहित

सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता

अनुवादक

विनीता मिश्रा

श्री राम चरित भवन, ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

प्रकाशक

श्री राम चरित भवन
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

Publisher

Shri Ram Charit Bhavan
Houston, USA

© 2022 तुलसीकृत रामचरितमानस के अंश को छोड़कर शेष प्रकाशक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण 2022

ISBN: 978-1-7362088-6-1

पुस्तक के समस्त अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा। चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलेक्ट्रॉनिक। जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में आंशिक उदधृत करने की छूट रहेगी।

समर्पन

या संकलन हम अपैं दिवंगत पिता श्री कल्यानप्रसाद रामजीलाल अग्रवाल अउ माँ त्रिवेनी के चरनन मां सादर समर्पित करित हन। उइ प्रभु राम केर सच्चे भगत रहैं। हालांकि उइ अब हमरे बीच मां नहीं ना, तबहूँ उनकेर रामभक्ति सदा प्रेरना देति रहत है।

ओमप्रकाश गुप्ता

आमुख

राम चरित मानस का अवधी भाषा मां लिखा जाब आज कै बिद्वान बर्ग बहुत हल्के मां लेत हैं। ई कहिके लोगै पल्ला झार लेत हैं कि तुलसी बाबा याक जन साधारन कै भाषा मां रामायन कै प्रचार के बरे अवधी भाषा कै प्रयोग किहिन। मुला सच्चाई एह ते बहुत दूर होय सकत है। कारन कि अवधी अवध क्षेत्र के बहिरे जन साधारन कै भाषा या बोली तौ रही नाय।

यहि लिए यहि बात पै सोच बिचार तनि गम्भीरता से होयेक चही। तुलसी बाबा स्वयं बृज भाषा अउर बुंदेलखंडी कै जानुकार रहेन। संस्कृत कै जानकर पण्डितय तो उनकर रहब भारु कइ दिहीन रहै। अब बाति ई अहै कि संस्कृत भाषा कै यतना बड़ा जानुकार मनई एक क्षेत्रीय भाषा, जेहका आज कै सरकार राम कै यतना बड़ा भक्त माने का बादव एक बोली के अलावा कुछूवो नाहीं मानत, अपने जीवन कै सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ काहे लिखिन?

पहली बात तो ई जानब ज़रूरी अहै कि तुलसी बाबा रामचरित मानस कै रचना अपने ७५ साल की उमर के ऊपर लिखब आरम्भ केहे रहिन। अर्थात् या ग्रन्थ एक गहन अध्ययन के बादै लिखा गा रहा।

दूसर बात कि अवधी भाषा अवध क्षेत्र कै भाषा आय, जहाँ कै कहानी केवल राम से नाय बल्कि देस के सभ्यता कै पूरा मूल हुवै ते आरम्भ होत है। इ मनु सतरूपा ते लैके, इक्ष्वाकु, सूर्यबंस, चंद्रबंस, हरिश्चंद्र, सगर, भगीरथ, अउर रघु तक चलत है। दुर्भाग्य रहा है कि यहि भाषा का यतना बढ़ावा नाहीं दीन गा अहै।

वइसे तौ अवधी साहित्य कै दायरा बहुत बड़ा रहा अहै, जइसे तुलसी रामचरितमानस, जायसी कै पद्मावत, कबीर व रहीम कै दोहे, लगभग पुराने जमानै से पद्य रूप मां रहा अहै। गद्य रूप मां बस गिनी चुनी रचना केवल आधुनिक काल मां मिलति हवै। यहि कारण डॉक्टर ओमप्रकाश गुप्ता कै ई रामचरितमानस कै गिने चुने दोहा चौपाई कै अवधी गद्य अनुवाद व व्याख्या बहुतै सराहनीय प्रयास होय।

हालाँकि “तुलसी रामायणः१००८ पंक्तिन मां केवल अनुवाद करय कै कोसिस आय, ब्याख्या नाहीं, यहकै सही वर्गीकरण गद्यीकरण होये, काहे कि इहिमा दुइनो भाषा अवधी होय, तौ अनुवाद नाय बल्कि पद्य का गद्य मां बदला गा अहै। ई सुरुआती प्रयास आय, आगे लोगन का बढ़ावा मिले।

एक ध्यान देय वाली बात अहै कि बढ़ावा देय के उद्देश्य कै पूर्ति भाषा के ख़ातिर वोहकर गहराई बहुत कामगीर साबित होय सकत है। उदाहरन तौर पै प्रस्तावना मां सत पँच कै भाव उपयोग कइके जवन अर्थ निकारा गा अहै, वहकै उद्देश्य समझेम आवाथै, मुला वहकै असली अर्थ इ नाहीं आय। सत कै अर्थ इहाँ सत्य ते अहै, और पँच कै पँच तत्व, नाहीं तौ ज्ञानी, न्यायिक सन्दर्भ ते अहै।

जौनो होय, ई प्रयास उपयोगी होये, ओमप्रकाश गुप्ता एवं विनीता मिश्रा को साधुवाद! आसा अहै कि अइसन प्रयास होत रहियें।

बलराम सिंह, पीएचडी
प्रोफ़ेसर
अध्यक्ष, इन्स्टिटूट ओफ़ एडवान्स्ड साइन्सेज, डार्टमाउथ, मेसाचुसेट्स, यू.एस.ए.
एडजंक्ट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ़ संस्कृत एंड इंडिक स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली

प्रस्तावना

सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरै।
दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्री रघुबर हरै॥
(मानस 7.130.X15-X16)

जउन मानुस पाँचौ-सात चौपाइन का अपैं हिरदय मां धारन करत है, वहिका पाँच परकार की अबिद्या ते उपजे वाले बिकारन ते रामजी मुक्त कइ देत हैं।

रामचरितमानस केर अंत मां गोस्वामी जी उपर्युक्त उद्धृत ई दुइ पंक्तिन का लिखिन हैं। विद्वान होर ई पंक्तिन का, बिसेस रूप ते 'सत पंच' का अरथ अपइं-अपइं मति केर अनुसार निकारिन हैं। 'सत पंच' केर अनेक अर्थन मां प्रचलित एक अरथ यह आय:- सात-पाँच। जानो तुलसीदास जी यह कहा चहत हैं कि यदि कउनो जन रामचरितमानस की पाँचौ-सात पंक्तिन का हिरदय मां धारि लेइ तौ वह सारे दोसन ते मुक्त होइ जाइ। उनका यहिका पूरा अंदाजु रहा होइ कि आवै वाले समय मां लोगन के लगे पूरी रामचरितमानस पढ़े केर समेहे न होय, यहिके बरे उइ मात्र पाँच-सात पंक्तिन का जीवन मां उतारै केर बात कहिन होइहैं।

गोस्वामी जी की इन पंक्तिन ते प्रेरित होइ के हमहूँ यह सोचेन कि आज हमार जीवन केतना व्यस्त हवै, हमका अइस लाग कि मानस केर याक ठइं संछिप्त रूप उपलब्ध होयेक चही, तो आधुनिक समाज अउ आगे आवै वाली पीढ़ीन केर बरे उपयोगी होइ सकत है। यही बिचार केर चलत आप की सेवा मां 'तुलसी रामायन 1008 पंक्तिन मां' प्रस्तुत हवै। गीता प्रेस ते परकासित रामचरितमानस मां 12,503 पंक्तियाँ हवै (एहमां संस्कृत मां लिखे भये इसलोकन की पंक्तिन कै गिनती सामिल नहीं ना)। एहिते प्रस्तुत संछिप्त मानस मूल पुस्तक ते लगभग आठेन प्रतिशत है। यहि संछिप्त रामायन मां 121 दोहा, 15 सोरठा औ 708 चौपाइं हैं। बाकी 28 पंक्ति अउरे छंदन ते हवैं। आसा करित है कि पाठक होर अपैं व्यस्त जीवन ते एहका पढ़े खितिर समय निकारि पैहियें। मानस ते संकलित 1008 पंक्तिन केर अतिरिक्त येह पुस्तक मां उनकेर सरल अवधी अनुवादौ

दीन गा है। पुस्तक केर अंत मां श्री रामायन जी केर आरती, श्री राम-स्तुति अउर पुस्तक मां आए वाले तरा-तरा केर पात्रन का तिनिक केर बिबरनौ दीन गा है।

रामचरितमानस केर हर सब्द लाखन-करोड़न बार लिखा, पढ़ा, औ ब्वाला गा है। एहिते हर सब्द अपैं आप मां एकु मंत्र-अस बनि गा है। लाखन सब्द औ हजार पंक्तिन ते मात्र कुछ पंक्तिन का संकलन कैसे कीन जाए यह अपैं आप मां याक चुनौती रही। संकलन करत बेरिया ई बातन का खास ध्यान धरा गा:-

1. मानस कथा केरी घटनान कै सततता औ निरंतरता बनी रहै।
2. जेतना होइ सकै थोरेहेम सही, मुख्य प्रसंगन का उल्लेख कीन जाय।
3. प्रसंगन केर आपसी तालमेलु अउ कथा क बहाओ बना रहै।
4. हर 7-8 चौपाइंन केर बादिमां याक ठइं दोहा या सोरठा राखा जाय।
5. अगर कहूँ छंद (दोहा, चौपाई, सोरठा केर अलावा) का प्रयोग भवा होय तौ वहिकेर तुरतै बाद याक दोहा/सोरठा आवै।

बिद्वान पठकन ते हमार करबद्ध प्रार्थना है कि उइ येह संछिप्त रामायन का गोस्वामी जी द्वारा रचित रामचरितमानस केर पर्याय कदापि न समझै। हम यह बिलकुल नहीं मानित कि कउनो रचना रामचरितमानस केर अस्थान लइ सकत है। हमार एक मात्र आसा यहै है कि आप सब जन येह संछिप्त रामायन ते प्रेरना लइके समपूरन रामचरितमानस पढ़े केर आनंद अवस्य लेवा चयिहौ। येह पुस्तक तेना तुम पंचेन केर मन मां प्रभु राम केर जीवन गाथा का बिस्तार ते जानै केर जिग्यासा जरूर उपजै, याहे पुस्तक केर मूल उद्देस्य राखा गा है।

यह हमार सौभाग्य आय कि प्रभु राम हमका मानस केर संछिप्त रामायन संकलन करैक प्रेरना दिहिन। अगर तुलसी-बाबा न होत, तो रामचरितमानसौ न होत, बाबा आपका कोटिन परनाम! हम आयोवा विश्वविद्यालय केर (भूतपूर्व) प्रोफेसर फ़िलिप लटगेण्डोर्फ़ का आभार कइसे परगट करी, उइ तो हमरे रामायन गुरु अहीं। जबै हमरे मन मां कउनो प्रस्न उठत है, हम उनते नि:संकोच पूछि लेइत हन, औ उइ तुरतै एक सद्गुरु की तना हमार मार्गदरसन कइ देत हैं। हम आदरनीय भाई श्री सत्य देव जी, जो स्वयं रामायन केर प्रकाण्ड विद्वान अहिं, केर बहुतै रिनी हन। येह संकलन केर पहिले

प्रारूप की हर पंक्ति का पढ़िके उइ आपन अनेक अमूल्य सुझाव दिहिन। हम पंडित प्रभुदयाल मिश्र, भाई श्री रामलक्ष्मण गुप्त, डॉ॰ राम गोपाल सिंह, श्रीमती उषा मेहरा, डॉ॰ आरती 'लोकेश', श्री निरंजन शर्मा, प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री, सुश्री विनीता मिश्रा, श्रीमती अलका प्रमोद अउ अनेक मित्रन औ हितैषिन केर बहुत आभारी हन जिनकेर अथाह सहयोग ते यह यज्ञ पूरन भा। हम भाई श्री बलराम ठकराल जी का बिसेस उल्लेख करा चहित है जे हिन्दी अउ अंग्रेजी केर प्रारूप का बार-बार पढ़िन औ हर बार अनमोल सुझाव दिहिन। हम येह यज्ञ मां उनका बराबर का सहभागी समझित हन।

अपैं अनुज डॉ॰ शिवप्रकाश अग्रवाल केर बिसय मां का कही, जे लछिमन की तरा अपैं अग्रज केर हर काज खितिर सदा तत्पर रहत हैं। प्रिय शिव, प्रभु राम तुम्हका सदैव प्रसन्न राखैं।

यहि पुस्तक का अवधी गद्य मां अनुवाद करै खितिर हम सुश्री विनीता मिश्रा जी केर अत्यंत ऋनी हन जे बड़े धीरज औ उत्साह ते येह पुनीत काजु का सम्पन्न कीन्हिन। प्रभु श्रीराम उनका सदैव प्रसन्न राखैं।

अंत मां, साकेतवासी माता-पिता औ सब गुरुअन केर चरन कमलन का सादर परनाम करित हन जिनकेर आसिरबादु केर बिना हमरे जीवन मां कुछौ संभव नहीं ना। जद्यपि पूरा प्रयास कीन्हा है कि पुस्तक मां त्रुटि न रहि जाएँ, तबहूँ जउन भी त्रुटि रहि गै होइ वहिकी खातिर हम अकेलेहे दोषी हन, एहि केर बरे छमाप्रार्थी हन। 'तुलसी रामायन 1008 पंक्तिन मां' पर आपकी टिप्पणी की परतिच्छा रही। जय सिया राम।

ओमप्रकाश गुप्ता
श्री राम चरित भवन, ह्यूस्टन
विजयादशमी, सम्वत 2079

मानस केरी पंक्तिन कै अवस्थिति कै संकेत ब्यौस्था

मानस कै हर एक पंक्ति का एक अनन्य संकेत प्रदान कीन गा है जेहिते वहिका सरलता ते इंगित कीन जा सकै। येहि संकेत केर तीन भाग हवैं। पहिल भाग काण्ड क्रम, दूसर दोहा/सोरठा क्रमांक औ तीसर पंक्ति क्रमांक तथा छंदन केर परकार बतावत है।

काण्ड क्रम संकेत

1. बालकांड 2. अयोध्याकाण्ड 3. अरण्यकाण्ड 4. किष्किन्धाकाण्ड
5. सुन्दरकाण्ड 6. लंकाकाण्ड 7. उत्तरकाण्ड

छंद प्रकार संकेत

D दोहा, S सोरठा, C चौपाई, X छंद

उदाहरन:

1. सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥ 1.8.C2
   यह पंक्ति बालकाण्ड मां दोहा 7 औ 8 केर बीचि मां है। यह दोहा 7 कै बाद दूसरी पंक्ति आय और याक चौपाई आय।

2. सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज ॥ 6.18.D2
   यह पंक्ति लंकाकाण्ड मां 18वें दोहे केर दूसर पंक्ति आय।

3. प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन। 1.17.S1
   यह पंक्ति बालकाण्ड मां 17वें सोरठा की पहली पंक्ति आय।

4. सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरै। 7.130.X15
   यह पंक्ति उत्तरकाण्ड मां दोहा 129 और 130 केर बीच मां है। यह दोहा 129 कै बाद 15वीं पंक्ति आय और छंद आय।

तुलसी मानस महिमा

व्हात न तुलसी अगर, न राम का हम जानित ।
सम्मुख ठाढ़े रहत प्रभु, तबहूँ न पहिचानित ।।

बेदन का मथि मथि के, मानस मणि जग का दिहिन ।
तुलसी किरपा ते प्रभु मिले, अर्धांगिनी जिनकी सिया ।।

आठ हजारन पंक्तिन ते, सार रचिन मानस का ।
धन्य मानी स्वयं का, जौ जंचै कुछु आपका ।।

जौ बना यह नीक तौ सब आपका परसाद है ।
हर कमी त्रुटि के बरे, मनु मां सहज बिसाद है ।।

ओम चरनन मां परा, प्रभु भक्ति आपनि दइ दियौ ।
तुलसी मारग पर चली, किरपा मो पर कइ दियौ ।।

बालकाण्ड

1 जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन । 1.0a.S1
2 करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ 1.0a.S2

जिनका सुमिरन करे ते सब तरा के काज सुफल होई जात हैं औउ उइ सब गणन मां सबते बड़े हैं, जिन केर मुंह हाथी के अस बिसाल है, जिनके लगे सबते जादा बुद्धि है अउर सब तना के गुनन का धारे वाले गनेस भगवान हमरेउ ऊपर दया करैं।

3 मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन । 1.0b.S1
4 जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन ॥ 1.0b.S2

जिनकी किरपा होइ जाय तौ गूंगौ ब्वाले लागत है, लंगड़े तक बड़े-बड़े परबत चढ़ सकत हैं अउर तो अउर कलजुग के सब तरा के पाप जरि जात हैं, अइस दयालु भगवान हमरेउ ऊपर दया करैं।

5 नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन । 1.0c.S1
6 करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥ 1.0c.S2

जिनकेर सरीर का रंग नीले कमल की तना नीला है, आंखी पूरी तना खिले भये कमल के फूल जस लाल औ जउन भगवान हमेसा छीरसागर मां स्वावा कर्त हैं वई परमपिता नारायन भगवान हमरे हिरदय मां बसि जाएँ।

7 कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन । 1.0d.S1
8 जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥ 1.0d.S2

अब हम उइ संकर भगवान ते किरपा मांगित है जिन्केर रंग कुंद के फूल औ चन्द्रमा की तना गोर है, जौ पारवती जी का बहुतै पियारे हैं औ करुना के धामु अहीं। वइ दीन-दुखियारन पर दया करत हैं औ कामदेव का नास करै वाले अहीं।

9 बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि । 1.0e.S1
10 महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥ 1.0e.S2

हम अपैं गुरु के चरन कमलन कै बंदना करित है, काहे ते वइ मानुस के रूप मां किरपा के सागर बनि के भगवान की तरा मिलत हैं। औ हम सब पंचेन के माया मोह के अंधकार का अपने बचनन ते अइसे मिटावत हैं जइसे सूरज के उगतै अंधेर मिटि जात है।

11 सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्र नाम जोरि जुग पानी॥ 1.8.C2
12 करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा॥ 1.8.C5
हम तौ या मानित हन कि ई सीता रामै आहिं जो समूचे संसार मां समाये भये हैं यही ते हम सबही का दूनो हाथ जोरि के परनाम करित हन। एह्के अलावा हम अपनी अल्प बुद्धि ते रघुनाथ जी के उइ गुणन का बखान करेका चाहित हन जहिके कौनो थाह नहीं ना।

13 एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा॥ 1.10.C1
14 मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥ 1.10.C2
यहिमां रघुपति के वहि नाम केर बरनन है जउन नांव दया करे वाला हवे, याहे नाम सब बेद पुरानन का सार आय। यही नांव का संकर भगवान पारबती के साथे जपा कर्त हैं काहे ते कि एह्के जपे तेना सब मंगल होत है अउर अमंगल दूर होइ जात हैं।

15 प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन। 1.17.S1
16 जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥ 1.17.S2
हम हनुमान जी का परनाम करित हन जउन सब तरा के दुस्टन के जंगल का जरा के भस्म कई सकत हैं औ सब ज्ञानन ते भरे पूरे हैं। जिनके मन मंदिर मां धनुस बान धारन करे वाले सिरी राम बसे हवैं।

17 सादर सिवहि नाइ अब माथा। बरनउँ बिसद राम गुन गाथा॥ 1.34.C3
18 संबत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा॥ 1.34.C4
अब हम आदर सहित सिउ जी का माथ नवा के राम के गुनन ते भरी उनकी निर्मल कथा का बरनन सुरु करित हन। या कथा का आरम्भ हम संवत सोरा सौ एकतिस मां भगवान हरि के चरनन पर सीस झुकाय के करे जा रहेन हन।

19 नौमी भौम बार मधुमासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा॥ 1.34.C5
20 रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा॥ 1.35.C7
चैत महीना की नौमी तिथि का मंगर के दिन यह चरित उजागर भा औ यहिका नांव रामचरितमानस धरा गा। एह्का सुनि भर ले ते सुनै वाले बिसराम पइहैं।

21 रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन॥ 1.35.C9
22 रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा॥ 1.35.C11
यह रामचरितमानस सब मुनियन का बहुत भावत है, यहिका सबते पहिले संकर जी रचिन औ रचि के अपने मन मां राखे रहे जब सही समय आवा तब सिउ महाराज यहि कथा का पारबती जी के आगे बांचिन।

23 तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर॥ 1.35.C12
24 कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई॥ 1.35.C13
काहे ते कि यह कथा का संकर जी बिचारिन, बिचारि के रचिन औ अपने मन मां धरिन यही ते बहुत हरस पूर्वक एहका नांव रामचरितमानस धरा गा। मतलब राम केर वह चरित जउन शिव जी के मन मां बसत है। अब हम सुख द्यावै वाली सुन्दर वही कथा का कहे जाइत है। सब सज्जन जने मन लगाय के आदर सहित यहिका सुनौ।

25 मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥ 1.112.C4
जिनके चाहे ते सब मंगल होत है औ सब अमंगल दूर होई जात हैं, दसरथ जी केरे आँगन मां बिहार करै वाले वइ राम हम पर द्रवित रहैं।

26 अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ॥ 1.188.C7
याक दाईं अजोध्या मां एक राजा भे दसरथ; उइ रघुबंसिन मां मणी के समान रहें औ जिनके बारे मां बेदौ मां बखान भा है।

27 कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत। 1.188.D1
28 पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत॥ 1.188.D2
उन्केरी कौसल्या आदि सब पियारी रानी पबित्तर आचरन करै वाली, पति के अनुकूल चलै वाली औ भगवान के चरन कमलन मां बिनम्रतापूर्वक दृढ़ प्रेम राखै वाली रहीं।

29 एक बार भूपति मन माहीं । भै गलानि मोरें सुत नाहीं ॥ 1.189.C1

एक बार राजा का मन ही मन मां बड़ा सोचु होई गा कि हमरे कौनो लरिका नहीं है।

30 निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ । कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ ॥1.189.C3
31 धरहु धीर होइहहिं सुत चारी । त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी ॥ 1.189.C4

तब राजा आपन सब दुःख सुख गुरु बसिष्ठ का सुनाइन और बसिष्ठ उनका बहुत तरा ते समझाइन बुझाइन औ कहिन, "हे राजा! तुम तनी धीरज धरौ तुम्हरे चार ठइं बेटवा होइह्ये जिनका तीनों लोकन मां नांव होई औ उइ सब भक्तन का भय दूर करे वाले होइह्ये।"

32 सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा । पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ॥ 1.189.C5
33 एहि बिधि गर्भसहित सब नारी । भईं हृदयँ हरषित सुख भारी ॥ 1.190.C5

फिर बसिस्ठ जी सृंगी रिसी का बोलावाइन और उनके द्वारा राजा दसरथ ते पुत्र होय खातिर जग्य करवाइन। जग्य के पुन्य परताप ते तीनों रानी गर्भवती भयीं औ उनके मन मां अपार हर्स भा।

34 नौमी तिथि मधु मास पुनीता । सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥ 1.191.C1
35 मध्यदिवस अति सीत न घामा । पावन काल लोक बिश्रामा ॥ 1.191.C2

पबित्तर चैत माह की सुकुल पच्छ नवमी तिथि का, भगवान के अति प्रिय अभिजीत मुहूरत मां, ठीक दुपहरी की बेरिया, न बहुत ठंडी है औ ना तेजु घाम है; यह पावन काल सब लोकन का सुख-सांति दे वाला रहा।

36 भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी । 1.192.X1
37 हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥ 1.192.X2
38 लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी । 1.192.X3
39 भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ॥ 1.192.X4

अइसे सुन्दर काल मां कौसल्या का कल्याण करै वाले औ सब दीन जनन पर दया करै वाले किरपा के स्वरुप परगट भे। जउन रूप रिसी मुनिन के मन का हरि लेत है ओहि अद्भुत रूप का दरसन पाय के माता बहुत हर्षित होइ रहीं हैं। भगवान अपने

चतुरभुज रूप मां परगट भे हैं, उनका बादरन का जस सांवर रंगु आँखिन का बहुत सोहात है। चारों भुजान मां सब अस्त्र-सस्त्र धारे हैं। यहि तना की सोभा से भरे पूरे, खर का बधे वाले भगवान जिनके बड़े-बड़े नैन हैं, तरा तरा के गहनन ते सजे धजे परकट भे।

40 बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार। 1.192.D1
41 निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥ 1.192.D2

उइ जनम तो कौसल्या के हियाँ लिहिन हैं मुला बांभन, गैया, देउता औ संत जनन के कल्यान करे के खातिर यह मानुस रूप धरिन है, यह सरीर उनकी अपनिन इच्छा ते बना है, जइसे हम पंचेन का सरीर माया ते बनत औ माया ते चलत है अइस उनकेर नाहीं हवैं, उनकेर सरीर औ वहिके सब काम उनकी अपनिहि इच्छा ते बने हैं औ उनहीं के इच्छा ते चलिहैं। एहका अरथ यहु भा कि भगवान ये धरती पर सब भले जनेन की रच्छा के बरे मानुस रूप धरि के आये हवैं।

42 दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना॥ 1.193.C3
43 जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई॥ 1.193.C5

दसरथ जी जब अपने कानन ते पुत्र के जनम के बिसय मां सुनिन तो जइसे ब्रम्ह आनंद मां डूबि गे अउ मन ही मन मां स्वाचै लाग कि जेह्के नांव लेहे भर ते सब सुभ मंगल होई जात है वहै भगवान हमरे घर मां आ गा!!

44 कैकयसुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ॥ 1.195.C1

कैकयी औ सुमितरा दुनो जनेन के सुन्दर-सुन्दर बेटवा जन्मे।

45 नामकरन कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी॥ 1.197.C2
46 सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥ 1.197.C6

अब जब नाम रखे के बेरिया आयी तो राजा गियानी मुनि होरेन का बोला पठइन। राजा दसरथ के गुरु बसिस्ठ मुनि कहिन कि यह जउन बड़का बेटवा आय यहिके तो भीतर सुख का बसेरा हवै, यह सारे संसार का सुख सांति आराम दे वाला होई, यहिते एह्कर नाम धरा जात है-'राम'।

47 बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥ 1.197.C7
48 जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा॥ 1.197.C8

दूसरका बेटवा सगरे जगत का भरन-पोसन करै मां समरथ होइ, यहिका नांव 'भरत' अउर जिनके सुमिरन करे भर ते सत्रुन केर नास होइ जाइ अइसी बात बेदन मां परकासित हैं, वे सबते छोट बेटवा केर नांव धरा जात है-'सत्रुघन'।

49 लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार। 1.197.D1
50 गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥ 1.197.D2

जिनके सब गुन लच्छन सुभ हवैं, वइ पुरे संसार का संभारे हैं औ रामौ का सबते अधिक पियारे हैं अइसे उदार चरित वाले बेटवा का नाम धरा गा-'लछिमन'।

51 बारेहि ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरन रति मानी॥ 1.198.C3
52 भरत सत्रुहन दूनउ भाई। प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई॥ 1.198.C4

अपने बालेपन ते लछिमन राम का आपन स्वामी मानि के यह समझि लीन्हिन कि रामै उनका कल्यान करे वाले अहिं, यही खातिर उइ राम के चरनन मां आपन मन लगाय दीहिंन। भरत औ सत्रुघन दूनों भाइन के बीच स्वामी औ सेवक वाली प्रीत बनि गे जेहिकेर सबै जन बड़ाई करत रहैं।

53 बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा॥ 1.203.C1
54 कछुक काल बीतें सब भाई। बड़े भए परिजन सुखदाई॥ 1.203.C2

हरि भगवान राम के रूप मां बहुत परकार की बाल लीला करिन औ सब सेवकन का आनंद दिहिन, धीरा धीरा यही तरा कुछु काल बीति गा। सब भाई बड़े होय लाग औ परिवार के लोगन का सुख दे लाग।

55 भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता॥ 1.204.C3
56 गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई॥ 1.204.C4

जब चारिउ भाई कुमार अवस्था के भये, माता-पिता औ गुरु उनका जनेऊ करवाइन। फिर राम गुरुकुल मां पढे खातिर गे औ थोरेहे समय मां सब बिद्या सीखि लिहिन।

57 कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल। 1.204.D1
58 प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल॥ 1.204.D2

कोसलपुर मां बसै वाले सब मनइ, मेहरिया, बूढ़ औ लरिकन का कृपालु राम प्रानन ते पियारे हैं।

59 बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी॥ 1.206.C2
60 जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं॥ 1.206.C3

एक बड़े ग्यानी मुनि राहैं; बिस्वामित्र। उनका बन मां बहुत नीक सुभ आसरम रहा, जहां एक ते एक मुनी जग्य औ जाप करत रहें। मुला मारीच औ सुबाहु जइसे राच्छसन ते डेरातौ रहें।

61 देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं॥ 1.206.C4
62 गाधितनय मन चिंता ब्यापी। हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी॥ 1.206.C5

रिसी मुनी होर जबहीं जग्य सुरु करैं बस देख्ते-द्याखत निसाचर उपद्रव मचावै लागें औ मुनि होर दुखी होइ जाएँ। गाधिसुत बिस्वामित्र का एहिते बड़ी चिंता होइ गै, उइ स्वाचै लाग कि भगवान के सहायता बिना ई पापी निसिचर न मरिहैं।

63 तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा॥ 1.206.C6
64 एहूँ मिस देखौं पद जाई। करि बिनती आनौं दोउ भाई॥ 1.206.C7

तब मुनि मन मां बिचार कइ के जानिन कि परभू तो धरती का भार हरे के खातिर अवतार लै चुकें हैं तौ काहे न चलिके उनके दरसन कीन जाय औ उनका भाई सहित मांगि के लै आवा जाय।

65 बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार। 1.206.D1
66 करि मज्जन सरऊ जल गए भूप दरबार॥ 1.206.D2

मन मां तरा तरा के मनोरथ करत, हुवां पहुंचे मां उनका तनिको देर ना लाग। सरजू मां अस्नान कइ के उइ राजा दसरथ के दरबार मां पहुंचि गे।

67 केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावउँ बारा ॥ 1.207.C8
68 असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही ॥ 1.207.C9
उनका देखतै राजा दसरथ उनके आवै का कारन पूछिन औ कहिन कि जाहे के बरे आये हो हम ओहिका पूरा करै मां तनिको देर न लगौबे। बिस्वामित्र बोले, "हे राजन! हमका असुरन के झुण्ड के झुण्ड सतावत हैं, यहि के बरे हम तुम्हरे जाचक होई के आये हन।"

69 अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा ॥ 1.207.C10
70 सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी ॥ 1.208.C1
तुम हमका छोटे भाई लखन के सहित राम का दै देओ जेहिते उइ निसिचरन का बधु कई के हमका सनाथ करैं। मुनि कै यह बात राजा का नीकि न लाग, उनकेर चेहरा उतरि गा औ हिरदय कांपे लाग।

71 तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा। नृप संदेह नास कहँ पावा ॥ 1.208.C8
72 अति आदर दोउ तनय बोलाए। हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए ॥ 1.208.C9
राजा दसरथ के गुरु बसिस्ठ उनका अनेक परकार ते सम्झाइन तब उनके मन ते संदेह का नास होइ गा, उइ दूनो लरिकन का आदर के साथ बोलवा के, उनका अपने हिरदय ते लगाइ के नीकि नीकि सिच्छा दिहिन।

73 पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन। 1.208b.S1
74 कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन ॥ 1.208b.S2
सब पर किरपा करे वाले, धीर बुद्धि वाले औ जो येह संसार के होय का कारन हैं; मनइन मां सेर अस लागत द्विनो बीर खुसी-खुसी मुनि के भय का हरै खातिर उनके साथे चलि परे।

75 चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥ 1.209.C5
76 एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥ 1.209.C6

रस्तै मां मुनि ताड़का का देखा दिहिन, वा उनहीं पंचेन की कइती मारे गुस्सा के दउरी चली आवत रही। हरि एकै बान ते ओहके प्राण हरि लिहिन मुला वहिका दीन जानि के आपन पदौ परदान किहिन।

77 प्रात कहा मुनि सन रघुराई । निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई ॥ 1.210.C1
रामचन्द्र सबेरे मुनि ते कहिन, "अब तुम निरभय होई के जग्य करौ।"

78 सुनि मारीच निसाचर क्रोही । लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥ 1.210.C3
79 बिनु फर बान राम तेहि मारा । सत जोजन गा सागर पारा ॥ 1.210.C4
यह सुनतै निसाचर मारीच रिसा गा औ रिसी मुनिन का दुसमन अपने साथी-संगातिन का लइ के आसरम मां धावा बोलि दिहिस। राम ओहिका बिना फर वाले बान ते अस मारिन कि वा सौ जोजन दूर सागर के पार गिरा जाय।

80 पावक सर सुबाहु पुनि मारा । अनुज निसाचर कटकु सँघारा ॥ 1.210.C5
81 तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया । रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया ॥ 1.210.C7
फिर राम अगिन बान ते सुबाहु का मारिन औ लखन राच्छसन की पूरी सेना का संघार कइ दिहिन। कुछ दिन हुवां नेवास कइ के राम जी बिप्रन पर दया बनाए रहे।

82 तब मुनि सादर कहा बुझाई । चरित एक प्रभु देखिअ जाई ॥ 1.210.C9
83 धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा । हरषि चले मुनिबर के साथा ॥ 1.210.C10
थोरे दिन बीतै के बाद मुनि बड़े आदर के साथ राम ते एक उत्सव का देखे के खातिर चले के बात कहिन, या उत्सव एक धनुस जग्य के रूप मां होय वाला है, अस सुनि के राम बहुत प्रसन्न भे अउर मुनि के साथै चलि परे।

84 आश्रम एक दीख मग माहीं । खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं ॥ 1.210.C11
85 पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी । सकल कथा मुनि कहा बिसेषी ॥ 1.210.C12
बीच मारग मां उन पंचेन का एक आसरम देखाई परा जहां न कौनो जीव जंतु रहा, न एकौ चिरैया; मुला एक पाथर के सिला जरूर रही, जेहिके बारे मां राम मुनि ते पूछे लाग तो मुनि सगरी कथा कहि डारिन।

86 गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर। 1.210.D1
87 चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर॥ 1.210.D2

बिस्वामित्र राम ते बताइन, "गौतम रिसी की पत्नी अहल्या साप बस पाथर देही होय गै रहै औ अपने उद्धार खातिर तुम्हरे चरनन की धूर चाहत है, तुम ओहि पर किरपा करौ।"

88 परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही। 1.211.X1
89 देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥ 1.211.X2

भगवान के पवित्तर औ सोक का नास करै वाले चरन के लगतै अहल्या तपस्या की मूर्ति हस परगट होई गईं, अपने सामने सब जन का सुख देवै वाले रघुकुल के नायक राम का देखि के हाथ जोरि के ठाढ़ भईं।

90 अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही। 1.211.X3
91 अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥ 1.211.X4

मारे प्रेम के उनका सरीर पुलकित होई गा, मुंह ते बोली न निकरि सकी। अपने का बहुत भाग्साली जानि के अहल्या राम के चरन छुइन, भावना के मारे उनके दूनो आँखिन ते अंसुअन के धार बहै लाग।

92 मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई। 1.211.X7
93 राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई॥ 1.211.X8

अहल्या भगवान राम केरी यहि तना बिनती करै लागीं, "हे परभू! हम तो एक अपवित्तर नारी अहिन औ तुम जगत का पवित्तर करै वाले, रावण के सत्रु औ सबहि का सुख दे वाले हवो। हे कमल जइसी आँखिन वाले! संसार के भय का छुडावै वाले! हम तुम्हरी सरन मां आय गएंन हन, हमरी रच्छा करौ, हमरिउ रच्छा करौ।"

94 एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी। 1.211.X15
95 जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी॥ 1.211.X16

यही तरा गौतम केर नारि बार बार परभू के चरनन परी औ आपन मनचाहा बरदानु पाय के खुसी-खुसी अपने पति के लोक पहुंचि गयीं।

96 अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल। 1.211.D1
97 तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल॥ 1.211.D2

प्रभु श्रीराम ऐसेहे दीनन के बंधू अहीं औ बिना कौनो कारण के दया करै वाले अहीं, तुलसीदास जी कहत हैं, "रे मूरख मन! संसार के कपट-जाल का छाड़ के यइ भगवान का भजा कर।"

98 हरषि चले मुनि बृंद सहाया। बेगि बिदेह नगर निअराया॥ 1.212.C4
99 बिस्वामित्र महामुनि आए। समाचार मिथिलापति पाए॥ 1.214.C8

परसन्नता ते चलत-चलत रामचन्द्र सब मुनिजनेन के साथे जनकपुरी निअराय आये हवैं, या सूचना मिथिला के राजा जनक तक पहुँचि गै कि महामुनि बिस्वामित्र पधारै वाले हवैं।

100 कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा॥ 1.215.C1
101 भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता॥ 1.215.C7

राजा जनक मुनि बिस्वामित्र के चरनन पर आपन माथ धरी के परनाम किहिन औ मुनि बिस्वामित्र बड़े आनंदित होई के उनका आसिरबाद दिहिन। उनके साथे दूनो भाइन का देखि के सब लोग बहुते खुस भे, सबके सरीर फूलि के कुप्पा होई गे और नैनन मां जल भरि आवा।

102 समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई॥ 1.227.C2
103 तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई॥ 1.228.C2

पूजा का समय जानि के दुनो भाई गुरु की अग्या ते पुष्प ले के बरे फुलवारी मां गे तबहिं सीतौ हुवां आय गयीं काहे कि उनकी माता गौरी पूजन की खातिर उनका पठइन रहैं।

104 देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा॥ 1.230.C5
105 लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए॥ 1.232.C3

सीता का देखि के राम मन ही मन उनकी सुन्दरता का सराहे लाग मुला उनके मुंहे ते कउनो बचन न निकरा। सीता का उनकी सखियाँ लता की ओट मां छुपे भये सांवर अउर गोर दुई किसोर देखाइन।

106 लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ। 1.232.D1
107 निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ ॥ 1.232.D2

तबहिं दुनो भाई लता कुञ्ज ते बाहर निकरि के परगट होई गे तो अस लाग जइसे बादरन का चीरि के दुई ठो चन्द्रमा निकसि परे होंयें।

108 सकुचि सीयँ तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥ 1.234.C3
109 गई भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोली कर जोरी ॥ 1.235.C4

सीता जी संकोच के मारे धीरे तेना जब अपनी आंखी खोलिन तो सामने रघुकुल के दुई सिंह राम औ लखन का देखिन। सीता फिर ते भवानी के मंदिर मां गयीं औ आपन हाथ जोरि के उनके चरनन की बन्दना करैं लागीं।

110 जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी ॥ 1.235.C5
111 जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥ 1.235.C6

"हे परबतन के राजा हिमाचल की बिटिया पारबती! तुम्हरी जय हो! संकर भगवान के चन्द्रमुखमंडल का चकोरी की तरा चितवै वाली, हाथी के मुख वाले गनेस औ छः मुख वाले कार्तिकेय जी की माता! तुमही सारे जगत की माता हवौ, तुम्हरे सरीर के अंगन ते बिजुरी के हस चमक निकरा करत हैं, तुमरी जय हो!"

112 मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें ॥ 1.236.C3
113 सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥ 1.236.C7

"तुम हमार मनोरथ नीकी तना ते जनती हौ काहे ते कि सबै के हिरदय मां बसी भयी हवौ।" सीता जी केर अस बिनती सुनि के माता पारबती बोलीं, "हमार आसिरबादु तुम्हरे साथे है, तुम जउन इच्छा करि के हमार पूजा कीन्ह्यो है वा जरूर पूरी होई।"

114 मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो। 1.236.X9
115 करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥ 1.236.X10
116 एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली। 1.236.X11
117 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥ 1.236.X12

"तुम्हरे मन का जउन सुन्दर-सलोना बर भाय गवा है, वा तुमका सहजै मिली, वा करुना ते भरा है, सब कुछु जाने वाला आय, यही ते ओहिका तुम्हरे सील औ सनेह का सब पता है।" पारबती का अस आसिरबाद पाय के सीता अपनी सखियन के साथै मन मां बहुत खुस भयीं। तुलसीदास जी कहत हैं, "यहि तरा उइ बार बार माता भवानी का पूजी-पूजि प्रसन्न मन ते अपने भवन का चलीं गयीं।"

118 जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। 1.236.S1
119 मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥ 1.236.S2

पारबती माता केर किरपा मिलि जाय ते सीता के हिरदय की प्रसन्नता का बरनन नहीं करत बनत है, सब सुभ होय वाला है, यह जनावे खातिर उनके बाएं अंग फरकै लाग।

120 हृदयँ सराहत सीय लोनाई। गुर समीप गवने दोउ भाई॥ 1.237.C1
121 सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे॥ 1.237.C4

मनै-मन सीता केरी सुन्दरता क सराहना करत राम भाई के साथे गुरु के लगे पहुँचि गे। गुरु द्विनो जनेन का आसिरबादु दिहिन कि तुमरे सब मनोरथ सफल होयं। यह सुनि के राम लखन बहुत सुखी भे।

122 पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला। देखन चले धनुषमख साला॥ 1.240.C4
123 हरषे जनकु देखि दोउ भाई। मुनि पद कमल गहे तब जाई॥ 1.244.C4

फिर सब मुनि जनन के साथे राम धनुस जग्यसाला देखे बरे चलि परे। जनकु दूनो भाइन का देखि के बहुतै खुस भे औ मुनि के चरन पकर लिहिन।

124 सब मंचन्ह ते मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल। 1.244.D1
125 मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल॥ 1.244.D2

हुवां सब मंचन ते नीक, बड़ा औ उज्जर एक मंच रहा, वहि पर राजा मुनि अउर दुनो भाइन का बइठारिन।

126 बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल। 1.249.D1
127 पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल ॥ 1.249.D2

जनक के बंदीजन भुजा उठाय के राजा जनक केरि परतिग्या कै सुभ घोसना किहिन,

128 नृप भुजबलु बिधु सिवधनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू ॥ 1.250.C1

"सब राजा होरेन के भुजान का बल अगर चन्द्रमा आय तो सिव जी का धनुस राहू आय, जो बहुतै भारी भरकम औ कठोर हवै, यहिका सबुई जने जानत हैं।"

129 सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा। राज समाज आजु जोइ तोरा ॥ 1.250.C3
130 त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही ॥ 1.250.C4

"संकर जी के कठोर धनुस का, हियाँ उपस्थित राजन के समाज ते जउन राजा तोरी, वाहै तीनों लोकन मां बिजयी घोसित कीन जाई औ सिया बिना कउनो सोच- बिचार किये वहिते निस्चयपूर्वक ब्याह कइ ल्याहें।"

131 सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिसय मन माखे ॥ 1.250.C5
132 तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं। उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं ॥ 1.250.C7

जनक के अस परतिग्या सुनि के सब राजा लोगन के मन मां सीता ते ब्याह करैं के इच्छा जाग उठी औ जे ज्यादै अपनी बीरता पर अभिमान करे वाले रहे उइ सब तो मनु-ई-मन तमतमाये लाग। उइ बड़े ताव ते उठि-उठि धनुस का उठावे जाय, जोरु लगावैं, ताकि-ताकि के तमाम परयास करैं मुला उठावे का को कहै उइ धनुस का हिलायु नाहीं पाए।

133 तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ। 1.250.D1
134 मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ ॥ 1.250.D2

मूरख राजा तमकि-तमकि कै धनुस का पकरत हैं मुला वह जब उठत नाहीं तब लजाय के चले आवत हैं, अइस लागत है मानो सब बीरन का बल पाय-पाय के धनुस औरो गरुवात जात है।

135 नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने । बोले बचन रोष जनु साने ॥ 1.251.C6
136 अब जनि कोउ माखै भट मानी । बीर बिहीन मही मैं जानी ॥ 1.252.C3
सब राजा होरेन केरि अस दसा देखि के राजा जनक अकुला उठे औ रिसाय के बोले, "आपनि-आपनि बीरता का बखान करै वाले राजा हमरी बात सुनि के क्रोधित न होयो। हम जानि लीन है कि धरती बिना बीरन के होइ गै है।"

137 रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई । तेहिं समाज अस कहइ न कोई ॥ 1.253.C1
तब लछिमन बोलि परे, "जौने समाज मां एकौ रघुबंसी होय, हुवां अइस बात कोउ कहि नही सकत।"

138 लखन सकोप बचन जे बोले । डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥ 1.254.C1
139 सकल लोग सब भूप डेराने । सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने ॥ 1.254.C2
लछिमन जब रिसाय के यहि तना ब्वालै लाग तौ धरती के दसौ दिसान के हाथी भय के मारे कांपि गे औ धरती ड्वाले लाग। हुवां उपस्थित राजा होर तो बहुतै डेरा गे। मुला सीता का जिउ जुड़ा गा औ जनक आपनि कही बात सोचि के संकोच मां परि गे।

140 बिस्वामित्र समय सुभ जानी । बोले अति सनेहमय बानी ॥ 1.254.C5
141 उठहु राम भंजहु भवचापा । मेटहु तात जनक परितापा ॥ 1.254.C6
ये समय का उचित जानि के बिस्वामित्र बहुत सनेह के साथ बोले, "हे राम! अब तुम उठौ औ सिव धनुस का चापि के जनक केर कस्ट मिटावौ।"

142 उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बालपतंग । 1.254.D1
143 बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥ 1.254.D2
जब राम उठि के ठाढ़ भे तो अस लाग जइसे मंच कौनो परबत आय जेहिमां ते सबेरे बेरिया का सूरज उदय होई रहा है। जइसे सूरज के उगतै कमल के पुस्प खिलि उठत हैं

वही तरा संत जनन के हिरदय मारे परसन्नता के खिलि गे औ उनके नेत्र भौंरन की तना हर्सित होई गे।

144 गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा॥ 1.261.C5
145 तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा॥ 1.261.C8
राम मन ही मन मां गुरु का परनाम कीन्हीन और बड़े लाघव से धनुस का उठाय लिहिन, ओत्तेही बेरिया मां उइ धनुस का बीच तेनी तोर डारिन, जेहिकी भयंकर ध्वनी तीनों लोकन मां गूँज उठी।

146 सतानंद तब आयसु दीन्हा। सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा॥ 1.263.C8
147 गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली॥ 1.264.C8
तब सतानंद अग्या दिहिन औ सीता राम कैती चलि परीं। या सुन्दर छबि देखि के सबुई सहेली गावै लागीं औ सिया राम के गले मां जयमाला पहिराय दिहिन।

148 तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा॥ 1.268.C2
149 अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥ 1.270.C3
ओत्तेही बेरिया सिवधनुस का टूटब सुनि के भृगु बंसिन मां सूरज की तरा चमकै वाले परसुराम हुवां आये गे, मारे क्रोध के बहुत कड़ाई ते पूछै लाग, "रे जनक! बताओ! या धनुस को तोरा है?"

150 अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥ 1.270.C5
राजा जनक तो एतना डेरा गे कि उनते कुछु उत्तर देत नहीं बना। या देखि के दुष्ट राजा होर मनै-मन मां बड़े प्रसन्न भे।

151 सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु। 1.270.D1
152 हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥ 1.270.D2
जब रामचंद्र जी सबका भयभीत औ जानकी जी का सहमा भवा देखिन तौ बिनु प्रसन्नता या दुःख के बोले,

153 नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥ 1.271.C1
154 सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥ 1.271.C4
"हे नाथ! जो कोऊ भी येह सिउ-धनुस का तोरिस होइ वहौ तुम्हरेन कौनो दासे होइ," तब रिसाय के परसुराम बोले, "राम तुम सुनि लियो! जो कोऊ भी येह धनुस का तोरा है वा सहसबाहु के बराबर हमार सत्रु आय।"

155 सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥ 1.271.C6
156 बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥ 1.271.C7
मुनि के अस बचन सुनि के लखन मुसकाय लाग औ परसुराम का अपमान हस करत कहिन, "जब हम पंचे लरिका रहेन तबौ तो जाने केतने धनुस तोरि डारा, तब तो यही तना ते कबउ नाही रिसायो!"

157 छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥ 1.272.C3
"अब या छुवते टूटि गा तो एहमां रघुपति का कउन दोसु? मुनी तुम तो बिला वजा रिसाय रहे हो।"

158 बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥ 1.272.C4
159 बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥ 1.272.C5
परसुराम जी अपने फरसा कैती देखि के कहिन, "अरे मूरख! तू हमार सुभाव सुन्यो नाहीं है? हम तोहिका बच्चा समझि के नहीं बधि रहेन तौ तू हमका छोट-मोट रिसिही समझि लिह्यो है!"

160 बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी॥ 1.273.C1
161 पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥ 1.273.C2
एह पर लखनलाल हंसि परे औ मीठी बोली मां ब्वाले लाग, "अच्छा तो तुम खाली मुनी नाहीं हौ? बल्कि बड़े लड़ाका अहियु! यही ते बार बार हमका फरसा देखावत हौ? जइसे फूँक मारि के पहाड़ उड़ावा चाहत हो!"

162 लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु। 1.276.D1
163 बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥ 1.276.D2

लखन केर यह उत्तरु परसुराम कै क्रोध रूपी आगी मां आहुति का काम करिस औ उइ औरे जोर ते भड़क गे। तब रामचंदर जी हाली ते सीतल जल के समान अपनी सांत बानी मां कहिन,

164 सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना । बालक बचनु करिअ नहिं काना ॥ 1.279.C2
165 बिप्रबंस कै असि प्रभुताई। अभय होइ जो तुम्हहि डेराई ॥ 1.284.C5
"हे नाथ! तुम तौ ग्यानी सुभाव वाले अहियु। काहे इ बालक के बचनन पर कान देत हौ? तुम तौ बाम्हन अहियु, तुम्हरे बंस के तौ अस महिमै आय कि जो तुमते डेराई व सबते निरभय होई जाई।"

166 सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के । उघरे पटल परसुधर मति के ॥ 1.284.C6
167 राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु मिटै मोर संदेहू ॥ 1.284.C7
रामचंदर के अस गहरी बात परसुराम सुनिन तब उनके बुद्धि के परदा खुलि गे औ उइ राम का पहिचाने खातिर उनते कहिन, "हे लछमीपति! तुम हमार या धनुस हाथ मां लई के तनी यहुका खैंचि के देखाओ जेहिते हमार संदेह मिटि सकै।"

168 देत चापु आपुहिं चलि गयऊ । परसुराम मन बिसमय भयऊ ॥ 1.284.C8
169 कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । भृगुपति गए बनहि तप हेतू ॥ 1.285.C7
मुला वा धनुस तो अपने आपै राम के लगे चला गा, यह देखि के परसुराम के मन मां बहुतै बिसमय भा। उई रघुकुल के सिरोमनि राम कै जय जयकार करत बन मां तपस्या करे चले गे।

170 जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा। प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥ 1.286.C5
171 मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाईं । अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं ॥ 1.286.C6
अब जनक जी मुनी कौसिक का परनाम किहिन औ मानिन कि उन्हई के परसाद ते राम धनुस का तोरिन हैं। आज ई दुनो भाई हमका कृतारथ कइ दिहिन हवैं। अब हे स्वामी! तुमही बताओ कि आगे का करेक चही?

172 दूत अवधपुर पठवहु जाई। आनहिं नृप दसरथहि बोलाई॥ 1.287.C1
173 मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला। पठए दूत बोलि तेहि काला॥ 1.287.C2
मुनी कहिन, "अब तुम अवधपुरी का दूत भ्याजो औ राजा दसरथ का बोल्वाय पठवो।" राजा जनक प्रसन्न होई के कहिन, "याह तुम नीकि बात बतायो।" औ वही बेरिया दूत बोल्वाय के अजोध्या पठए दिहिन।

174 पहुँचे दूत राम पुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन ॥ 1.290.C1
175 करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही। मुदित महीप आपु उठि लीन्ही॥ 1.290.C3
दूत जब राम की नगरी अटे जायें तौ हुवां के सुन्दरता देखि के बहुतै प्रसन्न भे। उइ राजा दसरथ का परनाम कइ के उनका जनक केरि पाती दिहिन तौ राजा दसरथ बहुत प्रसन्न मन ते खुदै उठि के अपने हाथन ते पाती लिहिन।

176 तब उठि भूप बसिष्ट कहुँ दीन्हि पत्रिका जाइ। 1.293.D1
177 कथा सुनाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ॥ 1.293.D2
राजा उठि के या चिट्ठी बसिष्ठ का दीन्हिन जाय औ दूतन का बोल्वाय के उनते सगरी कथा बंचवाइन।

178 चढ़ि चढ़ि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बरात। 1.299.D1
179 होत सगुन सुन्दर सबहि जो जेहि कारज जात॥ 1.299.D2
नगर के बाहर बाराती आवै लाग, सबके एकठ्ठा होय ते बरात जुरै लाग, जो कोउ जौने काजे काम का जाय, वही का सब सुभ-सगुन होइ रहें हैं।

180 सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना। बरषहिं सुमन बजाइ निसाना॥ 1.314.C1
181 प्रेम पुलक तन हृदयँ उछाहू। चले बिलोकन राम बिआहू॥ 1.314.C3
देउतौ एहि बेरिया का मंगल बेला जानि के नगाड़ा बजाय दिहिन औ फूलन के बरसा कइ दिहिन। सब जने पुलकित तन औ मनवा मां जोस भरि के राम का बियाह देखै खातिर चलि परे।

182 दसरथु सहित समाज बिराजे। बिभव बिलोकि लोकपति लाजे॥ 1.319.C5
183 एहि बिधि रामु मंडपहिं आए। अरघु देइ आसन बैठाए ॥ 1.319.C8

जनकपुरी मां जब दसरथ अपने समाज के साथे बिराजे तो उनके बैभव का देखि-देखि सब लोकन के स्वामियु लजा गे, एहि तरा फिर रघुपति मांड़व तरे पधारे तब उनका अरघु दै के आसन पर बैठारा गा।

184 सीय सँवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहिं चलीं लवाई॥ 1.322.C8
185 तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू। दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू॥ 1.323.C8
सीता जी की सखियाँ उनका सिंगार कइ के खुसी-खुसी मांड़व मां लेवा लायीं। दुनो कुलन के गुरु वहि औसर के सब रीति-रेवाजन का सम्पन्न करवाइन।

186 होम समय तनु धरि अनलु अति सुख आहुति लेहिं। 1.323.D1
187 बिप्र बेष धरि बेद सब कहि बिबाह बिधि देहिं॥ 1.323.D2
जब होम होय लाग तो अग्नि देउता खुदै सरीर धरि के आहुति लेवे का सुख पावै लाग औ सब बेदु बम्हनन का बेस बनाय-बनाय खुदै ब्याह केर बिधी बतावै लाग।

188 कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं। नयन लाभु सब सादर लेहीं॥ 1.325.C1
189 राम सीय सिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जाति बिधि केहीं॥ 1.325.C8
जब दुलहा औ दुलहिन की भांवर परैं लागीं तो अइसे सुन्दर अवसर का देखि के सबै जन बड़े आदर ते आँखिन का लाभ उठाइन। राम सिया की सीस-मांग मां सेंदुर भरि रहें हैं यहि सोभा का कउनो बिधि बखान करत नाहीं बनत है।

190 एहि बिधि राम बिआह उछाहू। सकइ न बरनि सहस मुख जाहू॥ 1.331.C8
191 बहुबिधि भूप सुता समुझाईं। नारिधरमु कुलरीति सिखाईं॥ 1.339.C1
यही प्रकार राम के ब्याह के उत्साह का बखान हजारन मुख वाले शेषौ न करे पहियें। बियाह होय के बाद जनक जी बिटिया का सब परकार के नारी धरम कै सिच्छा दिहिन।

192 सीय चलत ब्याकुल पुरबासी। होहिं सगुन सुभ मंगल रासी॥ 1.339.C3
193 चली बरात निसान बजाई। मुदित छोट बड़ सब समुदाई॥ 1.343.C7

सिया जब बिदा होय लागीं तो सकल नगरबासी ब्याकुल होई गे। मंगल रासी होय के कारन सब सुभ-सगुन होय लाग। नगारा का बजा के बरात चलि परी। ओत्ती बेरिया छोट-बड़ सब जन खुस रहें।

194 समउ जानि गुर आयसु दीन्हा । पुर प्रबेसु रघुकुलमनि कीन्हा ॥ 1.347.C7
195 आए ब्याहि रामु घर जब तें । बसइ अनंद अवध सब तब तें ॥ 1.361.C5
बरात अजोध्यापुरी अटी जाय तो गुरु बसिस्ठ सुभ समय बिचारि के नगर भीतर प्रबेस करे के अग्या दिहिन। जब ते राम ब्याह के घरे आये हैं तब ते अवध मां सब जगह अनंदे-आनंद डेरा डारि दिहिस हवे।

196 सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं । 1.361.S1
197 तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु ॥ 1.361.S2
जो-जो कोऊ सिया राम के बियाह का प्रेम ते गाई औ सुनी उनके हिरदय मां सदा उत्साह औ आनंदु छावा रही। रामचंदर का जसगान सब तरा के सुभ मंगल का धामु आये।

अयोध्याकाण्ड

198 श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि। 2.0.D1
199 बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥ 2.0.D2

सिरी गुरु के चरन कमल के धूरि ते अपने मन के दर्पन का सुधारि के सिरी रामचंदर के वहि निरमल जसु का बरनन करे जाइत है जो धरम अरथ काम और मोच्छ दे वाला आय।

200 जब तें रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए ॥ 2.1.C1
201 सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी ॥ 2.1.C6

जब ते राम बियाह कइ के घरे आये हैं तब ते नित्ये नए-नए मंगल होई रहें हैं, आनंदु के बधावा बाजि रहें हैं। रामचंदर के चंद्रमा समान मुखड़ा का निहारि-निहारि के नगर के सब जन, सब तरा ते सुखी होई रहें हैं।

202 एक समय सब सहित समाजा। राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥ 2.2.C1
203 रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा। बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ॥ 2.2.C6

याक दायीं राजा दसरथ अपने सब दरबारिन के साथे दरबार मां बइठ रहें। अपने सुभाय के कारण उइ हाथे मां दरपन लै के आपन मुख द्याखत भये मुकुट सुधारे लाग।

204 श्रवन समीप भए सित केसा। मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥ 2.2.C7
205 नृप जुबराजु राम कहुँ देहू। जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥ 2.2.C8

तब अपने कानन के लगे स्वेत केस देखि के उनका लाग जइसे बुढ़ापा उनका अस सीख दै रहा है कि हे राजन! अब राम का जुबराज बनाय के काहे नहीं अपने जीवन औ जनम का लाभ उठावत हो?

206 यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ। 2.2.D1
207 प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ 2.2.D2

या बिचार मन मां अउते राजा सुभ दिन अवसर देखि के, प्रेम बस होई के, प्रसन्न मन औ पुलकित तन ते गुरु बसिस्ठ के लगे जाय के यह बिचार बतायिन।

208 बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु। 2.4.D1
209 सुदिन सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु॥ 2.4.D2

गुरु कहिन, "हे राजा! बिलकुल देरी न करौ औ जल्दी ते जल्दी सब समान साजि लेओ, काहे ते कि जबहीं राम का जुबराज घोसित कीन जाई वह दिन अपने-आपै सुभ औ मंगलकारी होइ जाई।

210 मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए॥ 2.5.C1
211 जौं पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरषि हियँ रामहि टीका॥ 2.5.C3

राजा प्रसन्न होई के महल मां आये औ सब मंत्रिन, सेवकन औ सुमंत्र का बोला पठइन औ सबते कहिन, "जो आप सब पंचेन का हमार यह बिचारु नीक लागै तो खुसी-खुसी राम केर राज तिलकु कीन जाय।

212 जग मंगल भल काजु बिचारा। बेगिअ नाथ न लाइअ बारा॥ 2.5.C6
213 सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाज गहागह अवध बधावा॥ 2.7.C3

सब मंत्री जन कहै लाग, "आप जगत का भला करैं वाला काम बिचार्यो है। एहिका करैं मां तनिको बेर न लगावो, हाली ते कई डारो।" रामचंदर केर तिलक होय के सुहावनि बात सुनि के अवध मां बधावा बाजै लाग।

214 दीख मंथरा नगरु बनावा। मंजुल मंगल बाज बधावा॥ 2.13.C1
215 पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू। राम तिलकु सुनि भा उर दाहू॥ 2.13.C2

रानी कैकेयी केर दासी मंथरा जब देखिस कि चारों कैती मंगल बधावा बाजि रहे हैं औ पूरे नगरु का सजा दीन गा है तो लोगन ते पूछिस कि यह सब उत्साह काहे खीतिर होइ रहा है? जब राम के तिलक का सुनिस तो भीतरे-भीतर जरि उठी।

216 भरत मातु पहिं गइ बिलखानी। का अनमनि हसि कह हँसि रानी॥ 2.13.C5

अब वह अनमनी हस होई के भरत के महतारी कैकेयी के लगे बिलखत पहुची तौ रानी ओहिते पूछै लागीं, "तै काहे अनमनी हस देखा पर रही है?"

217 सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु। 2.13.D1
218 लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु॥ 2.13.D2

तबहूँ वह कुछु न बोली तो रानी का संका भई औ उइ डेरात डेरात पूछिन, "अरी कुबरी! कुछु ब्वालत काहे नहीं है? राजा दसरथ, राम, लखन, भरत सत्रुहन सब कुसल तो हैं ना?"

219 रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू। जेहि जनेसु देइ जुबराजू॥ 2.14.C2
220 जारै जोगु सुभाउ हमारा। अनभल देखि न जाइ तुम्हारा॥ 2.16.C7

तब वा कहेसि, "रामु का छांरि के आज केहिकी कुसलता हवे ? जिनका राजा जुबराजु बनावै वाले हैं! हमार सुभाऊ तो जरैहे वाला आय मुला का करी हमते तुम्हार अनभल द्याखा नहीं देखि जात।"

221 भावी बस प्रतीति उर आई। पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई॥ 2.19.C1
222 रामहि तिलक कालि जौं भयऊ। तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ॥ 2.19.C6

होनहार के कारन रानी के हिय मां मंथरा केरी बातन का बिस्वास होई गवा। उइ वहिते सपथ दइ-दइ पूछैं लागीं। तब मंथरा कहिस, "जौ काल्हि रामू क्यार तिलक होई गा तो यह जानि लिन्ह्यो कि बिधाता तुम्हरी बिपत्ति का बीज बोय दिहिन हैं।"

223 कैकयसुता सुनत कटु बानी। कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी॥ 2.20.C1
224 काह करौं सखि सूध सुभाऊ। दाहिन बाम न जानउँ काऊ॥ 2.20.C7

मंथरा केरी अस करुइ-करुइ बात सुनि के रानी डेराय के सहमि गई औ मुंहे ते एक्को बोल न फूटा। रानी कहिन, "अरी सखी! तुम तौ जन्तिही हौ कि मोर सुभाओ केतना सीध सरल हवे, हमका को हमरे दहिने हवे औ को बायें, यह सब समझेम नहीं आवत।"

225 अपनें चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह। 2.20.D1
226 केहिं अघ एकहि बार मोहि दैअँ दुसह दुखु दीन्ह॥ 2.20.D2

"अपैं जान भर तौ हम आज तलक कहू केर अनभल नाही कीन्हा तबहूँ बिधाता एकै बार मां मोहिका यह घोरु दुःख काहे खितिर दइ दिहिन?"

227 दुइ बरदान भूप सन थाती । मागहु आजु जुड़ावहु छाती ॥ 2.22.C5
228 सुतहि राजु रामहि बनबासू । देहु लेहु सब सवति हुलासू ॥ 2.22.C6

मंथरा कैकेयी का याद दिलाईस कि तुम्हरे दुई बरदान आजौ राजा के लगे धरोहर हैं, उनका मांगि के आपन छाती जुड़य डारौ, जेहिमां अपने बेटवा भरतु का राज औ राम का बनबासु मांगि कै सवति केर उल्लास छीनि के सब लेनु-देनु बराबर कई डारो।"

229 कोप समाजु साजि सबु सोई। राजु करत निज कुमति बिगोई॥ 2.23.C7
230 कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ। भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ॥ 2.25.C1

रानी कैकेयी कोप रूप धरे का सबु साज-समाज बनाइंन औ अपनी दुर्बुद्धि के अधीन होइ के आपन बुद्धि नसा डारिन। राजा जब वहिके कोपभवन मां जाय के बात सुनिन तो मारे सोचु के सहमि गे औ डेर के मारे उनके पाँव आगे न परत रहैं।

231 जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी । प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥ 2.25.C8
232 बिहसि मागु मनभावति बाता । भूषन सजहि मनोहर गाता ॥ 2.26.C7

कैकेयी के लगे जाय के राजा बड़े प्रेम ते पूछिन, "हे हमरी प्रानन ते पियारी रानी! तुम काहे बरे रिसा गयु है? तुमका का चही? जउन तुमरे जी का सोहाय हंसि के मांग डारौ औ अपने सुन्दर अंगन का ई गहनन ते सजावौ।"

233 मागु मागु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु । 2.27.D1
234 देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥ 2.27.D2

तब कैकेयी बोलीं, "मांगु-मांगु खाली कहत हौ, हे पिया! लेत-देत कबहूँ कुच्छु नाहीं। तुम हमका कबे दुई बरदानु देक कह्यो रहै, हमका तौ वहौ मिले मां संदेह जान परत है।"

235 थाती राखि न मागिहु काऊ। बिसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ॥ 2.28.C2
236 रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई ॥ 2.28.C4

राजा कहिन, "बचनु धरा के तुम कबो मान्गेयु नाहीं, हमहूँ अपने सुभाव भोलपन मां भुला गवा, यहिका यह मतलबु न आय कि हम देवा नहीं चहित। हमरे रघुकुल केरी याह रीत आय कि प्रान भले चला जाय मुला बचन न जायेक चही।"

237 सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का। देहु एक बर भरतहि टीका॥ 2.29.C1
238 तापस बेष बिसेषि उदासी। चौदह बरिस रामु बनबासी॥ 2.29.C3

कैकेयी बोलीं, "हे प्रानन ते पियारे! तौ सुनौ कि हमरे जिउ का का भाय रहा है, एकु बर देओ कि भरत का तिलक कइ के जुबराज पद मिलै औ राम तपस्वी का बेस बनाय के उदासीन भाव ते चौदह बरस की खातिर बन मां जाय के बास करैं।"

239 बोले राउ कठिन करि छाती। बानी सबिनय तासु सोहाती॥ 2.31.C4

अस बचन सुनि के राजा सहमि गे तबहूँ छाती कड़ी कइ के कैकेयी का समुझावे खीतिर बानी का संभारत भये बोले,

240 लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति। 2.31.D1
241 मैं बड़ छोट बिचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति॥ 2.31.D2

"राम का राज का कौनो लालच नहीं ना उनकेर भरत पर बहुतै प्रीत हवैं, हम तो बस बरे-छोट का बिचार कइ के राजनीति के धरम का पालन करा चाहित रहेन।"

242 कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं। जीवनु मोर राम बिनु नाहीं॥ 2.33.C2
243 मागु माथ अबहीं देउँ तोही। राम बिरहँ जनि मारसि मोही॥ 2.34.C7

"हम यह छलु-कपटु के बिना कहित है कि मोर जीवन राम के बिना न रहि जाई, तुम हमार माथु मांगि लियो हम अबहीं दइ द्याबे मुला हमका राम के बियोग मां न मारौ।"

244 राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू॥ 2.37.C1

राम-राम रटत राजा बिकल होइ के धरती पर गिरि परे औ परकटे पंछी के भांति तड़पै लाग।

245 गए सुमंत्रु तब राउर माहीं। देखि भयावन जात डेराहीं॥ 2.38.C3
246 सचिउ सभीत सकइ नहिं पूँछी। बोली असुभ भरी सुभ छूँछी॥ 2.38.C8

सुमंत्र राजमहल मां पहुंचे मुला हुवां के स्थिति देखि के भीतर जात डेरात हैं। मारे भय के उनते कुछु पूछत नाहीं बनत तौ कैकेयी, जौ ओत्ती बेरिया सुभ तेनी छूंछी औ असुभ ते भरी देखात रहीं, कहै लागीं,

247 परी न राजहि नीद निसि हेतु जान जगदीसु। 2.38.D1
248 रामु रामु रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु ॥ 2.38.D2
“राजा का राति भर नींद नहीं परी, कारन तौ जगदीसै जाने, हाँ राम रटत-रटत भोरु किहिन हैं, पूछे ते कउनो कारन नहीं बतावत, बस ‘राम-राम’ कइ रहें हैं।”

249 आनहु रामहि बेगि बोलाई। समाचार तब पूँछेहु आई ॥ 2.39.C1
250 करुनामय मृदु राम सुभाऊ। प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ ॥ 2.40.C3
तुम तुरतै राम का बोला के लाओ, तबै आयके सब हाल पूछ्यो।” कोमल सुभाव औ करुना ते भरे राम हुवां आय के जस स्थिति देखिन, वईस दुःख उइ पहिले न देखिन रहैं न सुनिन रहैं।

251 मोहि कहु मातु तात दुख कारन। करिअ जतन जेहिं होइ निवारन॥ 2.40.C5
252 देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना। मागेउँ जो कछु मोहि सोहाना॥ 2.40.C7
उइ यह सबु देखि के कैकेयी ते कहिन, “हे माता! तात के दुःख का कारन मोहिते बतावौ, जइसे उनके कस्ट का निवारन होई, हम वहै करि के उनके दुःख का निवारन करिबे।”

253 सब प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई। बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई॥ 2.41.C4
254 भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू॥ 2.42.C1
सगरी बात बताय के कैकेयी निठुर की तना बइठ गे, मानो निठुरता साच्छात देही धरे बइठ होय। रामु तब कहिन, “भरत तो हमका प्रानन ते पियारे हवैं, उनका राजु मिली, हमका तो अस लागि रहा है कि बिधाता सबुई तरा ते हमरे अनुकूल होईगा है।”

255 जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा॥ 2.42.C2
256 आयसु पालि जनम फलु पाई। ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई ॥ 2.46.C3
“जौ अइसे काजु के बरे हम बनु न जाई तौ मूर्खन के समाजु मां हमार गिनती सबते पहिले होय। ये अग्या का पालन कइ के, अपने जीवनु का फलु पा के हम हाली ते लउटि के अउबे, यहि बरे हमका आपनि रजामंदी देओ।”

257 समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ। 2.57.D1
258 जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ ॥ 2.57.D2

जबहीं सिया यह समाचारु सुनिन तौ अकुलाय उठीं औ सासु के चरन कमल मां मूड़ नवाय के बइठ गईं।

259 चलन चहत बन जीवन नाथू । केहि सुकृती सन होइहि साथू ॥ 2.58.C3
260 की तनु प्रान कि केवल प्राना। बिधि करतबु कछु जाइ न जाना॥ 2.58.C4

उइ स्वाचे लागीं कि उनके प्राननाथ बनु का जावा चहत हैं अब द्याखो कउने पुन्य करमन के प्रभाव ते उनकेर साथ मिली कि उनके साथे तनु औ परान दुनो जहियें कि केवल पराने जाय पैहैं? द्याखो बिधाता का करैं चाहत है कुछु पता नाहीं चलत।

261 मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समउ समुझि मन माहीं ॥ 2.61.C1

माता के सामने सिया से बतलाय मां रामु सकुचात है मुला समय का देखत भये कहत हैं,

262 हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू । सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥ 2.63.C5
263 रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी । चंदबदनि दुखु कानन भारी ॥ 2.63.C8

"हे हंसगामिनी! तुम बन मां रहै जोगु नाहीं हौ, हम अस करब तौ लोगबाग हमका दोसु द्याहें। अस बिचार कइ के तुम हियैं भवन मां रहौ। हे चंदबदनी! बनु मां घोरु कस्ट हवैं।"

264 सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि । 2.63.D1
265 सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥ 2.63.D2

"जेहिके सुभाव मां गुरु औ स्वामी केरी सीख मानै का आचरन नाहीं होत, वा जिउ भरि-भरि के पछतात हवै औ अंत मां ओहिकर नुक्साने होत है।"

266 मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं। पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं॥ 2.64.C7
267 कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा। परिहरि सोचु चलहु बन साथा ॥ 2.68.C3

तब सिया कहैं लागीं, "हम अपने मनु मां खूब सोचु बिचार के द्याखा है हमका तौ अस जान परत है कि पी के बियोगु ते बढ़ि के ये जग मां कउनो दुःख, कस्ट नहीं ना।" जब उइ कउनियु तना नहीं मानी तब सूरजबंसी राम कहिन, "अच्छा तुम सबुई सोचु बिचारु का छांरि के अब हमरेहे साथे बनु का चलौ।"

268 समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए ॥ 2.70.C1
269 राम बिलोकि बंधु कर जोरें। देह गेह सब सन तृनु तोरें ॥ 2.70.C6

यह समाचारु जब लछिमन सुनिन तौ अकुलाय उठे औ बिलखत-बिलखत राम के लगे दउरि के आय गे। रामु देखिन कि ई तौ घर बार सबहीं ते नाता तोरे उनके आगे हाथ जोरे ठाढ़ हैं।

270 मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा। होइ सबहि बिधि अवध अनाथा ॥ 2.71.C3
271 गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू ॥ 2.71.C4

तब उइ लछिमन का समुझावै लाग, "हम जौ तुमका साथे लै के बनु चले गयेन तौ अजोध्या तौ सबे तरा ते अनाथ होई जाई। मात, पिता, परिवारु, गुरुजन औ परजा के ऊपर परे वाला दुःख सहा न सहि जाई।"

272 उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ। 2.71.D1
273 नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ ॥ 2.71.D2

लछिमन जी का मारे प्रेम के कुछु उत्तर देत नाहीं बना तौ उइ अकुलाय के राम के चरन पकरि लिहिन औ कहै लाग, "हे नाथ! हम तुमरे दास अहिन औ तुम हमरे स्वामी, अगर तुम हमका तजि द्याहौ तौ हमार कहाँ बसे का ठिकाना रहि जाई?"

274 गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥ 2.72.C4
275 मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी ॥ 2.72.C6

"हे नाथ! हम अपने सहज सुभाय ते कहित हन कि एक तुमरे अलावा महतारी, बाप, गुरु कहू का नहीं जानित। हे दीनन के बंधु! औ सबके हिरदय का हाल जानै वाले! हमरे तो याक तुमहीं सब कुछ अहियु।"

276 मागहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई ॥ 2.73.C1

लछिमन जी के अस बिनती सुनि के राम चन्द्र कहिन, "माता के लगे जाय के बिदा लै आओ जेहिसे हम पंचे तुरतै बन का निकसि परी।"

277 पूँछे मातु मलिन मन देखी। लखन कही सब कथा बिसेषी॥ 2.73.C5
278 जौं पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं॥ 2.74.C4
लछिमन जी का मलिन मुख देखि के माता कारन पूछिन तौ लखनलाल सगरी कथा उनका बिस्तार ते बताइन। एहि पर माता सुमित्रा बोलीं, "जौ रामु औ सीता बन का जात हवैं तौ तुमरा हियाँ अवध मां कउन काम है?"

279 बंदि राम सिय चरन सुहाए। चले संग नृपमंदिर आए॥ 2.76.C2
280 सिय समेत दोउ तनय निहारी। ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी॥ 2.76.C8
यहि तना माता ते बिदा लइ के, लछिमन आय के राम सीता के चरन बन्दना किहिन औ उनके साथै राजा दसरथ के महल कइती चलि परे। सिया के साथे अपने दूनों लरिकन का देखि के राजा दसरथ उन पंचेन केर सब मनतब्य समझि के बहुत अधिक ब्याकुल होइ गे।

281 नाइ सीसु पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मागा॥ 2.77.C2
282 रामु तुरत मुनि बेषु बनाई। चले जनक जननिहि सिरु नाई॥ 2.79.C8
तब राम उनके चरनन मां बहुत अनुराग ते झुकि के बिदा मांगिन औ मुनि का बेस धरि के माता-पिता का परनाम कइ के चलि परे।

283 सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत। 2.79.D1
284 बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत॥ 2.79.D2
बन मां रहै लायक जरुरी साज-सामान लै के राम अपनी पत्नी औ भाई के साथे बाह्मन औ गुरु का सीस नवाय के सबका मूर्छित हस कइ के बनु का चल दिहिन।

285 सीता सचिव सहित दोउ भाई। सृंगबेरपुर पहुँचे जाई॥ 2.87.C1
दूनो भाई सिया औ मंतरी सहित स्रंगबेरपुर जा अटे।

286 यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई। मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई॥ 2.88.C1
287 नाथ कुसल पद पंकज देखें। भयउँ भागभाजन जन लेखें॥ 2.88.C5
या समाचार जब निषादराज गुह के लगे पहुंचा तौ मारे खुसी के अपने सब भाई-बन्धुन का बोलवाय के भगवान के लगे आय के कहै लाग, "हे नाथ! आज तुमरे चरन कमल का देखि के हमरियु गिनती भाग्वानन मां होय लागी।"

288 लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा। कहेउ राम सब भाँति सुहावा॥ 2.89.C5
वा राम का लइ जाके टिकै लायक ठाँव देखाईस जेहिका देखि के राम कहिन, "यह तौ बहुतै नीक औ सुहावन अस्थान हवै।

289 बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए॥ 2.100.C2
290 मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥ 2.100.C3
वहिके बाद राम बहुत जोर-जबरदस्ती कइ के सुमंत का वापस पठइन औ अपना गंगा जी के किनारे आय गे, हुवां उइ गंगा पार उतरै के तइं केवटु ते नाव मांगिन मुला वह आपन नाव लावै का राजिहि न भा औ कहिस, "हम तुम्हार सब मरमु जानित हन।"

291 छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई॥ 2.100.C5
292 जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू॥ 2.100.C8
"तुम्हरे पद केरी धूरि लागे ते पाथर के सिला मेहरिया होई गै रहै, पाथर ते काठु तौ कठोरौ नहीं ना, हे परभू! अगर तुम पार जावै चहत हौ तौ पहिले हमका आपन चरन कमल धोवे के अग्या देओ।"

293 कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई॥ 2.101.C1
294 अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा॥ 2.101.C7
अइस बात सुनि के किरपा के सागर रामचंदर मुस्कयियाय के कहिन, "वहै करौ जेहिते तुम्हार नाव न जाय पावै।" एतना सुनते केवट का मन आनंदु ते उमगि उठा औ वह प्रेम ते भगवान के चरन पखारै लाग।

295 पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार। 2.101.D1
296 पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार॥ 2.101.D2

चरन धोय के परिवार समेत वही जलु का पान कइ के केवट अपने पितरन तक का भवसागर ते तारि के फिर भगवान का पार पहुचाय आवा।

297 केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥ 2.102.C2
298 पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥ 2.102.C3
पार पहुँचि के केवट परभू का दंडवत कीन्हिस तब भगवान संकोच बस होई गे, उइ स्वाचे लाग कि एहका कुछु उतराई नहीं दीन्ह। तब सिया मैया अपने पिय के हिय की बात जानि लिहिन औ आपन मणि-जड़ित मुंदरी उतारि के खुसी-खुसी दें लागीं।

299 कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई ॥ 2.102.C4
300 नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥ 2.102.C5
किरपा करे वाले भगवान केवट ते कहिन, "या लेओ आपन उतराई।" तौ वह अकुलाय के उनके चरन पकरि लिहिस औ काहै लाग, "हे नाथु! आज मोहिका का नहीं मिली गा, सबुई दोसु, दुःख-दलिद्दर मिटि गा हमार तो।"

301 बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ। 2.102.D1
302 बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ ॥ 2.102.D2
परभू राम, सिया औ लखन केवट ते बहुत चिरौरी किहिन मुला वा कुछु ले का राजी न भवा तब करुना करै वाले भगवान राम ओहिका अपनी निरमल भगति का बरदानु दइ के बिदा किहिन।

303 तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ। 2.104.D1
304 सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥ 2.104.D2
तब प्रभू गनेस, संकर का सुमिरिनि औ गंगा मैया का माथु नवाय के सिया, लखन औ साथी निषाद राज गुह के साथे बन की कइती परस्थान किहिन।

305 तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दंडवत मुनि उर लाए ॥ 2.106.C7
306 आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू ॥ 2.107.C5

कुछ समय बाद प्रभु भरद्वाज मुनि के पास पहुँचे। उनके दण्डवत करते ही, मुनि श्री रामचन्द्र जी भगवान भरद्वाज मुनि के लगे पहुंचे, उनका दंडवत किहिन तौ मुनि उनका उठाय के अपने हिरदय ते लगा लिहिन औ बोले, "आज तौ हमार जपु, तपु, जोगु, त्याग, बैराग, तीरथ बास सबुइ सुफल होइगा।"

307 सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अघाने ॥ 2.108.C1
308 सो बड़ सो सब गुन गन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ॥ 2.108.C3

मुनि के अस बचन सुनि के राम सकुचाय गे अउर उनकी भक्ती के भाव का देखि के अघा गे। उनते कहिन, "हे मुनि! जेहिका तुम आदर देहो वहिके भीतर तौ सबै गुनन का बासु होई जाई औ वहीका संसार मां सबते बड़ा होय का मान मिलि जाई।"

309 राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ। 2.108.D1
310 चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ ॥ 2.108.D2

राति का राम बिसराम किहिन, प्रातकाल उठि के परयाग मां अस्नान किहिन। फिर बड़े प्रसन्न भाव ते मुनि का सीस नवा के सिया, लखन औ निषाद के साथै आगे चलि परे।

311 आगें रामु लखनु बने पाछें। तापस बेष बिराजत काछें ॥ 2.123.C1
312 उभय बीच सिय सोहति कैसें। ब्रह्म जीव बिच माया जैसें ॥ 2.123.C2

आगे-आगे रामु अउ उनके पाछे लछिमन तापस का बेस धरे चले जात हवैं, दूनों जनेन के बीच मां सिया अस सोहाती हैं जइसे ब्रम्ह औ जीव के बीचु मां माया सोभायमान होइ रही होय।

313 देखत बन सर सैल सुहाए। बालमीकि आश्रम प्रभु आए ॥ 2.124.C5
314 देखि पाय मुनिराय तुम्हारे। भए सुकृत सब सुफल हमारे ॥ 2.126.C1

रस्ता मां बनु, तलाबु, परबत द्याखत-द्याखत प्रभु बाल्मीकी के आस्रम जाय अटे औ बोले, "हे मुनिराज! तुम्हरे पायं देखि के आजु हमरे सब नीक करमन केर फलु हमका मिलिगा हवै।"

315 अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उदबेगु न पावै कोई ॥ 2.126.C2
316 अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ ॥ 2.126.C5

"अब हमका ई बनु मां बसे केर आपनि आग्या देयो, कउनो अस ठिकाना बताय देओ जहां हम पंचे रहि सकी, मुला हमरे निवास ते मुनि होरन का कउनो कस्ट न होय पावै। अपने मन ते बिचारु कइ के हमका कउनो उचित अस्थान बताय देओ। जहां हम सिया औ सुमित्रानंदन के साथै जाय के रही।"

317 पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ। 2.127.D1
318 जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ॥ 2.127.D2

तब मुनि बोले, "तुम हमते पूछत हौ कि कहाँ रही जाय? औ हम तुमते पूछत सकुचाइत है कि तुम हमका बतावौ कि अइस कउन अस्थान हवे जहां तुम नाही हौ? तब तौ हम तुमका बताइ कि तुम हुवां जाय के रहौ।"

319 काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥ 2.130.C1
320 जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया॥ 2.130.C2

"जिनके मन मां न कामना होय, न क्रोध होय, न घमंडु होय, न मोह होय, न लालचु, न दुखु, न रागु, न द्रोह, न कपटु, न दम्भु, न माया; हे रघुनाथ! तुम अइसे प्रानिन के हिरदय मां जाय के बास करौ।"

321 तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥ 2.130.C5

"तुमका छांड़ि के जिनका अउर कतहूँ आसरा न होय; हे राम! तुम उनके मन मां बसौ।"

322 कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक। आश्रम कहउँ समय सुखदायक॥ 2.132.C2
323 चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू॥ 2.132.C3

मुनि राम ते कहिन, "हे सूरज बंस के नायक! हम तुमते समय के अनुकूल, सुख दे वाला याक आश्रमु हवैं, वा बताइत है ओहिका सुनौ, चित्रकूट परबत पर जाय के आपन निवास बनाव, हुवां तुमका बसै लायक सब सुबिधा मिलि जइहैं।"

324 चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ। 2.132.D1
325 आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ॥ 2.132.D2

फिर महामुनी बाल्मीकि चित्रकूट केरि महिमा का बखान गाय गाय बतायिन। सिया सहित द्विनो भाई हुवां पहुंचि के मन्दाकिनी नदी मां अस्नान किहिन।

326 चित्रकूट रघुनंदनु छाए। समाचार सुनि सुनि मुनि आए॥ 2.134.C5
327 जब तें आइ रहे रघुनायकु। तब तें भयउ बनु मंगलदायकु॥ 2.137.C5

रघुनंदन राम आय के चित्रकूट मां निवास करिन हवैं, यह समाचार सुनि-सुनि के मुनि होर हुवां आवै लाग। जब ते रामु हुवां आपन निवास करिन तब ते वा बनु सब तरा ते मंगल दायकु होइगा।

328 कहेउँ राम बन गवनु सुहावा। सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा॥ 2.142.C4
329 अवध प्रबेसु कीन्ह अँधिआरें। पैठ भवन रथु राखि दुआरें॥ 2.147.C5

तुलसीदास जी कहत हैं कि हियाँ तक तौ हम राम के बन गमन के सुन्दर कथा कहेन, अब आगे सुनौ जउनी तरा सुमंत अवधपुरी पहुंचे। मारे सोक के उइ अंधेर होय के बादि अजोध्या मां घुसे औ चुप्पेहे रथु का दुआरेहे छांड़ि के राजभवनु मां परबेस किहिन।

330 अति आरति सब पूँछहिं रानी। उतरु न आव बिकल भइ बानी॥ 2.148.C1
331 जाइ सुमंत्र दीख कस राजा। अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा॥ 2.148.C4

बड़ी आरत होइ-होइ के रानी राम केर समाचार पूछै लागीं तो उनका उत्तर देत नाहीं बना, उनकेर बानी ब्याकुला उठी। उइ जाय के राजा का देखिन तौ राजा उनका एकदम निस्तेज देखा परे जइसे बिनु अमिरत का चन्द्रमा होय।

332 बिलपत राउ बिकल बहु भाँती। भइ जुग सरिस सिराति न राती॥ 2.155.C3
333 हा रघुनंदन प्रान पिरीते। तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते॥ 2.155.C7

दुःख के मारे राजा रहि-रहि के बिलाप करत रहें। वह राति एक जुग के समान लम्बी होइ गै औ काटे न काटी जात रही। राजा एकुइ बात कहि-कहि के रोवत रहें, "हे हमरे प्रानन ते पियारे राम! तुमरे बिनु जिअत बहुत दिन बीते जात हैं।"

334 राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम। 2.155.D1
335 तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम॥ 2.155.D2

'राम-राम' रटत राम के बियोग मां राजा दसरथ आपन सरीर त्याग के सरग लोक का सिधारि गे।

336 सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी॥ 2.156.C3
337 बिलपहिं बिकल दास अरु दासी। घर घर रुदनु करहिं पुरबासी॥ 2.156.C5
सोक ते ब्याकुल होइ के सब रानी रोवै लागीं, उइ सब पंचे राजा के रूप, सील, बलु औ तेज का बखान करत जाएँ औ रोवत जाएँ। सगरे दास-दासी ब्याकुल होई के बिलाप करैं लाग औ अजोध्या के घर-घर मां रोउना-पिटना मचि गा।

338 तेल नावँ भरि नृप तनु राखा। दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा॥ 2.157.C1
339 धावहु बेगि भरत पहिं जाहू। नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू॥ 2.157.C2
गुरु बसिष्ठ नांव मां तेल भरवाय के राजा केर सरीर धरवा दिहिन। फिर दूतन का बोलवा के अस कहिन, "तुम पंचै दउरत भये भरत के लगे पहुँचो मुला कहू ते राजा के बारे मां यह खबर न बतायो।"

340 अनरथु अवध अरंभेउ जब तें। कुसगुन होहिं भरत कहुँ तब तें॥ 2.157.C5
341 देखहिं राति भयानक सपना। जागि करहिं कटु कोटि कलपना॥ 2.157.C6
अइसी जब ते अजोध्या मां यह अनरथु भा तबहीं ते भरत का असगुन होय लाग, राति का उइ भयानक सपन देखिन औ दिन भर उनका बुरे-बुरे बिचारु आवत रहें।

342 एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ। 2.157.D1
343 गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ॥ 2.157.D2
भरत मनु मां ई सब बिचार करतै रहैं कि दूत जाय पहुंचे, गुरु के अग्या सुनि के भरत तुरतै गनेस भगवान का सुमिरि के चलि परे।

344 सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ। 2.171.D1
345 हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ॥ 2.171.D2

हुवां पहुँचि के भरत सब हाल देखि के दुखी होई गे तब बसिस्ठ उनते कहै लाग, "हे भरत! सुनौ, होनी सबते बलवान होत है, हानि-लाभु, जियब-मरब, जसु-अपजसु सब बिधाता के हाथे मां हवै।"

346 भयउ न अहइ न अब होनिहारा। भूप भरत जस पिता तुम्हारा॥ 2.173.C6
347 रायँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा। पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा॥ 2.174.C3

"हे भरत! तुम्हरे पिता जस राजा, न कोउ भवा न कोउ आगे होई। उइ तुमका राजगद्दी सौंपि गे हैं तौ तुमका पिता के बचन का पालन करेक चही।"

348 सौंपेहु राजु राम के आएँ। सेवा करेहु सनेह सुहाएँ॥ 2.175.C8
349 कौसल्या धरि धीरजु कहई। पूत पथ्य गुर आयसु अहई॥ 2.176.C1

जबु राम लौटि के आवैं तब उनका यह राजु सौपि के उनकी सेवा माँ लागि जायो।" माता कौसल्यौ भरत का यहे समुझाइन, "जउन गुरु कहि रहे हैं वहै तुमका करे लायक औ सब तना ते कल्यान कारी हवै, उनकेर कहा मानौ।"

350 मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका। प्रजा सचिव संमत सबही का॥ 2.177.C1
351 हित हमार सियपति सेवकाईं। सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाईं॥ 2.178.C1

तब भरत जी बोले, "गुरु जी तो हमका नीकै उपदेसु दिहिन औ यहिमां परजा, मंत्रिन का मतौ सम्मिलित देखात है। मुला हमार हित तो केवल सियापति राम की सेवा मां है, वह अवसर हमते हमरी महतारी के कुटिल बुद्धी के कारन छिनि गा है।"

352 जाउँ राम पहिं आयसु देहू। एकहिं आँक मोर हित एहू॥ 2.178.C7
353 भरतहि कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही॥ 2.184.C4

"यहि बेरिया हमका या अग्या देओ कि हम राम के लगे जाई, काहे ते कि हमका आपन हित एकु यही मां देखा पर रहा हवे।" भरत केर अस बात सुनि के, सबुई जन उनका सराहै लाग औ कहै लाग, "ई तो साच्छात राम का प्रेमु आय जउन भरत रूपी सरीर धारे ठाढ़ है।"

354 अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह। 2.184.D1
355 सोक सिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह॥ 2.184.D2

सब जन कहे लाग, "हे भरतु! तुम यह नीक बात कह्यो, हम पंचे बन का जरूर चलिबे जहां रामु गे हैं। अस बात कहि के तुम हम पंचेन के बूड़त जहाजु का याक सहारा दइ दिह्यो है।"

356 सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ। 2.187.D1
357 सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दोउ भाइ॥ 2.187.D2

यहि तरा नगरु का सब बिस्वासपात्र सेवकन का सौंपि के सबका सादर परस्थान करवाइन औ सिया राम के चरनन का सुमिरन कइ के भरत-सत्रुघन द्विनो भाई चलि परे।

358 नहिं पद त्रान सीस नहिं छाया। पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया॥ 2.216.C5
359 एहि बिधि भरत चले मग जाहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं॥ 2.220.C5

न तो पायेंन मां जूता पहिरे हैं, न मूड़े पर छत्रु लगाय हैं, बस प्रेम, नेम औ बरत के सच्चे धरम का मनु मां भरे भये भरत चले जात हैं, उनकेर अस दसा देखि-देखि सिद्ध मुनि तक उनकेर सराहना करत हैं।

360 मिलहिं किरात कोल बनबासी। बैखानस बटु जती उदासी॥ 2.224.C4
361 करि प्रनामु पूँछहिं जेहि तेही। केहि बन लखनु रामु बैदेही॥ 2.224.C5

रस्ता मां उनका जेतने बन मां रहै वाले कोल-भील मिलत जात हैं, उइ सबहीं ते परनाम करत पूछत जात हैं कि राम लखन बैदेही कउने बनु मां मिलिहैं?

362 ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहि देखि जनम फलु लहहीं॥ 2.224.C6
363 भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन॥ 2.239.C2

सब बनवासी प्रभु राम केर समाचार उनते बतावत हवैं औ भरत के दरसन पाई के आपन जनम सुफल मानत हवैं। चलत-चलत भरतु का परभू केर पावन आसरम देखाय लाग जौ सब परकार के मंगल फल दे वाले भवन की तना सोभायमान रहा।

364 पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं। भूतल परे लकुट की नाईं॥ 2.240.C2
365 उठे रामु सुनि पेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा॥ 2.240.C8

"हे नाथ! हमार रच्छा करौ! हमार रच्छा करौ!" अस कहि के भरत राम के चरनन मां डंडा की तईं गिरि परे। भरत के अस बानी सुनि के रामौ अधीर होई के अस उठि ठाढ़ भे कि उनकेर धनुस कहूँ, तरकस कहूँ औ बान कहूँ जाय गिरे।

366 बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान। 2.240.D1
367 भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान ॥ 2.240.D2

तब किरपानिधान राम बरबस भरत का उठाइन औ अपने हिरदय ते लगाइन। भरत औ राम केर अस मिलाप देखि के सबै जन आपनि-आपनि सुध-बुध खो बइठे।

368 तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात। 2.259.D1
369 कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात ॥ 2.259.D2

तब गुरु बसिस्ठ जी स्थिति सम्भारिन औ भरत ते कहिन, "हे तात! तुम सब संकोच का छाड़ो औ अपने प्रिय भाई ते जो किरपा के सागर अहीं, आपन मन केरी बात कहौ।"

370 देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी ॥ 2.268.C7
371 तिलक समाजु साजि सबु आना। करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना ॥ 2.268.C8

भरत जी तब बोले, "हे स्वामी! हमार याक बिनती सुनि लियो, फिर जउन उचित लागै हमते कह्यो, हम तुम्हार अग्या मानि के करब। हम तोहरे खातिर राज- तिलक का सब साजु-सामान लइ के आयेन हैं, तुम्हार मनु करे तौ ई सब सामान का लाउब सफल करौ।"

372 नाथ भरतु पुरजन महतारी। सोक बिकल बनबास दुखारी ॥ 2.290.C4
373 उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सबही कर रौरें हाथा ॥ 2.290.C6

राम तब गुरु बसिस्ठ ते कहिन, "हे नाथु! ई भरत, महतारी होरी औ सब नगरबासी बनबासु का देखि के मारे दुखु के ब्याकुल होई रहै हैं, तौ तुम वहै काजु करौ जउन यहि बेरिया करब उचित होय काहे ते कि अबु सबकेर कल्यान तुमरेहे हाथे मां है।"

374 बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू ॥ 2.296.C7
375 राउर राय रजायसु होई। राउरि सपथ सही सिर सोई ॥ 2.296.C8

"तुम्हरे औ मिथिलापती के होत भये हम कुछु कही, यह उचित नाहीं लागत है। हम सपथु खाई के कहित हन कि जेहिमां तुम पंचेन के रजाइ होई हम वहिका अग्या की तरा सीस पर धारन करिबे।"

376 राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत । 2.296.D1
377 सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न ऊतरु देत ॥ 2.296.D2

राम केर सपथ कै बात सुनि के मुनी औ जनक दुनो जने पूरी सभा समेत सकुचाय गे, कोहु ते कउनो उत्तर न देत बना औ सब जन भरत के मुख कइती द्याखे लाग।

378 सभा सकुच बस भरत निहारी । राम बंधु धरि धीरजु भारी ॥ 2.297.C1
379 करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे । रामु राउ गुर साधु निहोरे ॥ 2.297.C5

सगरी सभा का संकोच के बस देखि के राम के भाई भरत बहुत धीरज धारि कै पहिले तौ सबुका हाथ जोरि कै परनाम कीनिन्हिन् फिर राम, राजा जनकु, गुरु औ संतन ते बिनती किहिन।

380 प्रभु पितु बचन मोह बस पेली । आयउँ इहाँ समाजु सकेली ॥ 2.298.C5
381 सोक सनेहँ कि बाल सुभाएँ । आयउँ लाइ रजायसु बाएँ ॥ 2.300.C1

"हम परभु केर, पिता के अग्या का अपने मोह के चलत बराय के, सगरे समाज का एकट्ठा कइ के हियाँ चले आयेनं। एहका हमार लरकुपन मान्यो औ एहका हमए सोक, सनेह की तरा समझ्यो।"

382 तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सबहि भाँति भल मानेउ मोरा ॥ 2.300.C2
383 कृपासिंधु सनमानि सुबानी । बैठाए समीप गहि पानी ॥ 2.301.C7

"तुम अपनी कइती ते सब तरा हमार भलै करा चाहत हौ।" तब किरपा के सागर रामचंदर भरत का बहुत मान ते उनकेर बांह पकरि के अपने लगे बइठारिन।

384 करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात। 2.304.D1
385 गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात ॥ 2.304.D2

राम कहिन, "हे तात! तुम मन-करमु-बचन सब तरा ते निरमल हौ, तुमरी तरा बस तुमही हौ। गुरु होरेन के सामने भरे समाज मां, अउर असि बिपत्ति के कालु मां हम अपने छोट भाई के गुनन का बरनन कइसे करी?"

386 तुम्हहि बिदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू॥ 2.305.C3
387 सो तुम्ह करहु करावहु मोहू। तात तरनिकुल पालक होहू॥ 2.306.C3
"हे भरत भाई! तुम सबके कर्तब्यन का जानै-समझै वाले हौ, केहिमा हमार या तुम्हार कल्यान होई याहो तुम नीकी तना समझत हौ। यहि बरे तुम हमते औ अपना ते वहै करवाओ जेहिते सुरजबंस कै पालक कहाये जाओ।"

388 सो बिचारि सहि संकटु भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी॥ 2.306.C5
389 जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा। कुसमयँ तात न अनुचित मोरा॥ 2.306.C7
"अस बिचार कइ के तुम अपने बिकट संकट का सहेक परै तबहूँ परजा-परिवार का सुखी करौ। तुम्हार कोमल सुभाव जानत भये हम तुमते अस कठोर बचन कहि रहेन हैं तौ कुसमय का देखत भये हमार अस कहब कउनो अनुचित न आय।"

390 होहिं कुठायँ सुबंधु सहाए। ओड़िअहिं हाथ असनिहु के घाए॥ 2.306.C8
391 पितु आयसु पालिहिं दुहु भाईं। लोक बेद भल भूप भलाईं॥ 2.315.C4
"काहे ते कि बुरे बखत मां भले भाइहि सहायता कर्त हैं, जइसे तलवार के वार का अपनै हाथ आगे आय के रोकि सकत हैं।"

392 अस बिचारि सब सोच बिहाई। पालहु अवध अवधि भरि जाई॥ 2.315.C6
393 बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। बिनु अधार मन तोषु न साँती॥ 2.316.C2
"अइस बिचारु कइ के सोचु का छांड़ि द्यो औ जाय के चौदह बरस की अवधि भर अवध केर पालन करौ।" येहि भांति राम, भाई भरत का अनेक परकार ते समुझाइन मुला बिना कौनो सहारा पाए भरत के मन का संतोसु नहीं आवत रहा।

394 प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं॥ 2.316.C4
395 भरत मुदित अवलंब लहे तें। अस सुख जस सिय रामु रहे तें॥ 2.316.C8

तबु भगवान किरपा कइ के भरत का आपनि खड़ाऊ दिहिन। जिनका भरतु बहुतै आदर के साथ सीस पर धरि के स्वीकार किहिन। या सहारा पाय के भरत अनंदित भे औ उनका अस लाग जइसे उनका साच्छात राम औ सिया मिली गे होंय।

396 लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि । 2.318.D1
397 चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि ॥ 2.318.D2

लखन ते भेंटि के उनका परनाम किहिन औ सिया माता के चरनन के धूर माथे ते लगाइ के सब मंगल करे वाले असीसन का पाई के प्रेम के साथ चलि परे।

398 हृदयँ रामु सिय लखन समेता । चले जाहिं सब लोग अचेता ॥ 2.320.C7
399 प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं । सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥ 2.322.C2

भरत के साथे सब जने सिया-रामु का अपने-अपने हिरदय मां बसाय, आपन सुध-बुध बिसराय के चलि परे। मनही मन मां परभू के गुनन का गुनत चुप्पेचाप मारग पर चले जात हैं।

400 सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख ओधे॥2.323.C1
401 नंदिगावँ करि परन कुटीरा। कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा॥ 2.324.C2

अजोध्या पहुँचि के भरत सब मंत्रिन का औ नीके नीके सेवकन का उनकेर काम काजु समझाइन तौ सबुई जन अपने अपने कामे मां जुटि गे। तब नंदीगराम माँ परन कुटी छवा के, धरमधुरी का धारन करे वाले भरत, धीरजु धरि के हुवां निवासु किन्हिन।

402 नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति । 2.325.D1
403 मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति ॥ 2.325.D2

नित भगवान के चरन पादुकन का पूजि-पूजि के उनके हिरदय मां प्रीति समाय नहीं रही, उनही का सहारा लइ के, औ उनही ते अग्या मांगि-मांगि के भरत अनेक भांति ते राजकाजु संभारै लाग।

404 भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं । 2.326.S1
405 सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति ॥ 2.326.S2

तुलसीदास जी कहत हैं, "जो कोऊ भरत केर यह चरित मनु लगाय के आदर सहित सुनी, वहिके मन मां राम सिया के चरनन मां प्रेमु अवस्य पैदा होई औ वह संसार के सब बिसयन ते मुक्त होइ जाई।"

अरण्यकाण्ड

406 रघुपति चित्रकूट बसि नाना। चरित किए श्रुति सुधा समाना॥ 3.3.C1
चित्रकूट मां बसत भये राम नाना परकार केरी लीला करिन, जिनका सुने भर ते अमरित के समान परतीति होत है।

407 बहुरि राम अस मन अनुमाना। होइहि भीर सबहिं मोहि जाना॥ 3.3.C2
408 सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई। सीता सहित चले द्वौ भाई॥ 3.3.C3
कछुक काल बीतै के बाद राम अस अनुमानिन कि हियाँ सबुइ जन हमका जानि गे हवैं औ धीरा-धीरा मिले वालेन कै भीर बाढ़त जाई एहिते हमका अब यह जगह छांड़ि देक चही। अस सोचि के उइ सब रिसी मुनिन ते बिदा मांगिन औ सिया के साथै दुनो भाई हुवां ते चलि परे।

409 अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ। सुनत महामुनि हरषित भयऊ॥ 3.3.C4
410 अनुसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुसील बिनीता॥ 3.5.C1
जब भगवान अत्री मुनी के आसरम मां जाय अटे, यह समाचार सुनि के मुनी का बहुत हर्स भा। सुसील औ बिनम्र सुभाव वाली सिया अनुसुइया के चरन छुइ के उनते भ्यांट किहिन।

411 दिब्य बसन भूषन पहिराए। जे नित नूतन अमल सुहाए॥ 3.5.C3
412 कह रिषिबधू सरस मृदु बानी। नारिधर्म कछु ब्याज बखानी॥ 3.5.C4
अनुसुइया जी सिया का दिब्य बसन-आभूसन दिहिन जो नित नए हस लागत हैं औ कबहूँ मइल नाहीं होत। रिसी की दुलहिन सिया का नारी के धरम समझाय-समझाय के बतावै लागीं।

413 सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं। 3.5b.S1
414 तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित॥ 3.5b.S2

उइ कहिन, “हे सिया! तुम्हार तो नामु लइ-लइ के मेहरिया होरी पतिधरम का निभाय लेहैं। तुमका तो राम परानन ते पियारे हवैं, यह सबु कथा तौ हम संसार का सिच्छा देवे के बरे कहेन हवे।

415 मुनि पद कमल नाइ करि सीसा। चले बनहि सुर नर मुनि ईसा॥ 3.7.C1
मुनी के चरन-कमलन पर सीस नवाय के देउता, मानुस औ रिसी-मुनिन के स्वामी रामचंदर बन कइती चलि परे।

416 मिला असुर बिराध मग जाता। आवतहीं रघुबीर निपाता॥ 3.7.C6
417 पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिबर बृंद बिपुल सँग लागे॥ 3.9.C5
चलत-चलत वही रस्ता मां बिराधु नाम केर राच्छस मिला, जइसेहे वा सामने आवा रघुबीर वहिका मार डारिन। फिर रामु अपने मारग पर आगे का बढ़े तौ उनके साथे तमाम रिसी मुनिन के झुण्ड के झुण्ड चलि परे।

418 अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया॥ 3.9.C6
419 निसिचर निकर सकल मुनि खाए। सुनि रघुबीर नयन जल छाए॥ 3.9.C8
आगे जाय के रस्ता मां तमाम हड्डिन का ढेरु देखि के राम के मन मां बहुत दया लाग औ उइ मुनिन ते ओहिके बारे मां पूछिन। जब उइ जानिन कि ई उन सब मुनिन की हड्डी अहिं जिनका राच्छस होर खा डारिन हैं, यह सुनि के उनके नयनन मां आंसू भरि आये।

420 निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह। 3.9.D1
421 सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह॥ 3.9.D2
रामु वही लग्गे भुजा उठाई के परतिग्या किहिन कि धरा ते सब निसिचरन का नास कई द्याबे। यहि खातिर सब रिसिन के आसरमन मां जाय-जाय के सबका संतुस्ट कीन्हिन।

422 मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना। नाम सुतीछन रति भगवाना॥ 3.10.C1
423 मन क्रम बचन राम पद सेवक। सपनेहुँ आन भरोस न देवक॥ 3.10.C2

अगस्त रिसी के सुतीछन नाम के याक बड़े विद्वान सिस्य रहैं, जिनका भगवान के ऊपर बहुत प्रेमु रहा। उइ मनु-बचन-करम ते बस रामै के चरनन मां रमे रहत रहें, कउनो अउर देउता का सपनेउ मां ध्यान न लावत रहैं।

424 कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी॥ 3.11.C1
425 जो कोसलपति राजिव नयना। करउ सो राम हृदय मम अयना॥ 3.11.C20
मुनी राम ते कहै लाग, "हे परभु! हमार बिनती सुनि लेओ। हम तुम्हार केहि तरा बिनती करी? हे कोसल के राजा! हे कमल नयन! हे राम! बस तुम एतना करौ कि हमरे हिरदय मां आपन घर बना लियो।"

426 अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम। 3.11.D1
427 मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम॥ 3.11.D2
"हे राम! तुम हमरे हिरदय मां धनुस बान धरे भये अपने छोट भाई लखन, औ जानकी सहित अइसे निवासु करौ जइसे अकास मां चन्द्रमा करत है।"

428 एवमस्तु करि रमानिवासा। हरषि चले कुंभज रिषि पासा॥ 3.12.C1
"अइसन होई" अस कहि के रमापति रामचन्दर खुसी-खुसी अगस्त रिसी के लगे चलि परे।

429 अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही॥ 3.13.C3
430 मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी। पूछेहु नाथ मोहि का जानी॥ 3.13.C4
हुवां पहुंचि के राम रिसी ते सलाह- मंत्रना किहिन, "कउनी तरा ते इ रिसी मुनिन के द्रोहिन का नासु कीन जाय?" प्रभु के अस बात सुनि के मुनी मुसकाय लाग औ बोले, "हे नाथ! तुम हमका का जानि के हमते अस प्रस्न पूछयो है?"

431 ते तुम्ह सकल लोकपति साईं। पूँछेहु मोहि मनुज की नाईं॥ 3.13.C9
432 संतत दासन्ह देहु बड़ाई। तातें मोहि पूँछेहु रघुराई॥ 3.13.C14

"तुम तौ आपुइ सब लोकन के स्वामी अहियु मुला हमते अस पूछत हौ जस साधारन मनइ पूछत है। काहे ते कि तुम संतन का जसु देवा चाहत हौ यही तेना हमते पूछि रह्यो है।"

433 है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पंचबटी तेहि नाऊँ ॥ 3.13.C15
434 दंडक बन पुनीत प्रभु करहू। उग्र साप मुनिबर कर हरहू ॥ 3.13.C16

"हे परभु! हियाँ दंडकबन मां याक बहुतै नीक औ पबित्तर अस्थान हवै जेहिका नांव पंचबटी आय। मुला यह बनु गउतम रिसी के साप ते शापित है, तुम हुवां का साप हरि के वेह अस्थान का पबित्तर करौ।"

435 बास करहु तहँ रघुकुल राया। कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया ॥ 3.13.C17
436 चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहिं पंचबटी निअराई ॥ 3.13.C18

"हे रघुबंस के स्वामी! तुम हुवां जाय के बास करौ औ सब मुनियन के ऊपर दया करौ।" मुनि केर अस अग्या पाई के रघुबर चलि परे औ थोरिहि द्यार मां पंचबटी नियराय आई।

437 गीधराज सैं भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ। 3.13.D1
438 गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ ॥ 3.13.D2

हुवां गीधराज जटायु ते उनकेर भेंट भै, उनते बहुत प्रेमपूर्वक मिलि के राम गोदावरी नदी के नेरे परन कुटिया छवाय के रहै लाग।

439 सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी ॥ 3.17.C3
440 पंचबटी सो गइ एक बारा। देखि बिकल भइ जुगल कुमारा ॥ 3.17.C4

हुवें रावन के बहिनी सूपनखौ रहत रही वह बहुत दुष्ट सुभाव वाली औ नागिन कि तना खतरनाक रही, याक दईं घूमत घूमत पंचबटी तक आय गई औ दुनो भाइन कई सुन्दर जोरी देखि के कामबासना ते तड़पि उठी।

441 रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई। बोली बचन बहुत मुसुकाई ॥ 3.17.C7
442 तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी। यह सँजोग बिधि रचा बिचारी ॥ 3.17.C8

वा बहुते नीक रूप बनाइस औ राम के लगे जाय के मुस्कियाय मुस्कियाय के कहिस, “येह संसार मां न तुम्हरे जइस मंसवा है औ न हमार हस मेहरिया, लागत है कि अपने मिले का अस संजोगु बिधातै सोच-बिचार कइ के रचिन हवैं।”

443 सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहइ कुआर मोर लघु भ्राता॥ 3.17.C11

तब राम सिया कइती चितय के ओहिका अपने संगिनी के साथ होय का इसारा किहिन औ बताइन कि हाँ! हमार छोटु भाई अवसि कुंआर है अरथात बनु मां अकेले रहत है।

444 गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी। प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी॥ 3.17.C12
445 सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा॥ 3.17.C13

तब वह लछिमन के लगे गै औ लछिमन ओहिका सत्रु केरी बहिन जानत भये प्रभु की कइती चितय के मीठी बोली मां ब्वाले, “अरे सुंदरी! हम तो उनके दास अहिन औ एक पराधीन के साथै तुम्हार बसर न होइ, तुमका कउनो सुख न मिली।

446 पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई॥ 3.17.C17
447 लछिमन कहा तोहि सो बरई। जो तृन तोरि लाज परिहरई॥ 3.17.C18

वह पलटि-पलटि के राम के लगे जाय और राम वहिका लछिमन के लगे पठए दें, तब लछिमन ओहिते कहिन, “जो कोउ लाज-सरम का तिनका की तरा त्यागि दिहिस होई वहे तुमका बरी।”

448 तब खिसिआनि राम पहिं गई। रूप भयंकर प्रगटत भई॥ 3.17.C19
449 सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सयन बुझाई॥ 3.17.C20

तब वह बड़ी जोर खिसियान औ राम के लगे एकदम भयंकर रूप मां पहुँचि गै, ओहिका अस रूप देखि के सिया डेराय गयीं तौ राम आपन छोट भाई का इसारा किहिन।

450 लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान बिनु कीन्हि। 3.17.D1
451 ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि॥ 3.17.D2

लछिमन बड़ी फुर्ती तेना वहिका नाक-कान ते बिहीन कइ दिहिन औ यही तरा मानो रावन का चुनौती दइ दिहिन।

452 नाक कान बिनु भइ बिकरारा। जनु स्रव सैल गेरु कै धारा॥ 3.18.C1
453 खर दूषन पहिं गइ बिलपाता। धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता॥ 3.18.C2
नाके-काने के बिना सूपनखा औरो भयंकर लागे लाग, वहिके बहत रक्त अस लागे जइसे कारे पहाड़ ते गेरू के धार बहि रही होय। वह बिलपत-बिलपत खर-दूसन के लगे पहुंची औ उनते कहिस, "हे भाई! तुमरे बल औ पौरुस का धिक्कार है।"

454 तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई। जातुधान सुनि सेन बनाई॥ 3.18.C3
455 धूरि पूरि नभ मंडल रहा। राम बोलाइ अनुज सन कहा॥ 3.18.C10
उइ पूछिन कि का भा? तब उनते सब कथा बुझाईस औ खर दूसन सेना बनाय के चलि परे, एतनी बड़ी सेना रहै कि वहिके चले ते आकास तक धूर के बादर छा गे, यहिका देखि के राम छोट भाई का बोलाय के कहिन,

456 लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर। आवा निसिचर कटकु भयंकर॥ 3.18.C11
457 देखि राम रिपुदल चलि आवा। बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा॥ 3.18.C13
"तुम सिया का लै के परबत के कन्दरा मां चले जाओ काहे ते कि निसाचर बड़ी भारी सेना लै के आवत है।" जब सत्रु के सेना नजदीक आय गे तौ राम हंसि के आपन कठोर धनुस चढ़ाईन औ उनते जुद्ध करे लाग।

458 राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान। 3.20a.D1
459 करि उपाय रिपु मारे छन महुँ कृपानिधान॥ 3.20a.D2
ई राच्छस राम-राम कहि के परान त्यागत हैं औ सीधे मोच्छ का पावत हैं। यही तरा छन भरे मां तनिक उपाय ते राम सब सत्रुन का खतम कइ दिहिन।

460 धुआँ देखि खरदूषन केरा। जाइ सुपनखाँ रावन प्रेरा॥ 3.21.C5
461 बोली बचन क्रोध करि भारी। देस कोस कै सुरति बिसारी॥ 3.21.C6

खर दूसन केर अस बिनास देखि के सूपनखा रावन का भड़काइस जाय औ क्रोध मां भरि के कहेसि, "तुम तौ देस औ कोस के सुधि-बुधि बिसराय दिह्यो है कि कहाँ का आय होत है?"

462 कह लंकेस कहसि निज बाता। केइँ तव नासा कान निपाता॥ 3.22.C2
463 अवध नृपति दसरथ के जाए। पुरुष सिंघ बन खेलन आए॥ 3.22.C3
लंकापति रावन पूछिस, "आपनि बात बतावौ को तुम्हार नाक कान काटिस हवे?" वह कहेसि, "अजोध्या के राजा दसरथ के दुई बेटवा जौ पुरुसन मां सिंघ के समान लागत हैं दंडकबन मां सिकार ख्याले आये हवैं।"

464 सोभा धाम राम अस नामा। तिन्ह के संग नारि एक स्यामा॥ 3.22.C8
465 तासु अनुज काटे श्रुति नासा। सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा॥ 3.22.C10
"उइ मानो सुन्दरता के धाम अहिं मुला उनके साथे याक बहुते सुन्दर नारियु है। उनहीं केर छोटका भाई हमार नाक कान काटि डारिस है औ हमका तुम्हार बहिनी जानि के तौ हमार बहुते उपहास कीन्हिस।"

466 सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भाँति। 3.22.D1
467 गयउ भवन अति सोचबस नीद परइ नहिं राति॥ 3.22.D2
रावन सूपनखा का बहुत तरा ते समझाइस औ वहिका अपने बलु का भरोस देवाइस मुला जब अपने भवन मां गा तौ सोच के मारे वाहिका राति भर नींद नहीं परी।

468 सुर रंजन भंजन महि भारा। जौं भगवंत लीन्ह अवतारा॥ 3.23.C3
469 तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ। प्रभु सर प्रान तजें भव तरऊँ॥ 3.23.C4
रावनु मन मां स्वाचे लाग कि ई का देउतन का आनंद दे वाले औ धरती केर भार हरे वाले भगवानु आहीं जौन अवतार लइ के आये गे हैं तौ काहे नाहीं हम इन्ते बैरु ठानि लेइ जेहिते उनहीं के बानन ते हमरे परान निकसे औ हम भाव सागर तेना तरि जाई।

470 इहाँ राम जसि जुगुति बनाई। सुनहु उमा सो कथा सुहाई॥ 3.23.C8

अब संकर भगवान पारबती ते कहत हैं, “हे उमा! राम अपने अवतार बेरे सब काजु नीकि तना करे खितिर जउन जुगति बनाइन वहिकेर सुन्दर कथा सुनौ।”

471 सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला । मैं कछु करबि ललित नरलीला ॥ 3.24.C1
472 तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा । जौ लगि करौं निसाचर नासा ॥ 3.24.C2
रामचन्दर सिया ते अस कहिन, “हे हमरी पियारी! तुम सब तरा ते सुसील हौ औ सब बरत नियम का पालन करे मां आपनि रूचि धरे रहती हौ एहते तुमका बताइत हवे कि अब हम कछु नरलीला करे जाइत है एहते समझि लियो तुमका आगे केर जीवन आगी मां बास करे का हवे जब तक हम सब निसाचरन केर नास न कइ लेइ।”

473 जबहिं राम सब कहा बखानी । प्रभु पद धरि हियँ अनल समानी ॥ 3.24.C3
474 निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता । तैसइ सील रूप सुबिनीता ॥ 3.24.C4
जबहीं रामु यह सब कहिन तबहीं सिया भगवान के चरनन मां आपन ध्यान धरि के आगी मां समाय गयीं औ हुवां अपनेन रूप, सीलु, विनम्रता के सुभाव वाले रूप केरी परछाईं धइ दिहिन।

475 दसमुख गयउ जहाँ मारीचा । नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥ 3.24.C6
476 होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी । जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी ॥ 3.25.C2
अइसी रावन सब सोचु बिचारु करै के बाद मारीच के लगे गवा औ आपन स्वारथु सिद्ध करे के खातिर वहिके आगे आपनु माथु नवाइस औ कहिस, “तुम आपन छलु परपंचु रचि के कपटी हिरन केर भेस धरौ जेहिते हम राजा केरी स्त्री का हरि कै लइ जाई।”

477 तेहि बन निकट दसानन गयऊ । तब मारीच कपटमृग भयऊ ॥ 3.27.C1
478 सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग सुमनोहर बेषा ॥ 3.27.C3
अब रावन मारीच का लइ के वे बन के लगे जाय पहुंचा जहां राम सिया औ लखन के साथै निवासु करत रहें फिरि मारीच कपटी मिरग केरा रूप धारन करिस। सिया जब अइसे बिरले हिरन का देखिन जेहिके अंग प्रत्यंग सब अस सुन्दर राहैं कि मनु का हरि लें।

479 सत्यसंध प्रभु बधि करि एही। आनहु चर्म कहति बैदेही॥ 3.27.C5
480 प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी। धाए रामु सरासन साजी॥ 3.27.C10
उइ रामचंद्र ते कहिन, "हे सत्य का ठाने वाले रघुबर! तुम यहिकेर बधु कइ के हमरी खातिर येहिका चर्म लइ आवौ।" रामु जब ओहिका पकरे चले तब वा उनका देखि के भागि चला औ राम वहिके पाछे-पाछे धनुस बान लइ के दउरे।

481 प्रगटत दुरत करत छल भूरी। एहि बिधि प्रभुहि गयउ लै दूरी॥ 3.27.C13
482 तब तकि राम कठिन सर मारा। धरनि परेउ करि घोर पुकारा॥ 3.27.C14
यही तना बहुत परकार के छलु करत भये वा हिरन कबौ परगट होई जाय, कबौ लुका जाय, अस करत-करत वह भगवान का बहुत दूरि निकार लइ गा। तब राम ताकि के निसाना लगाइन औ एक कठिन बान चढ़ाय के मारिन। बान के लगतै वह जोर ते पुकारि के धरती पर गिरि परा।

483 बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ। 3.27.D1
484 निज पद दीन्ह असुर कहुँ दीनबंधु रघुनाथ॥ 3.27.D2
वहिके मरतै देउतागन खूब फूलन के बरसा कइ कइ के भगवान केर जसु गावै लाग, "भगवान एतने दयालु हवैं कि असुरौ का अपने धाम का पदु प्रदान किहिन।"

485 आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लछिमन सन परम सभीता॥ 3.28.C2
486 जाहु बेगि संकट अति भ्राता। लछिमन बिहसि कहा सुनु माता॥ 3.28.C3
अइसी जबहीं सिया यहि चीख का सुनिन तो बहुत डेराय के लछिमन ते कहैं लागीं, "तुम्हरे भैया जानौ कउनो संकट मां परि गे हैं, तुम हाली तेना दउर के जावौ।" अस बात सुनि के लछिमन हंसि के कहिन, "हे माता! सुनौ,"

487 भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहुँ संकट परइ कि सोई॥ 3.28.C4
488 मरम बचन जब सीता बोला। हरि प्रेरित लछिमन मन डोला॥ 3.28.C5
"जिन्ह के एक भृकुटी के इसारा करे ते सृष्टिन केर नास होई जात है भला उन के ऊपर सपनेहु मां संकट परि सकत है?" मुला सिया नहीं मानीं औ लखन का कुछु चुभै वाली

बातें कहि डारिन तौ भगवान केरी इच्छा ते औ उनकी लीला पूरी करे खितिर लछिमनौ का मन डोलि गा।

489 बन दिसि देव सौंपि सब काहू । चले जहाँ रावन ससि राहू ॥ 3.28.C6
490 सून बीच दसकंधर देखा । आवा निकट जती कें बेषा ॥ 3.28.C7
लछिमन जी सीता जी का बन औ सब दिसन के देउतन का सौंपि के हुवां का चलि परे, जहां रावन जइसन चन्द्रमा का निगलि ले वाले राहू के समान रामचंदर जी रहैं। यही बीच रावण आसरम का सून देखिस तौ सन्यासी केर भेसु बनाय के हुवां आय गवा।

491 नाना बिधि करि कथा सुहाई । राजनीति भय प्रीति देखाई ॥ 3.28.C11
492 कह सीता सुनु जती गोसाईं । बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं ॥ 3.28.C12
कई तना केरी नीकी-नीकी कथा कहि के सिया जी का कबौ राजनीति समुझावै, कबौ डेरवावै तौ कबौ प्रेम तेना बहिलावै लाग। सिया वहिकेर मंसा समुझि गईं औ बोलीं, "हे जती महाराज! तुम तौ दुसटन की तना बोलि रह्यो है।"

493 क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ । 3.28.D1
494 चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ ॥ 3.28.D2
अस सुनतै रावन रिसाय गा औ सीता का उठाय के अपने रथ मां बइठार लीन्हिस। अकास मार्ग ते रथ का बढ़ा तो लिहिस मुला मारे भय के ओहसे रथु हांका नहीं हांक जात रहा।

495 बिबिध बिलाप करति बैदेही । भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥ 3.29.C4
जइसेहे अस भा सिया बहुत तरा बिलापु करैं लागीं औ कहै लागीं कि प्रभु केरी किरपा तौ बहुत हवै मुला उनते सनेह करै वाले रामु उन्ते दूरि रहि गे है।

496 गीधराज सुनि आरत बानी । रघुकुलतिलक नारि पहिचानी ॥ 3.29.C7
497 धावा क्रोधवंत खग कैसें । छूटइ पबि परबत कहुँ जैसें ॥ 3.29.C10
गीधराज जटायु जब याह बिलापु सुनिन तौ आवाज ते पहिचानि लिहिन कि या तौ आरत बानी रघुकुल तिलक रामचन्द्र केरी पत्नी सिया कै लागत है। अस समुझ परते

क्रोध ते भरा जटायु एतनी तेजी ते वइसी लपका जेतनी तेजी से परबत कइती बज्रु लपकत हवै।

498 तब सक्रोध निसिचर खिसिआना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना॥ 3.29.C21
499 काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अद्भुत करनी॥ 3.29.C22
जटायु के आक्रमण तेना रावनु खिसियाय गा औ मारे क्रोध के आपनि भयंकर तलवार निकारिस औ जटायु के पंख काटि डारेसि। पंख कटतै जटायु धरती पर गिरि परा औ रामचंदर के अद्भुत लीला का सुमिरै लाग।

500 सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी। चला उताइल त्रास न थोरी॥ 3.29.C23
अब रावन सीता का फिरि ते रथु पर चढ़ाइस औ बहुत तेजी से हुवां ते भाग, काहे ते कि वहिके मन मां अबहूँ बहुत भय रहा।

501 गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी। कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी॥ 3.29.C25
502 एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ। बन असोक महँ राखत भयऊ॥ 3.29.C26
सीता एकु परबत पर कुछ बानरन का बइठे देखिन तौ परभु का नांव लैके एक पोटरी हुवां डारि दिहिन। यही तरा रावनु सिया का हरि लिहिस औ लंका लइ जाय के असोक बाटिका मां उनका राखिस।

503 जेहि बिधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम। 3.29b.D1
504 सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम॥ 3.29b.D2
जउनि तरा औ जउने रूप मां राम कपटी हिरन के पाछे गे रहैं वहै रूप हिरदय मां बसाय के सिया हरि का नांव रटै लागीं।

505 आश्रम देखि जानकी हीना। भए बिकल जस प्राकृत दीना॥ 3.30.C6
506 लछिमन समुझाए बहु भाँती। पूछत चले लता तरु पाँती॥ 3.30.C8
वइसी जब दुनो भाई आसरम पहुंचे औ वाहिका सिया के बिना पाइन तौ रामु एकदम साधारन मनइ की तरा बिलपै लाग, लछिमन उनका बहुत तरा ते समुझावै मुला उइ ब्याकुल होई-होई के लता, पेड़ औ पातिन ते सिया के बारे मां पूछत आगे बढ़ि चले।

507 आगें परा गीधपति देखा। सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा॥ 3.30.C18
508 तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा॥ 3.31.C1

आगे चलि के उइ गीधराज जटायु का परा पाइन, वा राम के उन चरनन का सुमिरत रहा जेहिमा इसुर होय के बतावै वाली रेख बिद्यमान रही। गीध महाराज बहुत धीरज धरि के रामु ते कहिन, "येह संसार के भय का मेटै वाले हे प्रभु राम! सुनौ!!"

509 नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही॥ 3.31.C2
510 दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना। चलन चहत अब कृपानिधाना॥ 3.31.C4

"हमार या दसा दसानन रावन कीन्हिस है औ वहै दुष्ट जनकदुलारी सिया का हरि कै लइ गा है। हम अबै तक तुम्हरे दरसन करै के तइं ई परानन का रोके रहेन, अब ई चला चहत हैं।"

511 जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज तें गति पाई॥ 3.31.C8
512 परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥ 3.31.C9

उनकेर दसा देखि के रघुनाथ के नैनन मां जलु भरि आवा औ उइ कहै लाग, "हे तात! तुम अपने नीके करमन ते सद्गति पाय रह्यो है, जिन्ह के मन मां दुसरे के कल्यान करे के भावना रहत है उनका जग मां कुछु दुरलभ नहीं ना।"

513 तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरनकामा॥ 3.31.C10
514 ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी कें आश्रम पगु धारा॥ 3.34.C5

"आप येह तनु का तजि के हमरे धाम का जावौ, हम तुमका का देइ तुम तौ अपने आप मां पूरनकाम हौ।" तेहिका अस उत्तम गति दइ के राम सबरी के आसरम जाय पहुंचे।

515 कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि। 3.34.D1
516 प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥ 3.34.D2

सबरी राम का रसीले औ स्वादिस्ट कंद-मूल-फल खाय के बरे दिहिस जेहिका राम बहुत प्रेम ते बड़ाई कइ-कइ के खायिन।

517 केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी॥ 3.35.C2

सबरी कहे लाग, "हम कउनी तना तुम्हार अस्तुति करी, हम तौ नीच जाति के, बहुते जड़ बुद्धि वाली हन।"

518 कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानउँ एक भगति कर नाता ॥ 3.35.C4
519 नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥ 3.35.C7

तब रघुनाथ ओहते कहिन, "हे भामिनी! हमार बात ध्यान ते सुनौ, हम तौ केवल भगति केर नाता मानित हन। अब हम तुमते नवधा भक्ति बताय रहेन हैं, तुम ध्यान दइ के सुनौ औ अपने मनु मां सम्भारि के धरौ।"

520 नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई ॥ 3.36.C6
521 सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें । सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें ॥ 3.36.C7

इन नौ परकार ते कहूँ के लगे एकौ तना के भगति होय तौ वह मेहरिया होय, मंसवा होय, या ये सचराचर जगत मां कोऊ होय, हे भामिनि! वा हमका बहुत प्रिय है, मुला तुमरे भीतर तौ सबै तरा की भगति दृढ़ता ते मौजूद, हैं।"

522 जनकसुता कइ सुधि भामिनी । जानहि कहु करिबरगामिनी ॥ 3.36.C10
523 पंपा सरहि जाहु रघुराई । तहँ होइहि सुग्रीव मिताई ॥ 3.36.C11

फिर राम सबरी ते पूछिन, "अब हे भामिनि! अगर तुम गजगामिनी सिया के बारे मां कुच्छु जनती होवो तौ बतावौ।" सबरी कहिस, "हे रघुबर! तुम पम्पा सरोबर कइती जावौ हुवां तुम्हार मित्रता बानर राज सुग्रीव ते होई, उइ तुम्हार सहायता करिहैं।"

524 जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि । 3.36.D1
525 महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ 3.36.D2

तुलसीदास जी कहत हैं, "जउन नारी जाति औ संस्कारन ते हीन रही वहूका जो मुक्ति दइ दिहिन, तौ हे मूरख मन! अइसे प्रभु का बिसारि के भला कउनी तना तू सुख चाहत है?"

किष्किन्धाकाण्ड

526 आगें चले बहुरि रघुराया। रिष्यमूक पर्बत निअराया ॥ 4.1.C1
तब रघुनाथ आगे बढ़ि चले औ रिसमूक परबत निअराय आवा।

527 तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सींवा ॥ 4.1.C2
528 अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥ 4.1.C3
तहां सुग्रीव अपने मंत्रिन के साथे रहत रहें। उइ इन पंचेन का अतुलित बलसाली देखि के भयभीत होइ गे औ हनुमान ते कहिन, “हे हनुमान! ई दूनो पुरुस बल औ रूप के भण्डार देखा परत हैं।”

529 धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ॥ 4.1.C4
“तुम तईं बटुक का रूप धरि के जावौ औ उनके मनु मां का हवैं, पता कइ के हमका इसारा ते बता दीन्ह्यो।”

530 बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ । माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥ 4.1.C6
531 को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहु बन बीरा ॥ 4.1.C7
तब हनुमान बाम्हन का रूप धरि के उनके लगे पहुंचे औ माथु नवाय के अस पूछै लाग, “तुम सांवर औ गोर रंग वाले, छत्रिन का रूप धरे बन मां बिचरि रहे हौ, तुम को अह्यू?”

532 जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार । 4.1.D1
533 की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥ 4.1.D2
का तुम येह जगत के उत्पन्न होय वाले कारन औ फिरि वहिका तारै वाले, भवसागर के कस्टन का मेटि के धरती का भार हरै वाले सब लोकन के स्वामी स्वयं भगवान अह्यू ?”

534 कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितु बचन मानि बन आए ॥ 4.2.C1

तब रामचंद्र बोले, "हम कोसल के राजा दसरथ के पुत्र अहिन् औ पिता की अग्या के पालन करे खातिर बनु मां आये हन।"

535 नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई॥ 4.2.C2
536 इहाँ हरी निसिचर बैदेही। बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही॥ 4.2.C3

हम दुनो जने भाई-भाई अहिन, हमार नांओ राम अउ लछिमन हवै, हमरे साथे एक सुन्दर सुकोमल नारियु रही जेह्का नांओ बैदेही है, उनका निसाचर हरि लइ गवा है औ हे बाम्हन! हम उनही का बनु मां खोजत फिरित हन।"

537 प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना॥ 4.2.C5
538 पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही। हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही॥ 4.2.C7

अपने प्रभु का पहिचानि के हनुमान उनके चरनन मां गिरि परे औ उनके चरन पकरि लिहिन। भगवान सिउ कहत हैं, "हे पारबती! हनुमान के वहि सुख का बरनन करत नहीं बनता।" फिर हनुमान जी अपने हिरदय का सम्भारिन और धीरजु धरि के भगवान के अस्तुति करै लाग। अपने स्वामी का पहिचानि के उनका हिरदय बहुत हर्सित भा।

539 मोर न्याउ मैं पूछा साईं। तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं॥ 4.2.C8
540 नाथ सैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई॥ 4.4.C2

तब हनुमान जी राम ते कहै लाग, "हम तुमका पहिचानि नहीं पायेंन यहि बरे तुम्तेहे तुमका पूछा, हमार पूछब तौ नियाओ आये मुला तुम मानुस की तना हमते काहे पूछयो? हे नाथ! येह परबत पर कपिराज सुग्रीव रहत हैं जो अपना का तुम्हार दास मानत हवैं।"

541 तेहि सन नाथ मयत्री कीजे। दीन जानि तेहि अभय करीजे॥ 4.4.C3
542 जब सुग्रीवँ राम कहुँ देखा। अतिसय जन्म धन्य करि लेखा॥ 4.4.C6

"हे नाथ! उनका दीन-दुखी जानि के उनके साथे मित्रता कइ के उनका अभय करौ।" जब सुग्रीव रामु ते मिले तौ राम का देखतै उनका आपनु जनम धन्य जानि परा।

543 तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ। 4.4.D1
544 पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाइ॥ 4.4.D2

तब हनुमान दुनो जनेन के आपबीती सबका सुनाइन, वहिके पस्चात आगी का साखी करवाय के दुनों जन के मित्रता करवाइन।

545 नाथ बालि अरु मैं द्वौ भाई। प्रीति रही कछु बरनि न जाई॥ 4.6.C1
546 रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी। हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी॥ 4.6.C11

सुग्रीव राम ते बताइन, "हे नाथ! हम औ बाली द्विनो भाई रहेन, हमरे बीच जउन प्रीति रही वहिका कुछु बरनत नाहीं बनत मुला एक भरमु होई जाय ते वह हमका आपन सत्रु समझि के अस मारिस कि का बताई! हमार सरबसु छीन लिहिस, हियाँ तक कि हमार मेहरियौ हमते छड़ा लिहिस।"

547 ताकें भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला॥ 4.6.C12
548 लै सुग्रीव संग रघुनाथा। चले चाप सायक गहि हाथा॥ 4.7.C25

"हे किरपालु रघुबीर! वही के भय ते हम सारे लोकन मां मारे-मारे फिरित हन औउ बेहाल परे हन।" सुग्रीव के दसा सुनि के रघुनाथ धनुस बान हाथे मां लिहिन औ सुग्रीव के साथै चलि परे।

549 सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहि कर चरन नारि समुझावा॥ 4.7.C27
550 भिरे उभौ बाली अति तर्जा। मुठिका मारि महाधुनि गर्जा॥ 4.8.C2

राम के बल ते सुग्रीव जाय के बाली का लल्कारिन, बाली यह सुनतै मारे क्रोधु के दउरा मुला वहिकेर पत्नी वहिके चरन पकरि कै समुझावै लागि। तबहूँ वा नाहीं सुनिस औ दूनौ जने आपस मां भिरि गे, बाली सुग्रीव के याक मुक्का धइ के बड़े जोर ते गरजा।

551 तब सुग्रीव बिकल होइ भागा। मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा॥ 4.8.C3
552 मैं जो कहा रघुबीर कृपाला। बंधु न होइ मोर यह काला॥ 4.8.C4

सुग्रीव ब्याकुल होई के हुवां ते भागि आवा। वहिका या प्रहार बज्रु के हस लाग, सुग्रीव ब्याकुल होई के राम ते कहै लाग, "हम तुम ते बतावा रहै या हमार भाई नाही बल्कि हमार कालु आये।"

553 एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ॥ 4.8.C5
554 मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला ॥ 4.8.C7

तबु राम सुग्रीव ते कहिन, "तुम दुनो भाई एकै तना के लागत हौ यही ते हम वाहिका मार नहीं पायेंन।" फिरि राम सुग्रीव के कंठ मां माला पहिरा दिहिन औ वाहिका मनोबल बढ़ाय के दोबारा भेजिन।

555 बहु छल बल सुग्रीव कर हियँ हारा भय मानि । 4.8.D1
556 मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि ॥ 4.8.D2

सुग्रीव छल औ बल ते बहुत लरे मुला बादि मां डेराय लाग और उनका जिउ हारै लाग तब राम तानि के एकु बान बाली के हिरदय मां मारिन औ बाली भूमि पर गिरि परा।

557 धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं । मारेहु मोहि ब्याध की नाईं ॥ 4.9.C5
558 मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥ 4.9.C6

तब बाली राम ते पूछै लाग, "हे राम! तुम तौ धर्म का बचावै की खातिर मनुज रूप माँ अवतरे हौ फिर हमका छुपि के ब्याघ की तरा काहे मार्यो? सुग्रीव तुमका पियारे होई गे औ हमका तुम बैरी मान्यो, अस हमार का दोसु है जेहिते तुम हमका मार्यो है?"

559 अनुज बधू भगिनी सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥ 4.9.C7
560 इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि बधें कछु पाप न होई ॥ 4.9.C8

तब रामचंद्र वहिका समझाईंन, "अरे मूरख! लहुरी (छोट भाई के पत्नी), बहिन, पतोहु औ बिटिया ई चारों का एक समान माना जात है, इन पर बुरी नजर डारे वाले का बधे ते कुछु पाप नहीं होत।"

561 सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि। 4.9.D1
562 प्रभु अजहूँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि॥ 4.9.D2

बाली भगवान ते बोला, "हे राम! तुम्हरे आगे हमार चतुराई न चलि सकी, तबहूँ मरती बेरिया तुमरी सरन पाइहु के का हम पापी रहि जइबे?"

563 राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग। 4.10.D1
564 सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग॥ 4.10.D2

राम जी के चरनन मां आपन प्रीति दृढ़ कइ के बाली आपन प्रान त्यागिस, राम की किरपा ते बाली के प्रान एतनी सरलता से निकसि गे जइसे हाथी के गले ते फूलन के माला गिरि जाए औ वहिका आभासौ न होय।

565 लछिमन तुरत बोलाए पुरजन बिप्र समाज। 4.11.D1
566 राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुबराज॥ 4.11.D2

राम की अग्या ते लछिमन तुरतै नगर बासिन औ बाम्हनन का बोलवाइ के सुग्रीव का राज सौंपिन औ अंगदु का जुबराज बनाय दिहिन।

567 जब सुग्रीव भवन फिरि आए। रामु प्रबरषन गिरि पर छाए॥ 4.12.C10
568 इहाँ पवनसुत हृदयँ बिचारा। राम काजु सुग्रीवँ बिसारा॥ 4.19.C1

राजु-पाटु पाय के सुग्रीव भवन मां औ रामचंद्र प्रबरसन परबत पर चले गे। कुछ समय बीति जाय पर हनुमान स्वाचे लाग कि सुग्रीव राम के काजु का बिसरा दिहिन हैं।

569 निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा। चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा॥ 4.19.C2

तब हनुमान सुग्रीव के लगे गे औ उनके चरनन मां सीस नवाय के उनका चारियु (सामु, दामु, दण्डु, भेदु) तरा ते समुझाइन।

570 सुनि सुग्रीवँ परम भय माना। बिषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना॥ 4.19.C3
571 अब मारुतसुत दूत समूहा। पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा॥ 4.19.C4

हनुमान केर बात सुनि के सुग्रीव का बोधु भा औ उइ मानिन कि बिसय भोगु मां परि के उनकेर ग्यानु हरि गा रहै औ उइ रामे केर काज बिसराय बइठे। उइ हनुमान ते कहिन, "हे हनुमान! जहां-जहां बानरन के समूह होयें सबका बोलवाय पठवो।"

572 राम काजु अरु मोर निहोरा। बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा॥ 4.22.C6
573 जनकसुता कहुँ खोजहु जाई। मास दिवस महँ आएहु भाई॥ 4.22.C7
फिर सुग्रीव बानरन के सब समूहन ते कहिन, "यहिका हमार निबेदन अउर राम क्यार काजु समझि के चारों कइती निकसि परो औ जनकसुता का पता लगाय के एक माह के भीतर लउटि के सब जाने आ जायो।"

574 सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवंत मतिधीर सुजाना॥ 4.23.C1
575 सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू। सीता सुधि पूँछेहु सब काहू॥ 4.23.C2
"हे धीरबुद्धि और ज्ञान ते भरे भये नील, अंगद, हनुमान अउर जामवंत जी! सुनौ, आप सबै जोद्धा होर दक्खिन दिसा कइती जाय के सिया के बारे मां सब जनेन ते पूछि-पूछि के पता लगायो।"

576 पाछें पवन तनय सिरु नावा। जानि काज प्रभु निकट बोलावा॥ 4.23.C9
577 परसा सीस सरोरुह पानी। करमुद्रिका दीन्हि जन जानी॥ 4.23.C10
सबके पाछे जब पवनपुत्र राम का सीस नवाइन तौ राम उनके द्वारा काजु संपन्न होई अस बिचार कइ के उनका निकट बोलाइन अउर उनके सीस पर आपन कमलरूपी हाथ फेरि के उनका आपन सेवक जानि के अपएं हाथे केर मुद्रिका उनका दिहिन।

578 चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह। 4.23.D1
579 राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह॥ 4.23.D2
सब बानर बन, नदी, तलाव,गिरि-कन्दरन मां सिया का ढूंढे लाग। उन सब जनेन का मन रामकाज मां अस लागि गा कि सब अपएं-अपएं तन केर छोभ भुला गे।

580 इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं। बीती अवधि काज कछु नाहीं॥ 4.26.C1
अब सब बानर बिचार करैं लाग कि मिला भवा समय तो बीति गा मुला अबै तक कुच्छु पता नहीं लाग, कउनो काजु नही भा।

581 कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी॥ 4.26.C3
582 इहाँ न सुधि सीता कै पाई। उहाँ गएँ मारिहि कपिराई॥ 4.26.C4

अंगद आँखिन मां जलु भरि के कहै लाग, "हम पंचेन के तौ दुनू कइती ते मरब तय हवै, हियाँ तौ सीता केर पता न लाग औ हुवां गए ते कपिराज सुग्रीव हमका मारि डारिहैं।"

583 हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना। नहिं जैहैं जुबराज प्रबीना॥ 4.26.C9
584 जामवंत अंगद दुख देखी। कहीं कथा उपदेस बिसेषी॥ 4.26.C11

तब सब बानर उनका समझावै लाग, "हे प्रबीन जुबराज! सीता का पता लगाए बिना हम पंचे लउटि के न जाब।" जाम्वंतौ अंगद का दुखी जानि के उनका बिसेस परकार की कथा कहि -कहि के उपदेसिन,

585 निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि। 4.26.D1
586 सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि॥ 4.26.D2

"देउता, धरती, गऊ अउ ब्रह्मनन के लिए भगवान अपनी इच्छा ते मनुज अवतार धरत हैं औ भगवान के सगुनरूप के भगत उनके संग रहै के सुख खातिर सब तरा के मोच्छ कै इच्छा का त्यागि के उनके साथै उनकी सेवा मां लाग रहत हवैं।"

587 एहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती। गिरि कंदराँ सुनी संपाती॥ 4.27.C1
588 बाहेर होइ देखि बहु कीसा। मोहि अहार दीन्ह जगदीसा॥ 4.27.C2

जब सबुई बानर यही तरा बतलात रहैं तब गिरि की गुफा मां बइठ सम्पाती यह सब बतकही सुनि के बाहेर आये, एतने बनरन का देखि के सोचिन आज तौ भगवान घरहि मां बइठे-बइठे हमका भोजन पठेय दीहिन।

589 डरपे गीध बचन सुनि काना। अब भा मरन सत्य हम जाना॥ 4.27.C5

गीध के बात सुनि के सब बानर डेरा गे, सोचिन कि अब तौ मरब निस्चित भा।

590 कह अंगद बिचारि मन माहीं। धन्य जटायू सम कोउ नाहीं॥ 4.27.C7
591 राम काज कारन तनु त्यागी। हरि पुर गयउ परम बड़भागी॥ 4.27.C8

एतने मां अंगद जटायु का यादि कइ के कहै लाग, "जटायु के बराबर धन्य को होई जो रामकाजु करत-करत प्रान त्यागिन औ बड़े भागसाली रहें जउन प्रभु के धाम का गवनु कीन्हिन।"

592 तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई॥ 4.27.C10
593 गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहँ रह रावन सहज असंका॥ 4.28.C11
जटायु का नांओ सुनि के सम्पाती सबका अभय कइ के पूरी बात पूछिन तौ बानर होर जटायु केर कुल किस्सा उनते कहि सुनाईंन। सम्पाती बोले। "समन्दर के पार तिरकूट परबत पर लंका बसी है तहां रावन निसंक भाव ते राजु करत है।"

594 तहँ असोक उपबन जहँ रहई। सीता बैठि सोच रत अहई॥ 4.28.C12
595 जो नाघइ सत जोजन सागर। करइ सो राम काज मति आगर॥ 4.29.C1
हुवां असोक बाटिका मां सीता सोच मां बूड़ी बइठी हवैं। जो कोऊ यह सौ जोजन का सागर लांघि सकी वहै बुद्धिमान राम केर काज करे मां सफल होई।"

596 जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा। नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा॥ 4.29.C7
रीच्छराज जामवंत बोले, "हमार तौ अब बुढ़ापा आय गवा है, पहिले की तना अब सरीर मां बल नहीं रहि गा।"

597 बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ। 4.29.D1
598 उभय घरी महँ दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ॥ 4.29.D2
दैत्यराज बलि का बांधत बेरिया भगवान एतना बाढ़े कि उनकी बिसालता का बरनन नहीं कीन जा सकत तब हम दौरि के दुई घरी मां उनकेर सात परिकरमा कइ लीन रहै।"

599 अंगद कहइ जाउँ मैं पारा। जियँ संसय कछु फिरती बारा॥ 4.30.C1
अंगद कहै लाग, "हम वहि पार तौ चले जइबे मुला हुवां ते लउटै मां हमका अपने ऊपर कुछु संदेह है।"

600 कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना॥ 4.30.C3
601 पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥ 4.30.C4
तब जामवंत हनुमान ते कहिन, "हे बलवान! तुम काहे चुप्पी साधे बइठ हौ? तुम तौ पवन पुत्र अहियु, तुम्हरे लगे उन्हहि के समान बलु हवै औ बुद्धि, बिबेकु बिग्यान के तौ तुम बहुतै जानकार हौ।"

602 राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा॥ 4.30.C6
603 सहित सहाय रावनहि मारी। आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी॥ 4.30.C9
तुम्हार तौ जन्मै राम काज करैं खितिर भा है।" एतना सुनतै उइ पर्बताकार होई गे। कहै लाग, "हम रावनु का वहिके सब सहायकन सहित मारि के तिर्कूट परबत का उठाय के हियें लेहे आ सकित है,"

604 जामवंत मैं पूँछउँ तोही। उचित सिखावनु दीजहु मोही॥ 4.30.C10
605 एतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई॥ 4.30.C11
हनुमान जाम्वन्तु ते पूछिन, "तुम हमका उचित सलाह देओ।" तब जामवंत उनते कहिन, "अबै तुम एतनै करौ कि सीता का देखि-सुनि कै उनका समाचार लइ के हियाँ आवौ।"

606 भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि। 4.30a.D1
607 तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥ 4.30a.D2
जो कउनो स्त्री-पुरुस संसार के कस्टन केर अचूक औसधि रघुनाथ के यह जसुगाथा सुनिहैं उनकेर सबै मनोरथ त्रिसिरा के सत्रु राम जी पूरन करिहैं।

सुन्दरकाण्ड

608 जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए॥ 5.1.C1
609 तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई॥ 5.1.C2

जामवंत के बचन हनुमान का बहुत नीक लाग औ उनका सुनि के उनके हिरदय का बहुत अनंदु भा। हनुमान सबते कहिन, “जब तक हम लौटि के न आ जाई तब तक तुम सब पंचे कंद, मूल, फल खाय के हियाँ हमार परतीच्छा कीन्ह्यो।”

610 बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी॥ 5.1.C6
611 जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता॥ 5.1.C7

फिरि बार-बार रघुबीर का सुमिरन कइ के पवनसुत बहुत बल लगाय के बड़े जोर ते उछरे। उइ जउने परबत पर पाँव टिकाय के जोर लगाइन वह तुरतै पताल लोक का चला गा।

612 जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना॥ 5.1.C8
613 जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी॥ 5.1.C9

जउनी तना रघुनाथ के अमोघ बान आगे बढ़त हैं वही तना हनुमान आगे बढ़े। सागर हनुमान का रामदूत जानि के मैनाक परबत से कहिस कि तुम जाय के उनकी थकान हरि लेओ।

614 हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम। 5.1.D1
615 राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम॥ 5.1.D2

हनुमान ओहिकर बात राखे के तईं वहिका छुई के परनाम कइ लिहिन मुला रुके नाहीं, बोले, “राम केर काजु कीन्हें बिना हमका बिसराम कहाँ?”

616 जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा॥ 5.2.C1
617 सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता॥ 5.2.C2

जब देउता होर हनुमान का जात देखिन तौ उनकी बल-बुद्धि के परीच्छा ले खातिर सांपन केर महतारी सुरसा का भेजिन, वह हनुमान के लगे जाय के बोली,

618 आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा। सुनत बचन कह पवनकुमारा॥ 5.2.C3
619 राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं॥ 5.2.C4
"आज देउता हमरे बरे अहार भेजिन हवै एतना सुनते हनुमान कहिन, "हम राम का काजु कइ के सीता के समाचार राम का दइ के लउटि के तुमरे लगे आइत है तब तुम हमका आपन आहार बनायो।"

620 तब तव बदन पैठिहउँ आई। सत्य कहउँ मोहि जान दे माई॥ 5.2.C5
621 कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना॥ 5.2.C6
"तब हम खुदै तुम्हार अहार बने खातिर तुम्हरे मुंहे मां बइठ जइबे मुला अबहीं हमका जाय देओ, हे माता! हम तुमते सत्य बचन कहित है।" जब कउन्यू तरा वह हनुमान का जाय नहीं दिहिस तब हनुमान ओहिते कहिन, "तौ फिरि तुम हमका खाइन काहे नाही लेत्यु?"

622 जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा॥ 5.2.C7
623 जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा॥ 5.2.C9
तब उनका ग्रसे के खातिर सुरसा आपन मुख जोजन भर फइलाइस, हनुमान आपन बिस्तार ओहिते दुगुन कइ लिहिन। सुरसा जस-जस आपन मुख बढ़ावे हनुमान अपना का ओहते दुगुन रूप देखावत जाएँ।

624 सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा॥ 5.2.C10
625 बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मागा बिदा ताहि सिरु नावा॥ 5.2.C11
यही तना बाढ़त-बाढ़त सुरसा आपन मुख सौ जोजन का कइ लिहिस। यह देखतै हनुमान अपना का बहुते छोट रूप मां लइ आये। उइ सुरसा के मुख मां गे तौ, मुला तुरतै बाहर निकसि आये अउर सीस झुकाय के सुरसा ते बिदा मांगि लिहिन।

626 राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान। 5.2.D1
627 आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान॥ 5.2.D2

सुरसा कहिस, "तुम बल-बुद्धि के निधान हौ, तुम राम काज का पूरा करिहौ। अस आसिरबादु दइ कै सुरसा चलि गै औ आसिरबादु पाय के हनुमानौ हर्सित होई के चलि परे।

628 निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभु के खग गहई॥ 5.3.C1
629 सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा॥ 5.3.C4

वेह समुद्र मां एक राच्छसी रहत रही, वह अकास ते उड़त भये पंछिन का अपनी माया के बल ते उनकी छाया ते उनका पकरि लेत रही, वाहै छलु वह हनुमानौ के साथै करिस मुला हनुमान तुरतै वहिकेर छलु समझि गे।

630 ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा॥ 5.3.C5

तब धीर बुद्धि वाले बीर हनुमान वहिका मारि के समुद्दर के पार पंहुचि गे।

631 मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी॥ 5.4.C1
632 नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी॥ 5.4.C2

फिरि हनुमान मच्छर की तरा छोट रूप धरि के, प्रभु का सुमिरिनि औ लंका चलि परे। हुवां उनका लंकिनी नाम केर याक निसिचरी मिली औ उनते कहिस, "हमका बराय के कहाँ जात हौ?"

633 मुठिका एक महा कपि हनी। रुधिर बमत धरनीं ढनमनी॥ 5.4.C4
634 पुनि संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि कर बिनय ससंका॥ 5.4.C5

हनुमान वहिका याक मुक्का धरिन जेहिते वह रुधिर का बमन करत भै धरती मां लुढ़कि परी। फिरि सम्भारि के उठी औ हाथ जोरि के डेरात-डेरात हनुमान केरि बिनती करै लाग।

635 जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा॥ 5.4.C6
636 बिकल होसि तैं कपि के मारे। तब जानेसु निसिचर संघारे॥ 5.4.C7

"जबु ब्रम्हा जी रावन का बरु दिहिन रहैं तौ चलत चलत हमते संकेत कइ दिहिन रहैं कि जब तुम बानर के मारे ते बिकल होई जायो तौ जानि लिह्यो कि निसचरन केर नास होय वाला हवै।"

637 तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग। 5.4.D1
638 तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥ 5.4.D2

आगे कहिस, "हे तात! सरग औ मोच्छ के सुखन का तराजू के याक पलड़ा मां धरा जाय औ दुसरे मां संतन के संगत से मिलै वाले एकु छिन के सुख का धरा जाय तौहों उइ दुनो मिली के सतसंगत के एक छिन के बराबरी न करे पइंहैं।"

639 प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥ 5.5.C1
640 अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना॥ 5.5.C4

"तुम हिरदय मां कोसलराज केर ध्यान कइ के लंका नगरी मां प्रबेस करौ।" तब हनुमान एकदम नान केर रूप धरिन औ भगवान का सुमिरि के नगर मां घुसि गे।

641 गयउ दसानान मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं॥ 5.5.C6
642 सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही॥ 5.5.C7

हुवां उइ दसानन के महल मां गे जेहिकेर बिचित्रता का बरनन करत नाहीं बनत, हुवां उइ रावन का स्वावत देखिन मुला सिया हुवां ना देखा परीं।

643 भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा॥ 5.5.C8

फिरि उनका एक बहुत नीक भवन देखा परा, जेहिमां भगवान केर मंदिरौ बना रहा।

644 रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ। 5.5.D1
645 नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ॥ 5.5.D2

वे भवन मां राम के आयुधन के चिन्ह अंकित रहैं जिनके सोभा का बरनन नाहीं कीन जाय सकत। वहिके साथै तुलसी केर नयी-नयी पौध देखि के हनुमान जी केर जिउ हर्सित होई गा।

646 मन महुँ तरक करैं कपि लागा । तेहीं समय बिभीषनु जागा ॥ 5.6.C2
647 राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा । हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥ 5.6.C3
उइ मनु मां बिचारत रहें कि वही समय बिभीसन जागि परा औ जगतै वा राम-राम का सुमिरन कीन्हिस। लंका मां अइसे सज्जन का पाय के हनुमान बहुत हर्षित भे।

648 तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखी चहउँ जानकी माता ॥ 5.8.C4
649 जुगुति बिभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥ 5.8.C5
सज्जन का चीन्हि के हनुमान ओहिते कहिन, "हे भैया सुनौ! हम सीता मइया का देखा चहित है।" तब बिभीसन उनका सब जुगत बताइन औ हनुमान उनते बिदा मांगि के चलि परे,

650 करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । बन असोक सीता रह जहवाँ ॥ 5.8.C6
उइ फिरि ते वहै छोट रूप लइ लिहिन औ असोक बन मां पहुँचि गे जहां सिया रहीं।

651 निज पद नयन दिएँ मन राम पद कमल लीन । 5.8.D1
652 परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥ 5.8.D2
सिया के नयन अपने चरनन मां मुला मनु राम के चरन कमलन मां लीन रहा, जानकी का अइसी दीन अवस्था मां देखि के पवनसुत बहुत दुखी भे।

653 तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ बिचार करौं का भाई ॥ 5.9.C1
654 तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । संग नारि बहु किएँ बनावा ॥ 5.9.C2
तब उइ बिरवा के पातन मां लुका के स्वाचे लाग कि का कीन जाय? ओत्तिही बेरिया रावन हुवां आवा जेहिके संगे बहुत सारी मेहरिया रहीं जउन बिचित्तर बनाव सिंगार कीन्हें रहीं।

655 बहु बिधि खल सीतहि समुझावा । साम दान भय भेद देखावा ॥ 5.9.C3
656 कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ॥ 5.10.C8

वह दुष्ट समुझाय के, लालच देखाय के, डेरवाय के अउर भेद पइदा कइ के सीता का समुझावै लाग। जात-जात सब राच्छसिन का बोलाय के कहिस, "सीता का डेरवा के, धमका के कउन्यू तरा समझायो।"

657 देखि परम बिरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥ 5.12.C12
सीता का बिरह मां एतना ब्याकुल देखि के हनुमान का वह छिन कलप के समान लाग।

658 कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब । 5.12.S1
659 जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥ 5.12.S2
तब अपने हिरदय मां बिचार कइ के राम केर मुद्रिका उनके आगे डारि दिहिन। सीता का लाग कि असोक जानौ उनका अंगार दइ दिहिस, याहे सोचि के उइ वहिका हाथन ते उठा लिहिन।

660 तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥ 5.13.C1
तब सिया वा मनोहारी मुद्रिका देखिन जेहिमां राम केर सुन्दर नाम अंकित रहा।

661 राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुनानिधान की ॥ 5.13.C9
662 यह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥ 5.13.C10
तबहीं हनुमान उनते आपन परिचय दिहिन, "हे माता! हम करुनानिधान राम केर सपथ खाई के सत्य कहित है कि हम राम के दूत अहिन औ यह मुद्रिका हमहीं लायेन है जेहिका श्रीराम चिन्हारी के रूप मां हमका दिहिन रहैं।"

663 हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥ 5.14.C1
664 अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥ 5.14.C3
हनुमान का भगवान का दास जानि के सिया का उनकी कइती गहरी प्रीत भइ, उनकी आँखिन मां जलु भरि आवा औ देही के रोवां चैतन्य होई गे। उइ हनुमान ते कहैं लागीं, "हम तुम पर बारी जाइत है अब तुम हमते बतावौ कि सुखन के धाम सिरी राम अनुज सहित नीकी तना तौ हवैं?"

665 मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता॥ 5.14.C9
666 जनि जननी मानहु जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना॥ 5.14.C10
हनुमान बोले, "हे माता! किरपा के धाम प्रभु अनुज सहित कुसलता ते हैं मुला तुम्हरे दुःख ते तौ दुखिन हवैं। तुम अपने मन का दुखी न करौ, तुम्हरी कइती उनका प्रेम तुमते दुगुना है।"

667 रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर। 5.14.D1
668 अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर॥ 5.14.D2
"हे माता! अब तुम रघुपति केर संदेसु धीरजु धरि के सुनौ" अस कहत-कहत हनुमान जी के आँखिन मां जलु भरि आवा।

669 कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता॥ 5.15.C1
670 तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा॥ 5.15.C6
फिर हनुमान सिया का राम केर संदेस बताइन, "हे सिया! तुम्हरे बियोग मां सब कुछु हमते बिपरीत होई गा है, हमरे तुम्हरे प्रेम का तत्व बस हमार मनुहि जानत है।"

671 सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥ 5.15.C7
672 प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही॥ 5.15.C8
"औ वा मन तौ सदा तुमरेहे लगे रहत है, हमरे प्रेमु का सार तुम एतनेहे मां समझि लेओ" प्रभु केर अस संदेसु सुनि के सिया उनके प्रेम मां मगन होइ गयीं औ उनका अपने तन केर सुध-बुध भुला गै।

673 कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा॥ 5.16.C4
674 निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं॥ 5.16.C5
हनुमान जी उनते कहै लाग, "हे जननी! तुम कुछ अउर दिन धीरज धारे रहौ, रघुबीर कपिन्ह के साथे हियाँ अइहैं औ सब निसचरन का मारि के तुमका हियाँ ते लइ जइहैं। तब उनके जसु का नारद आदि गाय-गाय के बखान करिहैं।"

675 आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना । होहु तात बल सील निधाना ॥ 5.17.C2
676 अजर अमर गुननिधि सुत होहू । करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥ 5.17.C3
सिया हनुमान का राम का प्रिय जानि के बहुत असीस दिहिन, "हे तात! तुम सदा के बरे बलु औ सील के निधान होइ जाओ। तुम सदा-सदा के बरे अजर-अमर होई जाओ, अउर रघुकुल के नायक राम तुम पर आपनि किरपा बनाये राखैं।"

677 अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥ 5.17.C6
678 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥ 5.17.C7
यह सुनि के हनुमान बोले, "हे माता! अब हम किरतारथ भएँन, काहे ते कि बिस्व बिख्यात हवैं कि तुम्हार आसिरबादु अमोघ होत है। हे माता! अब सुनौ हियाँ के बिरवन मां सुन्दर फल देखि के हमका भूख लागि आइ हवै।"

679 देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु । 5.17.D1
680 रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥ 5.17.D2
उनका बल औ बुद्धि मां चतुर समझि के जानकी उनते कहिन, "हे तात! रघुबर के चरनन का अपने हिरदय मां राखि के तुम ई मीठे फलन का खाय के आपन भूख मिटाओ।"

681 चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥ 5.18.C1
यहि तरा सीता का सीस नवाय के हनुमान बगिया मां प्रबेस कइ के फल खाय लाग अउर बिरवन का त्वारै लाग।

682 सुनि रावन पठए भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥ 5.18.C5
683 सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥ 5.18.C6
यह समाचार जानि के रावन नाना परकार के जोधन का पठइस, उनका देखतै हनुमान गर्जना किहिन। सबै निसाचरन का हनुमान के द्वारा संघार कइ दीन गवा मुला कुछु अधमरी अवस्था मां रावन के लगे पुकारत भये जाय पहुंचे।

684 पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥ 5.18.C7
685 आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥ 5.18.C8

उनकेर दसा देखि के रावन अपने पुत्र अच्छ कुमार का पठइ दिहिन, वह अपार बल वाले जोधन का अपने संग लइ के चला। उनका आवत देखि के हनुमान एक बड़ा केर बिरवा उखारिन औ घोर गर्जना कइ के वहिते उन पंचेन के ऊपर बार किहिन।

686 चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा॥ 5.19.C3
687 उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजन जाया॥ 5.19.C9
भाई अच्छकुमार का मरब सुनि के अतुलित बल वाले इन्द्रजीत क्रोध ते भरि उठे औ युद्ध खातिर चलि परे, हुवां जाय के उइ बहुत प्रकार के माया रचिन मुला पवन पुत्र हनुमान का जीति नहीं सके।

688 ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार। 5.19.D1
689 जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार॥ 5.19.D2
तबु मेघनाद ब्रह्मास्त्र का संधान किहिन, हनुमान मन मां बिचार किहिन कि जौ हम ब्रह्मास्त्र का मानु न धरेन तौ येहिकेर महिमा मिटि जाई, याहे सोचि के उइ ब्रम्हास्त्र के आगे मुर्छित होई गे।

690 तेहिं देखा कपि मुरुछित भयउ। नागपास बाँधेसि लै गयउ॥ 5.20.C2
691 कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेहि बन खीसा॥ 5.21.C1
मेघनाद देखिस कि हनुमान मुर्छित होइ गे हैं तबहूँ वह उनका नागपास ते बांधि कै लइ गवा। दरबार मां पहुंचि के रावन हनुमान ते पूछै लाग, "कै रे बानर! तैं को आय? औ केहि का बलु पाय के तू बन मां अस ऊधम मचाईस है कि वाहिका उजार डारिस?

692 सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचति माया॥ 5.21.C4
693 जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा॥ 5.21.C5
694 खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली॥ 5.21.C9
तब हनुमान कहिन, "रावण! सुनौ जेहिका बलु पाय के माया सगरे ब्रह्मांडन का रचत अउर चलावत है औ जेहिके बल ते ब्रम्हा, बिस्नु, महेस यह सृष्टी का सिरजत, पालत औ संघार करत हैं, जो खर, दूसन, त्रिसिरा, बाली जइसे जोद्धन का बध किहिन हैं।"

695 जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि। 5.21.D1
696 तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि॥ 5.21.D2

"जिन्ह के बल का लेस भर पाय के तुम सगरे चराचर जगत का जीति लिन्ह्यो है; जिनकी पत्नी का हरि कै लै आयो है, हम उनही रामचंदर के दूत अहिन।"

697 बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन॥ 5.22.C7
698 राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू॥ 5.23.C1

"हे रावन! हम तुमते हाथ जोरि के बिनती करित है कि तुम आपन घमंडु त्यागि के हमार सीख मानि लेयो। सिरी राम के चरनन मां आपन हिरदय धरि के तुम लंका पर अचल राज करौ।"

699 सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना॥ 5.24.C5
700 सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए॥ 5.24.C6

हनुमान के बचन सुनि के रावन बहुत खिसयाय गवा अउ अपने लोगन ते कहिस, "येह मूरख के परान तुरतई काहे नाहीं हरत हौ?" एतना सुनत निसाचर उनका मारे का दउरि परे। तबहिन बिभीसन अपने मंत्रिन के साथे पहुंचि गे।

701 नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिअ दूता॥ 5.24.C7
702 सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठइअ बंदर॥ 5.24.C9

सीस नवाय के बहुत बिनीत भाव ते बोले, "दूत का मारब नीति के बिरुद्ध है।" यह सुनि के रावण हंसि के बोला, "तौ ठीक है फिर यहि बानर का अंग भंग कइ के पठय देयो।"

703 कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ। 5.24.D1
704 तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ॥ 5.24.D2

"हम सबु ते समझा के कहित है कि बानर का आपनि पूंछ बहुत प्रिय होत है याहि बरे एह्की पूंछ मां तेल मां भिगोय के कपड़ा बांधौ फिर वहिमां आगी लगा देयो।"

705 पावक जरत देखि हनुमंता। भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥ 5.25.C8
706 जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला ॥ 5.26.C2
हनुमान जब अपनी पूंछ मां आगी बरत देखिन तौ तुरतै अत्यंत छोट रूप लइ के कूदि-कूदि के सगरे नगर मां आगी लगाय दिहिन, देखते द्याखत आगी केरी करोड़न लपटें फइल गयीं।

707 जारा नगरु निमिष एक माहीं। एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥ 5.26.C6
708 उलटि पलटि लंका सब जारी। कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥ 5.26.C8
निमिस भरे मां पूरा नगर जार डारिन बस याक बिभीसन केर घर बचा रहा। जब उलटि-पलटि के सगरी लंका का जरा दिहिन तौ समुद्र मां जाई के कूदि परे।

709 पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि। 5.26.D1
710 जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ 5.26.D2
समुद्र मां पूंछ बुझाय के, आपन थकान दूरि कइ के, छोट रूप लिहिन औ जानकी के आगे हाथ जोरि के ठाढ़ होई के कहै लाग,

711 मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा। जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा ॥ 5.27.C1
712 चूड़ामनि उतारि तब दयऊ। हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥ 5.27.C2
"हे माता! तुमहूँ हमका आपन कउनो चिन्हारी देयो जइसे रघुनायक चलत बेरिया हमका दीन्हिन रहैं।" तब सीता उनका आपन चूड़ामणि उतार के दिहिन जेहिका पवनसुत हरसि के लइ लिहिन।

713 कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥ 5.27.C3
714 दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी ॥ 5.27.C4
सिया हनुमान ते अस कहिन, "हे तात! प्रभु का हमरी कइती ते परनाम करि के कह्यो-प्रभु तौ सब प्रकार ते पूरनकाम हैं तबहूँ दीनन पर दया करब उनकेर जस आय येहि कारन ते उइ हमरेयो संकट का दूरि करैं।"

715 जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह । 5.27.D1
716 चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥ 5.27.D2
सीता का बहुत तरा ते समुझाय-बुझाय के हनुमान उनका धीरज देवाइन अउर फिर उनके चरनन मां सीस नवा के राम कइती पयान कइ दिहिन।

717 पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥ 5.30.C6
718 सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥ 5.30.C7
पवनपुत्र के सब सुन्दर चरित्र जामवंत के दुआरा राम का सुनाय गे, वह सब बरनन किरपा सागर राम के मन का एतना सोहान कि उइ हर्षित होई के हनुमान का हिरदय ते लगा लिहिन।

719 चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥ 5.31.C1
720 सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥ 5.31.C9
तब हनुमान उनका चूड़ामणि देखाइन कि या चलत बेरिया सीता माता उनका दिहिन रहे वै चूड़ामणि का लइ के राम हिरदय ते लगा लिहिन। हनुमान यहो कहिन, "सीता केरी बिपति एतनी बड़ी है कि वहिके बारे मां कुछु न कहा जाय वहै भल है।"

721 तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा। कहा चलैं कर करहु बनावा ॥ 5.34.C6
722 चला कटकु को बरनैं पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥ 5.35.C8
तब रघुपति बानर राज का बोलवा के कहिन, "अब परस्थान के तैयारी करौ।" अग्या होते अस बिसाल सेना चलि परी जेहिका बरनन करब कठिन है। बानर औ भालुन के अपार गर्जना होय लाग।

723 एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर। 5.35.D1
724 जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥ 5.35.D2
यहि तरा किरपानिधान राम सागर के किनारे जाय अटे। बीर भालू अउर बानर के बिपुल संख्या जहां-तहां फल खाय मां जुटि गै।

725 उहाँ निसाचर रहहिं ससंका। जब तें जारि गयउ कपि लंका ॥ 5.36.C1
726 अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥ 5.38.C2

हुवां लंका मां जब ते हनुमान आग लगाय के गे तब ते निसाचर होरेन के मन मां संका ब्याप्त होई गै। समय के जरुरत समझि के बिभीसन रावन के लगे आय के उनका सीस नवाइस।

727 तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला॥ 5.39.C1
728 देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही॥ 5.39.C6

रावन ते बोले, "हे तात! राम का खाली राजा न जानौ, उइ सब भुवन के स्वामी औ कालौ के काल अहिं। हे नाथ तुम उनका बैदेही लउटा देयो। उइ बिना कारन सनेह करे वाले अहिं येहिते उनही का भजो।"

729 सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई॥ 5.41.C2
730 अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा॥ 5.41.C6

एतना सुनतै रावण रिसाय उठा अउर बोला, "रे दुष्ट! लागत है तोहार मृत्यु निकट आय गई है।" अस कहि के वह बिभीसन पर चरन ते प्रहार करिस। तबहूँ बिभीसन बार-बार वहिके चरनन का पकरि-पकरि के समझावत रहे।

731 रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि। 5.41.D1
732 मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि॥ 5.41.D2

अंत मां बिभीसन का कहे का परा, "राम तौ सत्य संकलप प्रभुहि अहिं, लागत है तुम्हरी सभा काल के बसु मां है यही बरे अब एहका त्यागि के रघुबीर की सरन मां जा रहेन हैं अबु कोऊ हमका दोसु न दीन्ह्यो।"

733 श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर। 5.45.D1
734 त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर॥ 5.45.D2

सिरी राम के पास जा के बिभीसन बोला, "हे परभु! तुम भव-भय का नास करे वाले हौ, तुम्हार जसु सुनि के हम तुम्हरी सरन मां आय गयेन हवै। हे दुखियन के दुखन का हरे वाले! सरनागत का सुख दे वाले!! सिरी रघुबीर हमरी रच्छा करो!!!"

735 सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ॥ 5.48.C1
रामचंदर बिभीसन ते बोले, "हे सखा! हम तुम ते आपन सुभाव कहित है जेहिके बारे मां कागभुसुंडी, संभु अउर पारबतियु जनती हैं।"

736 जौं नर होइ चराचर द्रोही। आवै सभय सरन तकि मोही॥ 5.48.C2
737 तजि मद मोह कपट छल नाना। करउँ सद्य तेहि साधु समाना॥ 5.48.C3
"चाहे कउनो नर सकल बिस्व मां जड़-चेतन का द्रोही काहे न होय मुला भयभीत होई के हमरी सरन मां आवत है, आपन मद, मोह, छलु, कपटु नाना परकार के दोसन का तजि देत है, तौ हम वहि का तुरतै साधू के समान कइ देइत हवे।"

738 अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा॥ 5.49.C10
739 सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा॥ 5.50.C5
अस कहत भये राम बिभीसन केर राजतिलक कइ दिहिन, यह देखि के आकास ते पुष्पन के अपार बरसा भयी। तब राम यहि तरा बोले, "हे सुग्रीव! औ हे लंकापति बिभीसन! एहि गहरे सागर का कउनि बिधि ते पार कीन जाय?"

740 कह लंकेस सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु सोषक तव सायक॥ 5.50.C7
741 जद्यपि तदपि नीति असि गाई। बिनय करिअ सागर सन जाई॥ 5.50.C8
तब लंकेस बिभीसन बोले, "हे रघुनायक! सुनौ, जबकि तुम्हार एकुई बान अइसे करोड़न समुद्दर का सोखि सकत है तबहुं नीति के अनुसार सागर तेना मार्ग दे के खातिर बिनती करेक चही।"

742 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई॥ 5.51.C7
उनकेर सलाह मानि के राम पहिले तो सागर का सीस नवाय के परनाम करिन फिर वहिके तट पर कुसा बिछाय के बइठ गे।

743 बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति। 5.57.D1
744 बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति॥ 5.57.D2
राम का बिनती करत तीनि दिन बीति गे तबहूँ समुद्दर उनके बिनय पर ध्यान नहीं दिहिस तब राम क्रोध मां भरि के बोले, "लागत है भय के बिन प्रीत न होइ।"

745 अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा॥ 5.58.C5
746 संधानेउ प्रभु बिसिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला॥ 5.58.C6
अइस कहि के रघुपति धनुस पर चाप चढ़ाइन, या बात लछिमन के मन का बहुत भायी। प्रभु के भयंकर बान के धनुस पर संधान होतै समुद्र की गहराई मां आगी के लपट उठै लागि।

747 कनक थार भरि मनि गन नाना। बिप्र रूप आयउ तजि माना॥ 5.58.C8
748 सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥ 5.59.C1
तब समुद्र आपन अभिमान त्यागि के, बिप्र का रूप धरि के सोने के थारन मां नाना परकार के मनी आदि लइ के प्रस्तुत भा। भय के साथ वह प्रभु के चरनन का पकरि लिहिस औ कहै लाग, "हे नाथ! मोरे सब अवगुनन का छमा कइ देयो।"

749 नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाईं रिषि आसिष पाई॥ 5.60.C1
750 तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥ 5.60.C2
"हे नाथ! तुमरी सेना मां नल औ नील नाम के दुई भाई हैं, जिनका लरकपन मां रिसिन ते अस आसिरबादु मिला रहै कि भारी ते भारी परबत-पाथर उनके छुए ते समुद्र मां तइरे लगिहैं।"

751 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहउँ बल अनुमान सहाई॥ 5.60.C3
752 एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ। जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ॥ 5.60.C4
"हमहूँ तुम्हरी प्रभुता का मन मां धारि के अपने बल भर सहायता प्रदान करिबे। हे नाथ! यहि बिधि ते सागर का बाँधा जाय, जेहिका सुजसु तीनों लोकन मां गावा जाई।"

753 सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान। 5.60.D1
754 सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान॥ 5.60.D2
रघुनायक का यह गुनगान सब परकार के मंगल का करे वाला है, जो कोऊ एहिका आदर सहित सुनी वह येह भवसागर का बिना जहाज के पार होइ जाइ।

लंकाकाण्ड

755 सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ । 6.0b.S1
756 अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु ॥ 6.0b.S2

सागर के बचन सुनि के राम अपने मंत्रिन का बोलाय के अस कहिन, "अब कउनी बात का बिलम्ब है? पुल का बनवावा जाय जेहिते सेना वहि पार उतरि सके।"

757 अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाइ । 6.1.D1
758 आनि देहिं नल नीलहि रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ 6.1.D2

भालू और बानर बड़े-बड़े परबत औ बिरवा खेलै- खेल मां उखार-उखारि के नल और नील का दे लाग। जिन्ह ते नल नील सेतु रचि डारिन।

759 देखि सेतु अति सुंदर रचना । बिहसि कृपानिधि बोले बचना ॥ 6.2.C2
760 करिहउँ इहाँ संभु थापना । मोरे हृदयँ परम कलपना ॥ 6.2.C4

सेतु के सुन्दर बनावट देखि के किरपानिधि राम हंसि के बोले, "मोरे मन मां अस संकल्प आवा है कि हम हियाँ पर संभु के स्थापना करी।"

761 लिंग थापि बिधिवत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥ 6.2.C6
762 जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ॥ 6.3.C1

तब राम सिउ लिंग कै अस्थापना करिन, बिधिवत ओहिका पूजन किहिन औ अस बचन कहिन्, "हमका सिव के समान कोऊ दूसर प्रिय नाहीं है यहि बरे जो कोऊ भी इन रामेसुर का दरसन करिहैं उइ देह त्यागै के बाद हमरे लोक मां जइहैं।"

763 सेन सहित उतरे रघुबीरा। कहि न जाइ कपि जूथप भीरा ॥ 6.5.C2
764 सुनत श्रवन बारिधि बंधाना । दस मुख बोलि उठा अकुलाना ॥ 6.5.C10

सेना के सहित रघुबीर सागर पार उतरि गे। बानर सेना औ सेनापतिन के अस भीर भयी के जेहिका बरनन करब कठिन है। समुद्र पर पुल बाँध लेवे का समाचार सुनि के दसानन अकुलाय के कहि उठा।

765 बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस। 6.5.D1
766 सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस॥ 6.5.D2

"का सच्चे मां बननिधि, नीरनिधि, जलधि, सिन्धु, बारीस, तोयनिधि, कंपति, पयोधि औ नदीस कहे जाय वाले सागर का बाँधि लीन गवा है?"

767 मंदोदरीं सुन्यो प्रभु आयो। कौतुकहीं पाथोधि बँधायो॥ 6.6.C2
768 तासु बिरोध न कीजिअ नाथा। काल करम जिव जाकें हाथा॥ 6.6.C9

मंदोदरी जब सुनिन कि राम आय गे हैं अउर खेलुइ-खेल मां सागर पर पुल बंधवा लिहिन हैं तब वह रावन का समझावै लाग, "जिनके बस मां काल, कर्म औ जीव तीनौ हैं उनका बिरोध तजि देयो।"

769 तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता। जो कर्ता पालक संहर्ता॥ 6.7.C4
770 सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना। जग जोधा को मोहि समाना॥ 6.8.C2

"हे स्वामी! तुमहूँ उनका भजन करौ जो सब ही का उत्पन्न करै वाले, पालन करै वाले औ संहार करै वाले हैं।" तब रावन कहिस, "हे प्रिया! तुम ब्यर्थ भयभीय हौ, येहि जगत मां मोरे समान बीर बलवान जोद्धा को है?"

771 इहाँ प्रात जागे रघुराई। पूछा मत सब सचिव बोलाई॥ 6.17.C1
772 मंत्र कहउँ निज मति अनुसारा। दूत पठाइअ बालिकुमारा॥ 6.17.C4

अइसी सबेर होतै जब रघुनाथ जागे तौ सब मंत्रिन का बोलाय के उनके साथ मंत्रणा किहिन औ उनकेर बिचार पूछिन। तब जामबंतु कहिन, "हमरी समझ ते पहिले बालिकुमार अंगद का दूत के रूप मां भेजेक चही।"

773 बालितनय बुधि बल गुन धामा। लंका जाहु तात मम कामा॥ 6.17.C6
774 बंदि चरन उर धरि प्रभुताई। अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई॥ 6.18.C1

तब रामचंदर बालिकुमार अंगद ते कहिन, "हे बालिपुत्र! बल, बुद्धि, गुनन के निधान, तात! तुम हमरे येहि कामे खातिर लंका जाओ।" तब अंगद राम के चरनन मा बंदन कइ के, अपने हिरदय मां उनकी प्रभुता धरि के औ सबका सीस नवाय के चलि परे।

775 गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज । 6.18.D1
776 सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज ॥ 6.18.D2
राम के चरन-कमल का सुमिरन कइ के अंगद रावन के दरबार मां पहुंचे। हुवां ठाढ़ होइ के उइ धीर-बीर बलवान अंगद, सिंह की तना अइसी-वइसी द्याखे लाग।

777 कह दसकंठ कवन तैं बंदर । मैं रघुबीर दूत दसकंधर ॥ 6.20.C1
778 अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा । सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा ॥ 6.20.C6
दसकंठ उनते पूछिस, "रे बानर तू को आय?" अंगद बोले, "रावण! हम राम के दूत अहिन। अब तुम हमते अपनी भलाई करे वाली बात सुनौ वहिते तुम्हार भला होई अउर प्रभु राम तुमरे सब अपराधन का छमा कइ द्याहें।"

779 दसन गहहु तृन कंठ कुठारी । परिजन सहित संग निज नारी ॥ 6.20.C7
780 सादर जनकसुता करि आगें । एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागें ॥ 6.20.C8
"तुम अपने दांतन मां तिनका दबाय ल्यो, कंठ मां कुठार पहिर ल्यो, अपने सब जनेन औ जनिन का साथे लइ ल्यो, फिर सिया का आदर सहित आगे कइ के सब भय त्यागि के हमरे साथै आत्मसमर्पन का चलो।"

781 रे कपिपोत बोलु संभारी । मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ॥ 6.21.C1
या सुनतै रावन क्रोध मां भरि के बोला, "रे बानरपूत! संभरि के ब्वालो। अरे मूरख! का तुम जानत नाहीं हौ कि हम देउतन के सत्रु अहिन?"

782 पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा । गाल बजावत तोहि न लाजा ॥ 6.33.C3
783 रे त्रिय चोर कुमारग गामी । खल मल रासि मंदमति कामी ॥ 6.33.C5
तब जुबराज अंगद क्रोध के साथ बोले, "अरे, स्त्री चोरि के कुमारग पर चले वाले दुष्ट और पाप केरी खान, मंदबुद्धि, कामी पुरुस! तुमका गाल बजावत लाजौ नाहीं आवत?"

784 सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहिं एक सर । 6.33a.S1
785 बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़ ॥ 6.33a.S2

"रे दसकंध! जो बाली का एकुई बान ते बध कइ दिहिन उनका तुम नर समझि रहे हौ? रे बीस आँखिन वाले आंधर! तुम जड़बुद्धि, कुजाति हौ तुम्हरे जीवन का धिकार हवे।"

786 समुझि राम प्रताप कपि कोपा। सभा माझ पन करि पद रोपा॥ 6.34.C8
787 जौं मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी॥ 6.34.C9
फिरि प्रभु सिरी राम के परताप का सुमिरि के अंगद रावण की सभा बीच परन ठानि के आपन पद रोपि के अस चुनौती दिहिन, "रे मूर्ख! जो कोऊ हमार चरनौ डिगा सका त हम परतिज्ञा करित है कि राम लउटि जइहैं हम कहि देब कि हम सीता का हारि आयेन हैं।"

788 झपटहिं करि बल बिपुल उपाई। पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई॥ 6.34.C12
789 कपि बल देखि सकल हियँ हारे। उठा आपु कपि कें परचारे॥ 6.35.C1
अनेक राच्छस झपटि-झपटि के आपन बल अउर उपाय लगावै लाग कि कउन्यू तरा अंगद का पाँव हिलि सकै मुला पद टारे न टरा औ सब खिसियाय-खिसियाय के अपनी जगह मां लउटि के सर झुकाय के बइठे लाग। कपि केर बल देखि-देखि के सब निसाचर जब हार मानि लिहिन तब अंगद का पछारे खितिर रावन खुदै ठाढ़ भा।"

790 गहत चरन कह बालिकुमारा। मम पद गहें न तोर उबारा॥ 6.35.C2
791 गहसि न राम चरन सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई॥ 6.35.C3
रावण के प्रयास करतेहे अंगद बोले, "हमरे पाँव परे ते तुम्हार उद्धार न होई। रे सठ! जाय के राम के चरन काहे नाहीं पकरि लेत हौ?" यह सुनि के रावन खिसिया गा औ मनुहि-मन मां सर्मिन्दा भा।

792 रिपु बल धरषि हरषि कपि बालितनय बल पुंज। 6.35a.D1
793 पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज॥ 6.35a.D2
यही तरा सत्रु के बल का मरदन कइ के बलसाली बानर अंगद प्रसन्न अवस्था मां आय के राम ते मिले। पुलकित सरीर औ नैनन मां जल भरे उइ राम के चरन पकर लिहिन।

794 रिपु के समाचार जब पाए। राम सचिव सब निकट बोलाए ॥ 6.39.C1
795 लंका बाँके चारि दुआरा। केहि बिधि लागिअ करहु बिचारा ॥ 6.39.C2
अंगद के द्वारा रावन के दरबार का सब हाल सुनि के राम सब सचिवन का अपने लगे बोलावाय के सलाह करे लाग, "लंका मां घुसे के चार बांके दुआर हवैं, उन पर कउनी तरा सेना का लगाव जाय? यहि पर सब जने बिचार करौ।"

796 करि बिचार तिन्ह मंत्र दृढ़ावा। चारि अनी कपि कटकु बनावा ॥ 6.39.C4
797 हरषित राम चरन सिर नावहिं। गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिं ॥ 6.39.C7
सब जने बिचार-बिमर्स, मंत्रना-निश्चय कइ के कपि सेना के चार दलु बनाइन। सब बीर हर्षित होई के रामचंदर का सीस नवाय के पर्बतन के सिखर लइ-लइ के दउर परे।

798 राम प्रताप प्रबल कपिजूथा। मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा ॥ 6.42.C1
799 निज दल बिचल सुनी तेहिं काना। फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥ 6.42.C6
राम का बल पाय के बलसाली भये बानर निसाचरन के झुण्ड के झुण्ड मसल डारिन। जब रावन सुनिस कि ओहिकेर सेना बिचलित होई के रन ते भागि रही है तौ वह क्रोध कइ के सबका लरे खातिर वापस लउटा दिहिस।

800 निसिचर अनी देखि कपि फिरे। जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥ 6.46.C5
801 कोपि कपिन्ह दुर्घट गढ़ु घेरा। नगर कोलाहलु भयउ घनेरा ॥ 6.49.C9
राच्छसन का आवत देखि के कपि फिर लउटि परे औ जाय के जहां-तहां कटकटाय के उनते भिरि गे। गुस्साए बानर दुरगम किला का घेर लिहिन जेहिते नगर मां मार कोलाहल मचि गवा।

802 मेघनाद सुनि श्रवन अस गढ़ु पुनि छेंका आइ। 6.49.D1
803 उतर्यो बीर दुर्ग तें सन्मुख चल्यो बजाइ ॥ 6.49.D2
जब मेघनादु सुनिन कि दुर्ग का घेर लीन गवा है तौ उइ दुर्ग ते उतरे औ डंका की चोट पै सामना करे खातिर आय गे।

804 दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर। 6.50.D1
805 सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बल धीर ॥ 6.50.D2

उइ सबका दस-दस बाणन ते प्रहार करिन जेहिते बड़े-बड़े बीर बानर धरासायी होई गे। आपन बिजय देखि के मेघनाद सिंघ की तरा गरजै लाग।

806 आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ। 6.52.D1
807 लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ॥ 6.52.D2

तब लछिमन राम ते अग्या लइ के अंगद आदि कपिन का साथ किह्ये, क्रोध के साथ हाथ मां धनुस बान लेहे मेघनाद ते युद्ध करे का चलि परे।

808 लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा। भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा॥ 6.54.C2
809 बीरघातिनी छाड़िसि साँगी। तेजपुंज लछिमन उर लागी॥ 6.54.C7

लछिमन औ मेघनाद दुनो जोद्धा बहुते क्रोध के साथ याक दूजे ते भिरि परे। तब मेघनाद अपने का हारत देखि के बीरघातिनी ते लछिमन के ऊपर वार कइ दिहिस, तेज से भरी सकती लछिमन के हिरदय मां जाय के लाग गै।

810 ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर। लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर॥ 6.55.C5
811 तब लगि लै आयउ हनुमाना। अनुज देखि प्रभु अति दुख माना॥ 6.55.C6

अइसी कइती सर्व ब्यापकु, ब्रम्ह, अजित, सब लोकन के स्वामी औ सब पर करुना करे वाले राम, “लखन कहाँ हैं?” अस पूछै लाग, तब तक हनुमान मुर्छित लछिमन का लइ के आय गे। छोट भाई का मूर्छा मां देखि के प्रभु बहुते दुखी भे।

812 जामवंत कह बैद सुषेना। लंकाँ रहइ को पठई लेना॥ 6.55.C7
813 धरि लघु रूप गयउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरंता॥ 6.55.C8

जामवंत कहिन, “लंका मां सुखेन नामक बैद्य राहत है मुला वहिका लेवावै का केहिका पठवा जाय?” तब हनुमान जी लघु रूप धरि के लंका गे और तुरतै भवन समेत सुखेन का उठा के लइ आये।

814 राम पदारबिंद सिर नायउ आइ सुषेन। 6.55.D1
815 कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन॥ 6.55.D2

सुखेन हुवां आय के राम के चरन-कमल मां सीस झुकायन। फिरि औसधि औ कउने परबत पर मिलिहै वे परबतौ का नांव बताय के हनुमान ते कहिन कि तुम वहिका ले खितिन चले जाओ।

816 राम चरन सरसिज उर राखी। चला प्रभंजनसुत बल भाषी॥ 6.56.C1
817 देखा सैल न औषध चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा॥ 6.58.C7
राम के चरन कमल का अपने हिरदय मां धारि के औ सबका संतुस्ट कइ के तेज पवन की गति ते पवनसुत चले गे। सैल पर तो पहुँचि गे मुला हुवां औसधि का न चीन्ह पाए यही बरे एकदम्मे पूरा पहारै उखार डारिन औ लउटि के चलि परे।

818 उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी॥ 6.61.C1
819 जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥ 6.61.C6
वइसी कइती राम लछिमन का निहार-निहार साधारन मानुस की तना दुखी होय के बिलाप करै लाग, "जौ हम जानित कि बनु का गमन भाई ते बिछोह का कारन बनी त हम पिता के बचन मानि के बने न आइत।

820 प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर। 6.61.S1
821 आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस॥ 6.61.S2
प्रभु का करुन बिलाप सुनि के सब बानर बिकल होई गे तबहीं हनुमान हुवां तेज बल के साथ अस पहुंचे कि करुन रस मां बीर रस आय के मिलि गा होय।

822 तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई॥ 6.62.C2
823 यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ॥ 6.62.C5
बैद सुखेन तुरतै लछिमन के उपचार केर सब उपाय करब आरम्भ कइ दिहिन जेहिते थोरिहि द्यार मां लछिमन खुसी-खुसी उठी के बइठ गे। दसानन जब यह खबरि पाइस तौ मारे दुःख के अस बिचलित भा कि आपन मूड़ धुनै लाग।

824 ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा॥ 6.62.C6
825 कुंभकरन दुर्मद रन रंगा। चला दुर्ग तजि सेन न संगा॥ 6.64.C2

यही ब्याकुलता मां अपने छोट भाई कुम्भकरन के लगे गवा औ अनेक परकार के जतन कइ के वहिका जगा के सगरी बात बताइस। कुम्भकरन अपने मद मां डूबा भवा दुर्ग ते निकसि के बिना सेना लीन्हें अकेलेहे जुद्ध खातिर चलि परा।

826 कुंभकरन कपि फौज बिडारी। सुनि धाई रजनीचर धारी॥ 6.67.C7
827 देखी राम बिकल कटकाई। रिपु अनीक नाना बिधि आई॥ 6.67.C8
कुम्भकरन अउते के साथ बानर सेना का छिन्न-भिन्न कइ डारिस। यह देखि-सुनि के निसाचर होरेन केर बल, उत्साह बाढ़ी गवा औ उइ बानर सेना पर टूटि परे। रामु देखिन कि सत्रु की अनेक तरा की सेना आय-आय के उनकी अपईं सेना का छकै दिहिस हैं।

828 तब प्रभु कोपि तीब्र सर लीन्हा। धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा॥ 6.71.C4
829 बहु बिलाप दसकंधर करई। बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई॥ 6.72.C4
तबु राम क्रोध मां भरि के तीव्र बान छांड़ के कुम्भकरन के सिर का धड़ ते अलग कइ दिहिन। कुम्भकरन के सीस का देखि के रावण भाई के सीस का छाती ते लगाय के बिलखि-बिलखि के रोवै लाग।

830 मेघनाद तेहि अवसर आयउ। कहि बहु कथा पिता समुझायउ॥ 6.72.C6
831 देखेहु कालि मोरि मनुसाई। अबहिं बहुत का करौं बड़ाई॥ 6.72.C7
वही लग्गे मेघनादु हुवां आवा औ बहुत परकार ते पिता का समुझावै लाग। और कहिस, "अबहीं हम तुम ते आपनि बड़ाई का करी? तुम कालि जुद्ध मां हमार बीरता देख्यो।"

832 एहि बिधि जल्पत भयउ बिहाना। चहुँ दुआर लागे कपि नाना॥ 6.72.C9
यहि तना आपनि बड़बत्ती हांकत हांकत सबेरु होइ गा। लंका के चरियु कइती के द्वारन पर नाना प्रकार के बानरु जुद्ध की खातिर लागि गे।

833 मेघनाद मायामय रथ चढ़ि गयउ अकास। 6.72.D1
834 गर्जेउ अट्टहास करि भइ कपि कटकहि त्रास॥ 6.72.D2

मेघनाद माया के रथ पर सवार होई के अकास मां चला गा, हुवें ते वह अट्टहास कइ के गरजा जेहिका सुनि के बानर सेना डेरा गे।

835 तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही। देखि सभय सुर दुख अति मोही॥ 6.75.C8
836 जौं तेहि आजु बधें बिनु आवौं। तौ रघुपति सेवक न कहावौं॥ 6.75.C13
तब रघुनाथ लछिमन ते कहिन, "हे लछिमन! आज के जुद्ध मां तुम मेघनाद का बधु अवस्य किन्हयो काहे ते कि देउता होरां का भयभीत देखि के हमका बहुत दुःख है।" यहि पर लछिमन कहिन, "जौ आज हम वहिका बधे बिनु लउटेन तौ अपना का रघुपति का सेवक न कहिबे।"

837 सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा। सर संधान कीन्ह करि दापा॥ 6.76.C15
838 छाड़ा बान माझ उर लागा। मरती बार कपटु सब त्यागा॥ 6.76.C16
कोसलाधीस राम के परताप का सुमिरि के, बीरता के दर्प ते भरि के लछिमन बान का संधान किहिन, छुटतै बान मेघनाद की छाती मां जाय धंसा औ मरती बेरिया वह सब तरा के छलु-कपटु का त्यागि दिहिस।

839 सुत बध सुना दसानन जबहीं। मुरुछित भयउ परेउ महि तबहीं॥ 6.77.C6
840 चलेउ निसाचर कटकु अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा॥ 6.79.C1
जइसेहे रावनु पुत्र का बध सुनिस मुर्छित होइ के धरती पर गिरि परा। सुधि अउतेहे चतुरंगिनी सेना औ अनेक प्रकार के घनघोर सेना का लइ के जुद्ध खितिर चलि परा।

841 इत उत झपटि दपटि कपि जोधा। मर्दै लाग भयउ अति क्रोधा॥ 6.82.C5
842 पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं। यह खल खाइ काल की नाईं॥ 6.82.C7
अइसी-वइसी, सब कइती झपटि-डपटि के बानरन का क्रोध ते मसलै लाग। तब सब बानर ब्याकुल होइ के राम के लगे दुहाई देत पहुंच के कहै लाग, "हे प्रभु! हमार रच्छा करौ यह दुष्ट तौ काल की भांति हम सबका भच्छन कइ रहा है।"

843 बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर। 6.89.D1
844 द्वंदजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति बीर॥ 6.89.D2

तब राम सबकी कइती चितइ के गंभीर बानी मां बोले, "हे बीरों! तुम सब पंचे लरत-लरत थकि चले हौ येहिते तुम सब बइठ के हमार औ रावनु केर द्वन्द जुद्ध द्याखो।"

845 दस दस बान भाल दस मारे । निसरि गए चले रुधिर पनारे ॥ 6.92.C8
846 तीस तीर रघुबीर पबारे । भुजन्हि समेत सीस महि पारे ॥ 6.92.C10

राम दसों मस्तकन पर दस-दस बान मारिन जे सब पार निकरि गे औ रुधिर के पनारा अस बहै लाग। यहि तना राम कुल तीस बान चलाय के रावन के दसों सीस, बीसौ भुजा काट के धरा पे डारि दिहिन।

847 काटत बढ़हिं सीस समुदाई । जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ॥ 6.102.C1
848 मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा । राम बिभीषन तन तब देखा ॥ 6.102.C2

जइसेहे सीस कटत हैं वइसेहे सीसन के परिवार उगि आवत हैं, जइसे लोभी का लाभ पाय के लोभ बढ़त जात है वइसेहे रावन के सीस बाढ़त जात हैं। बहुत स्रम करे के बादौ जब रावन न मरा तौ राम बिभीसन कइती चितइन।

849 उमा काल मर जाकीं ईछा । सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ॥ 6.102.C3
850 नाभिकुंड पियूष बस याकें । नाथ जिअत रावनु बल ताकें ॥ 6.102.C5

संकर जी पारबती ते कहि रहें हैं, "हे उमा! जेहिके इच्छा करैं भर ते कालु मरि जात है उइ प्रभु बिभीसन के प्रेम की परीच्छा ले खातिर अस प्रयासु कइ के देखि रहे हैं।" तब बिभीसन बोला, "हे नाथ! यहिकी नाभि मां अमृत कुंड का बास है वही के बलु ते यह जियत है।"

851 खैंचि सरासन श्रवन लगि छाड़े सर एकतीस । 6.102.D1
852 रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस ॥ 6.102.D2

तब राम धनुस के प्रत्यंचा का काने तक खैंचि के एकतीस बान छारि दिहिन, राम के ई बान अस चले जइसे काल रूपी सर्प होयें।

853 सायक एक नाभि सर सोषा । अपर लगे भुज सिर करि रोषा ॥ 6.103.C1
854 धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा ॥ 6.103.C3

एक बान जाय के नाभि के अमृतकुंड का सुखा दिहिस, बाकी दस सीस औ बीस भुजन मां जाय लगे। रावनु का धड़ प्रचंड वेग ते धरती मां दउरे के कारन धरती धंसै लाग तौ प्रभु बान चलाय के वहिके धड़ के दुई खंड कइ डारिन।

855 गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहाँ रामु रन हतौं पचारी ॥ 6.103.C4
मरत बेरिया रावन घनघोर गर्जना करिस, “कहाँ हवैं राम? अबहीं रन मां उनका पछारि के मारित हन।”

856 तासु तेज समान प्रभु आनन । हरषे देखि संभु चतुरानन ॥ 6.103.C9
857 बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा । जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ॥ 6.103.C11
रावन के सरीर ते निकसा तेज प्रभु के मुख मां समा गा, यह देखि के संभु, ब्रम्हा बड़े प्रसन्न भे। देउता और रिसी होर पुष्पन के बरसा करे लाग और जयघोस करे लाग, “हे मुकुंद भगवान्! तुमरी जय हो! तुमरी हो!!”

858 कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु अभय किए सुर बृंद । 6.103.D1
859 भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकुंद ॥ 6.103.D2
यहि तरा प्रभु अपनी कृपारुपी दृष्टि के बरखा कइ के सब देउता होरेन का निरभय कइ दिहिन। भालू औ बानर सबै बहुत हर्षित भे और सुख के धाम मुकुंद सिरी राम के जय जयकार करै लाग।

860 सब मिलि जाहु बिभीषन साथा । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥ 6.106.C3
861 सादर सिंहासन बैठारी । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥ 6.106.C6
तब रघुनाथ सबते कहिन, “तुम सब पंचे मिलि के बिभीसन के साथै जाओ औ उनका राजतिलक सम्पन करौ ।”सब जने बिभीसन का राज सिंहासन पर बइठार के आदर सहित उनका तिलक कइ के उनकी अस्तुति किहिन।

862 पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥ 6.107.C1
863 समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥ 6.107.C2
तब भगवान राम हनुमान का बोलाय के कहिन, “तुम अब लंका मां जाओ, यह सब समाचार जाय के सीता का सुनावौ औ उन्केरी कुसलता का समाचार लइ के आवौ।”

864 सब बिधि कुसल कोसलाधीसा। मातु समर जीत्यो दससीसा॥ 6.107.C7
सीता के लगे जा के हनुमान बोले, "हे माता! कोसलाधीस सब तना ते कुसल हवैं औ जुद्ध मां दस सीस वाले रावन का जीति लिहिन हवे।"

865 सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत। 6.107.D1
866 सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत॥ 6.107.D2
तब सीता उनका अस असीस दिहिन, "हे पुत्र! तुमरे हिरदय मां सब सद्गुन सदा बास करैं औ लखन सहित कोसलपति सदा तुम पर अनुकूल रहैं।"

867 अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता। देखौं नयन स्याम मृदु गाता॥ 6.108.C1
868 तब हनुमान राम पहिं जाई। जनकसुता कै कुसल सुनाई॥ 6.108.C2
"हे तात! अब तुम वहै जतन करौ जेहिते हम सीघ्र ते सीघ्र कोमल औ स्यामल तन वाले स्वामी का दरसन कइ सकी।" तब हनुमान राम के लगे जाय के सीता केर कुसलता के बारे मां बताइन।

869 सुनि संदेसु भानुकुलभूषन। बोलि लिए जुबराज बिभीषन॥ 6.108.C3
870 मारुतसुत के संग सिधावहु। सादर जनकसुतहि लै आवहु॥ 6.108.C4
हनुमान ते यह संदेसु सुनि के राम जुबराज अंगद औ बिभीसन का बोलवाय के कहिन, "तुम मारुतिनंदन के साथे जाय के आदर सहित जनकसुता का लइ के आवौ।"

871 सीता प्रथम अनल महुँ राखी। प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी॥ 6.108.C14
सिया के आवै पर राम उनका पहिले अगिनी मां परबेस कराइन जेहिते उनके वास्तविक स्वरुप का प्रकट कीन जा सके।

872 जौं मन बच क्रम मम उर माहीं। तजि रघुबीर आन गति नाहीं॥ 6.109.C7
873 तौ कृसानु सब कै गति जाना। मो कहुँ होउ श्रीखंड समाना॥ 6.109.C8
यहि पर सिया बोली, "जौ मन, बचन औ करम ते हमरे मन की गति राम के अलावा कहूँ अउर न लागि होय तौ हे अग्निदेव! तुम सबके मन की गति का जानै वाले हौ, हमरेहु मन का भाव जानि के हमरी खातिर चन्दन के समान सीतल होई जाओ।"

874 धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो। 6.109.X13
875 जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो॥ 6.109.X14
तब अग्निदेव ससरीर प्रकट भे, बेदन मां बखान जग बिदित सत्य के समान सच्ची सिया का राम के हाथन मां अस सऊंपिन जइस छीरसागर लच्छमी जी का बिस्नु का सऊंपिन रहै।

876 सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली। 6.109.X15
877 नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली॥ 6.109.X16
सिया राम के बामांग मां अस सुसोभित होई रहीं जइसे नए-नए खिले कमल के पास मां स्वर्न कमल कै कली सोभा पाय रही होय।

878 जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार। 6.109b.D1
879 देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार॥ 6.109b.D2
जनकसुता के साथै प्रभु की सोभा का देखि के भालू औ बानर बहुते हर्षित होइ के सुख के सागर राम की जय जयकार करे लाग।

880 अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस। 6.112.D1
881 सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस॥ 6.112.D2
लछिमन, जानकी के साथै कुसल कोसलाधीस प्रभु का देखि के देवराज इन्दर हर्षित मन ते भगवान केर अस्तुति करै लाग।

882 अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल। 6.113.D1
883 काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल॥ 6.113.D2
इंद्र बोले, "हे दीनदयाल! अब हमरी कइती किरपा करि के निहार के बतावो कि हम कउनी तना तुम्हार सेवा करी?" तब इंद्र के प्रिय बचन सुनि के भगवान बोले,

884 सुनु सुरपति कपि भालु हमारे। परे भूमि निसचरन्हि जे मारे॥ 6.114.C1
885 मम हित लागि तजे इन्ह प्राना। सकल जिआउ सुरेस सुजाना॥ 6.114.C2
"हे देवराज! सुनौ, ई सब जउन भालू औ बानर धरती पर मरे परे हवैं, ई सब हमार हित करे खातिर अपने परान त्यागिन है। हे सुजान इंद्र! तुम इन सबका जियाय देयो।"

886 प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई । केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई ॥ 6.114.C4
887 सुधा बरषि कपि भालु जिआए । हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए ॥ 6.114.C5
जबकि प्रभु तीन्यू लोकन का मारि के फिरि ते जियाय सकत हैं तबहुं उइ इंद्र के सामर्थ्य का संसार मां स्थापित करे खितिर उनका स्रेय देवा चहत हैं यही ते उनते यही परकार के बात कहि रहें हैं। इंद्र अमरित के बरसा किहिन जेहिते सब भालू बानर जीवित होई के हरस के साथ भगवान के लगे आय गे।

888 राम सरिस को दीन हितकारी । कीन्हे मुकुत निसाचर झारी ॥ 6.114.C9
889 खल मल धाम काम रत रावन । गति पाई जो मुनिबर पाव न ॥ 6.114.C10
राम के समान दीनन का हित करे वाला दूसर को होई जो निसाचरन तक का मुक्ति दइ दिहिन। सुभाव ते दुष्ट, पापन के धामु, काम मां रत रहै वाले रावनौ का भगवान जउन गति दिहिन वह गति तौ मुनि तक नाहीं पावत हैं।

890 सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान । 6.114a.D1
891 देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान ॥ 6.114a.D2
पुष्पन की बरसा करत भये सब देउता होर अपने अपने बिमानन पर चढ़-चढ़ के चले गे। तब नीक अवसर जानि के संभु सुजान भगवान के लगे आये।

892 परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि । 6.114b.D1
893 पुलकित तन गदगद गिराँ बिनय करत त्रिपुरारि ॥ 6.114b.D2
संकर प्रेम मां भरि के, आपन दुनो हाथ जोरि के, कमल के जइसे नेत्रन मां जलु भरि के, प्रेम के मारे पुलकित तन औ गदगद बानी के साथ राम के बिनती करिन।

894 करि बिनती जब संभु सिधाए । तब प्रभु निकट बिभीषनु आए ॥ 6.116.C1
895 दीन मलीन हीन मति जाती । मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ॥ 6.116.C4
यहि तना जब संभु बिनती कइ के प्रस्थान किहिन तब प्रभु के लगे बिभीसन आय के बोले, "हे प्रभु! तुम हमरे जइसे दीन, बुद्धि औ जाति ते हीन पर भी अनेक परकार की किरपा किय्हो हवै।

896 सुनत बचन मृदु दीनदयाला। सजल भए द्वौ नयन बिसाला॥ 6.116.C8
बिभीसन के अस कोमल बचन सुनि के दीनन पर दया करे वाले राम के बिसाल नयनन मां जलु भरि आवा।

897 बहुरि बिभीषन भवन सिधायो। मनि गन बसन बिमान भरायो॥ 6.117.C3
898 चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन। गगन जाइ बरषहु पट भूषन॥ 6.117.C5
एह्के बादि बिभीसन अपने महल मां गे औ पुष्पक बिमान मां तमाम तरा के मणि औ बस्त्र धरवाय दिहिन। यहि पर राम उनते कहिन, "हे सखा बिभीसन! तुम बिमान का गगन कइती लइ जा के यह सब सामग्री का तरे बर्सवाय देयो।"

899 भालु कपिन्ह पट भूषन पाए। पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए॥ 6.118.C1
जब या सब सामग्री लुटा दीन गै तौ भालू औ बानर सब वहिका पहिरि-पहिरि के राम का देखावय लाग।

900 तुम्हरें बल मैं रावनु मार्यो। तिलक बिभीषन कहँ पुनि सार्यो॥ 6.118.C4
901 निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू। सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू॥ 6.118.C5
अबु राम बिभीसन ते कहिन, "हम तौ तुमरेहे बलु ते रावन का मारा हवै।" अस कहि के राम बिभीसन का राजु तिलक सारिन। फिर राम सबका बल औ आत्मबिस्वास बढ़ावे खितिर कहिन, "अब तुम सब पंचे अपने अपने घरे जाओ, हमका यादि कइ के रह्यो, अब तुमका कहू ते डेराय के आवस्यकता नहीं ना।"

902 प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि। 6.118a.D1
903 हरष बिषाद सहित चले बिनय बिबिध बिधि भाषि॥ 6.118a.D2
प्रभु की अग्या से बानर औ भालू सब राम के रूप का हिरदय मां राखि के, बिबिध भांति ते उनकी अस्तुति कइ-कइ के कुछ हरस औ कुछ बिसाद सहित अपैं-अपैं घर का लउटि गे।

904 कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान। 6.118b.D1
905 सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान॥ 6.118b.D2

906 कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि। 6.118c.D1
907 सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि ॥ 6.118c.D2

बानरराज सुग्रीव, नील, जामवंत, अंगद, हनुमान, बिभीसन अउर बाकी के अनेक बलसाली सेनापति प्रेम के अधिकता के मारे कुछु कहे नाही पावत हैं मुला आँखिन मां आंस भरे, बिना पलकें झपकाए राम का चितै रहें हैं।

908 अतिसय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई ॥ 6.119.C1
909 सिंहासन अति उच्च मनोहर। श्री समेत प्रभु बैठे ता पर ॥ 6.119.C4

उनकेर अति ते अधिक प्रेम देखि के राम उन सब पंचेन का बिमान पर चढ़ा लिहिन। बिमान मां स्थित एक ऊंचे सिंहासन पर प्रभु सिया सहित बिराजमान भे।

910 रुचिर बिमानु चलेउ अति आतुर। कीन्ही सुमन बृष्टि हरषे सुर ॥ 6.119.C6
911 कह रघुबीर देखु रन सीता। लछिमन इहाँ हत्यो इँद्रजीता ॥ 6.119.C9

सुन्दर बिमानु बहुत निपुनता के साथ तेज गति ते चलि परा जेहिका देखि-देखि देउता होर हर्षित होइ के पुष्प बरसावे लाग। राम सिया का नीचे देखा के बतावै लाग, "यह द्याखौ सिया! याहे रन भूमि आय जहां लछिमन मेघनाद का मारिन रहै।"

912 हनूमान अंगद के मारे। रन महि परे निसाचर भारे ॥ 6.119.C10
913 कुंभकरन रावन द्वौ भाई। इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई ॥ 6.119.C11

आगे देखावत भये बताइन, "हियाँ हनुमान औ अंगद के मारे भये केतन्यो निसाचर रनभूमि मां परे हवैं।" हियें देउतन का दुःख दे वाले रावन औ कुम्भकरनौ मारे गे हैं।"

914 इहाँ सेतु बाँध्यों अरु थापेउँ सिव सुख धाम। 6.119a.D1
915 सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥ 6.119a.D2

हियाँ सागर पर पुल बाँधा गा औ सुख के धाम सिव जी का थापा गवा।" तब सिया सहित किरपानिधि राम संभु का परनाम किहिन।

916 तुरत बिमान तहाँ चलि आवा। दंडक बन जहँ परम सुहावा ॥ 6.120.C1
917 सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा। चित्रकूट आए जगदीसा ॥ 6.120.C3

थोरिहि द्यार मां बिमानु हुवां जाय पहुंचा जहां परम सुहावन दंडक बन रहा, सब रिसिन ते आसिरबादु लइ के जगत के स्वामी चित्रकूट पंहुचि गे।

918 तीरथपति पुनि देखु प्रयागा। निरखत जन्म कोटि अघ भागा॥ 6.120.C7
919 पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि। त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि॥ 6.120.C9
फिरि ते उइ पंचे तीरथराज परयाग के दरसन किहिन जेहिके दरसन ते कोटिन जनम के पाप भागि जात हैं। एह्के बाद फिर ते पावन अवधपुरी के दरसन भे, जउन तीनों तापन के साथै-साथै भव के सब परकार के रोगन का नास करे वाली आय।

920 प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई। धरि बटु रूप अवधपुर जाई॥ 6.121.C1
921भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु। समाचार लै तुम्ह चलि आएहु॥ 6.121.C2
तब परभु हनुमान का समुझाय के कहिन, "तुम बटुक का रूप धरि के अवधपुरी जाओ। भरत तक हमार कुसल छेम पहुँचाओ अउर उनकेर समाचार लइ के हमरे लगे वापस आओ।"

922 समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान। 6.121a.D1
923 बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान॥ 6.121a.D2
जउन ग्यानी जन रघुबीर के युद्ध मां रघुबीर की बिजय के यहि चरित का सुनत हवैं, भगवान उनका सदा बिजय, बिबेक औ जस परदान करत हैं।

उत्तरकाण्ड

924 रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग। 7.0a.D1
925 जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृस तन राम बियोग॥ 7.0a.D2

रामचंदर के बनवास ते लउटे मां केवल याक दिन बचा रहि गा तब अवधपुरी के सब जन अधीर होय लाग। राम के बियोग मां दूबर भये सब मनई औ मंसवा अइसी वइसी बइठ के स्वाचै लाग।

926 राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत। 7.1a.D1
927 बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत॥ 7.1a.D2

राम के बिरह रूपी सागर मां मगन होई के भरत केर मन बूड़त-उतरात रहा के ओतनेहे मां हनुमान बिप्र का रूप धरि के अस आय गे जइसे बूड़त भये लोगन का बचावै खितिर कउनो जहाजु आय गवा होय।

928 देखत हनूमान अति हरषेउ। पुलक गात लोचन जल बरषेउ॥ 7.2.C1
929 रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता। आयउ कुसल देव मुनि त्राता॥ 7.2.C4

हनुमान का देखतै भरत बहुत हर्षित होई गे, उनका सरीर खुसी के मारे कुप्पा (फूलि) होई गा औ आँखिन ते जलु बरसै लाग। तब हनुमान कहै लाग, "सज्जन जनेन का सुख दे वाले, मुनिन केरी रच्छा करे वाले, रघुकुल के तिलक सिरोमनी कुसलता तेनी लउटि आयें हवैं।"

930 हरषि भरत कोसलपुर आए। समाचार सब गुरहि सुनाए॥ 7.3.C1

या सुनि के भरत बहुत हर्षित भे औ अजोध्यापुरी आय के गुरु का सब समाचार सुनाइन।

931 सुनत सकल जननीं उठि धाईं। कहि प्रभु कुसल भरत समुझाईं॥ 7.3.C3
932 समाचार पुरबासिन्ह पाए। नर अरु नारि हरषि सब धाए॥ 7.3.C4

यह समाचार सुनतेन सब महतारी उठी के दउरि परीं। तब भरत सबते प्रभु की कुसलता बताय के समझाये दिहिन। जब नगर बासी यह समाचार पाइन तो वउ मारे खुसी के दउरि परे।

933 आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान। 7.4a.D1
934 नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि बिमान॥ 7.4a.D2

किरपा के सागर भगवान जब सब जनेन का आवत देखिन तौ पुष्पक बिमान का नगर के निकट उतरि परे की प्रेरना दिहिन। तब बिमानु धरती पर उतरि आवा।

935 आए भरत संग सब लोगा। कृस तन श्री रघुबीर बियोगा॥ 7.5.C1
936 बामदेव बसिष्ट मुनिनायक। देखे प्रभु महि धरि धनु सायक॥ 7.5.C2

भरत के साथै जउन सब लोग आये रहे उइ सब पंचेन केर सरीर राम के बियोग मां दुबराय गवा रहै। बामदेव, बसिस्ठ अउ अनेक श्रेस्ठ मुनियन का देखि के प्रभु आपन धनुस बान नीचे धरती पइ धरि दिहिन।

937 धाइ धरे गुर चरन सरोरुह। अनुज सहित अति पुलक तनोरुह॥ 7.5.C3
938 सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा। धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा॥ 7.5.C5

राम छोटे भाई लखन सहित दउरि के आनंद के साथे गुरुजन के चरन कमल का पकरि लिहिन। धरम धुरन्धर रघुकुल के स्वामी सब द्विजनन का सीस नवाय के भेंट करिन।

939 गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज। नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज॥ 7.5.C6
940 परे भूमि नहिं उठत उठाए। बर करि कृपासिंधु उर लाए॥ 7.5.C7

भरत प्रभु के उन चरनन का पकर लिहिन जिन चरनन का देउता, संकर, ब्रम्हा औ मुनि होर नमन कीन कर्त हैं। भरत धरती पर अस परे हैं कि उठाये नाहीं उठत तब किरपासिन्धु राम उनका जबरदस्ती उठा के हिरदय ते लगा लिहिन।

941 पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लगाइ। 7.5.D1
942 लछिमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाइ॥ 7.5.D2

फिरि प्रभू सत्रुघन का हिरदय ते लगाय के बहुत हरस के साथ भेंट किहिन। लछिमन औ भरत एक दूजे ते परम प्रेम के साथै भेंट किहिन।

943 अमित रूप प्रगटे तेहि काला। जथा जोग मिले सबहि कृपाला॥ 7.6.C5
944 कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी। किए सकल नर नारि बिसोकी॥ 7.6.C6
ओत्तेहेही बेरिया राम अपने असंख्य रूप का परगट कइ के सबते जथाजोगु भेंट किहिन। रघुबीर जब अपनी कृपा दृष्टी ते सबका बिलोकिन तौ सब मेहरिया मन्स्वन का सोक पटाय गवा।

945 पुनि रघुपति सब सखा बोलाए। मुनि पद लागहु सकल सिखाए॥ 7.8.C5
946 गुर बसिष्ट कुलपूज्य हमारे। इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे॥ 7.8.C6
फिर श्री रघुनाथ जी ने सब मित्रों को बुलाया और उनको समझाया कि मुनि के चरणों में पड़ो। फिरि राधुपति सब सखन का बोलाय के सिखाइन कि तुम सब जने मुनि जनन के पांय लागौ, इ गुरु बसिस्ठ हमरे कुल के द्वारा पूजे जात हवैं, इनहीं की किरपा आय कि हम जुद्ध मां सब दनुजन का मारि सकेन।

947 ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भए समर सागर कहँ बेरे॥ 7.8.C7
एह्के बाद राम गुरु ते बताइन, "हे मुनि! ई सब हमरे वइ मित्र अहीं जो जुद्ध रूपी सागर मां हमरी खितिर बेड़ा समान होई गे रहैं।"

948 प्रभु जानी कैकई लजानी। प्रथम तासु गृह गए भवानी॥ 7.10.C1
949 ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा। पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा॥ 7.10.C2
सिव जी पारबती ते कहि रहें हैं, "हे भवानी! फिरि राम का अस लाग कि कैकेयी अबहूँ अपने करमन के कारन लज्जित अनुभव कइ रहीं हैं यही बरे उइ सबते पहिले कैकेयी के भवनु मां गे। उनका नीकी तना समुझाय-बुझाय के सुखी-संतुस्ट कइ के तब हरि अपने भवन कइती गमनु किहिन।

950 गुर बसिष्ट द्विज लिए बुलाई। आजु सुघरी सुदिन समुदाई॥ 7.10.C4
गुरु बसिस्ठ बम्हनन का बोलवाय के उनते कहिन, "आजु दिन औ घरी के मेल ते सब सुभ करै वाला जोगु बनि रहा है।"

951 सुनु खगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि बृंद। 7.11c.D1
952 चढ़ि बिमान आए सब सुर देखन सुखकंद॥ 7.11c.D2

कागभुसुंडी पच्छिन के राजा गरुन ते कहत हैं, "हे खगेस! अइसा सुभ अवसर जानि के ब्रम्हा, बिस्नु, महेस तीनियु जने औ सबै देउता वही लग्गे अपने -अपने बिमानन पर सवार होई के सुख के मूल रूप भगवान के दरसन करे खातिर हुवां पंहुचि गे।"

953 प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा। तुरत दिब्य सिंघासन मागा॥ 7.12.C1
954 रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥ 7.12.C2

गुरु बसिस्ठ जब भगवान का देखिन तौ उनके मन मां बिसेस अनुराग उपजि उठा औ उइ तुरतै एक दिब्य सिंघासन मंगवाइन, वा सिंघासन सूरत के तेज हस दमकत रहा, वहिके तेजु का बरनन नाहीं कीन जाय सकत है। राम सब बाम्हन समुदाय का सीस नवाय के सिंघासन पर बइठ गे।

955 प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा॥ 7.12.C5
956 सुत बिलोकि हरषीं महतारी। बार बार आरती उतारी॥ 7.12.C6

सबते पहिल तिलकु मुनि बसिस्ठ कीन्हिन वहिके बाद उइ सब बिप्रन का तिलकु करे की अग्या दिहिन। पूत का देखि-देखि के महतारी होरी बहुत हरसित भयीं औ बार बार उनकी आरती उतारिन।

957 बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर। 7.13b.D1
958 बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर॥ 7.13b.D2

कागभुसुंडी कहत हैं, "हे गरुड़! सुनौ, तब जहां रघुबीर रहे हुवें संभु पधारे। उइ जब रघुबीर केरी बिनती करब सुरु किहिन तौ उनकै बानी गदगद होय उठी अउर उनकेर देही आनंद के मारे पुलकित होइ गै।"

959 बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्री रंग। 7.14a.D1
960 पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥ 7.14a.D2

"हे सिरी पति! हम तुम ते बार-बार याहे मान्गित है कि तुम हमका अपने चरनन की अचल भक्ति औ सत्संगति का बरदान प्रसन्नता के साथ दइ दियो।"

961 ब्रह्मानंद मगन कपि सब कें प्रभु पद प्रीति। 7.15.D1
962 जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति॥ 7.15.D2
भगवान के चरनन ते प्रीति लगाय के सब बानर ब्रम्हानंद मां अस मगन भे कि दिन जात कोहु का पतै न लाग औ छह मास बीति गे।

963 तब रघुपति सब सखा बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिरु नाए॥ 7.16.C2
तब रघुनाथ सब मित्रन का बोलवा पठइन, सबै आय के उनका सादर सीस नवाइन।

964 परम प्रीति समीप बैठारे। भगत सुखद मृदु बचन उचारे॥ 7.16.C3
965 तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई॥ 7.16.C4
बड़े प्रेम ते प्रभु उनका अपने नेरे बइठारि के भगतन का सुख दे वाले मधुर बचन कहिन, "तुम सब जने हमार बहुतै नीकी तना ते सेवा किन्ह्यो है, तुमरेहे मुंहे पर हम तुम्हार बड़ाई का करी?

966 ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे॥ 7.16.C5
967 सब कें प्रिय सेवक यह नीती। मोरें अधिक दास पर प्रीती॥ 7.16.C8
"तुम सब पंचे हमरी खातिर आपन घर औ सुख सब त्यागि दिन्ह्यो यही ते तुम सब हमका बहुत प्रिय लागत हौ। याह तौ नीतिन आये कि सेवकु सबै का पियारे लागत हवैं मुला हमका दासन पर कुछ बिसेसै पियार हवे।"

968 तब प्रभु भूषन बसन मगाए। नाना रंग अनूप सुहाए॥ 7.17.C5
तब परभु उन सबकी खातिर अनेक तरा के नीक नीक, रंग-बिरंगे गहना-कपड़ा मंगवाइन।

969 जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ। 7.17a.D1
970 हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ॥ 7.17a.D2
जामुवंत औ नील होरेन का रघुनाथ अपने हाथन ते यह सब पहिराइन। सब राम के स्वरुप का हिरदय मां धारन कइ के, उनके चरनन माँ माथु नवाय-नवाय चलि परे।

971 तब सुग्रीव चरन गहि नाना। भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना॥ 7.19.C7
972 दिन दस करि रघुपति पद सेवा। पुनि तव चरन देखिहउँ देवा॥ 7.19.C8
जब सबुई जन चले लाग तौ हनुमान सुग्रीव के पांय पकर लिहिन औ यहि भांति ते उनके बिनती करै लाग, “हे देव! हमका अउर दस दिन की खातिर रघुपति के चरन सेवा कइ ले द्यो वहिके बाद हम आय के तुम्हरे चरन-दरसन करब।”

973 पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा॥ 7.19.C9
सुग्रीव कहिन, “हे पवनपुत्र! तुम पुनयन की रासी अहियु, जावौ किरपा के धाम रामै केरि सेवा करौ।”

974 पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा। दीन्हे भूषन बसन प्रसादा॥ 7.20.C1
975 तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता। सदा रहेहु पुर आवत जाता॥ 7.20.C3
फिर किरपा करे वाले राम निषाद का बोलाय के आभूसन-बस्त्र केर परसादु दइ के कहिन, “तुम हमरे सखा औ भरत के समान भाई हौ, तुम अजोध्यानगरी मां आत जात बने रह्यो।”

976 राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥ 7.20.C7
राम के राजगद्दी मां बइठते तीनों लोकन के सोक दूर होइ गे औ सब जन हर्षित भे।

977 बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग। 7.20.D1
978 चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग॥ 7.20.D2
राम के राज मां सबुई जन अपने-अपने बरन औ आसरम के धरम का पालन करत हैं, बेदन द्वारा बताये गे पथ का अनुसरन करत भये सदा सुख पावत हैं, कहू का कउनो तरा का भय, सोकु औ दुःख नहीं ना।

979 राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं। 7.21.D1
980 काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं॥ 7.21.D2
कागभुसुंडी कहत हैं, “हे पच्छीराज गरुण! सुनौ, राम के राजु मां सारे चराचर जगत मां कालु, करम, सुभाव औ गुन जनित दुःख कहु का नाहीं सतावत हैं।”

981 भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥ 7.22.C1
982 राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥ 7.22.C6
कोसलदेस के राजाराम, सात समुद्र की करधनी ते सजी भई धरती के एक अकेल राजा हवैं। रामराज की सुख-संपत्ति का बखान तौ सेस औ सारदौ नाहीं कइ सकत।

983 सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी॥ 7.22.C7
984 ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी॥ 7.23.C6
सब पुरुस-नारी उदार सुभाव वाले, दुसरेन पर उपकार करे वाले, बम्हनन की चरन सेवा करे वाले हवैं। वह काल मां धरती सदा फसलन ते भरी रहत है। मानो तरेता जुग मां सतजुग आय गवा होय।

985 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती॥ 7.25.C3
986 हरषित रहहिं नगर के लोगा। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा॥ 7.25.C4
राम अपने सब भाइन ते बहुत प्रीति करत हैं औ नित उनका भांति-भांति ते नीति की बातें सिखावत हैं। नगर के लोग हरस के साथ रहि रहे हैं औ उन सुखन केर भोग कइ रहे हैं जउन देउतन तक का दुर्लभ हवै।

987 दुइ सुत सुन्दर सीताँ जाए। लव कुस बेद पुरानन्ह गाए॥ 7.25.C6
988 दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर। हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर॥ 7.25.C7
सिया लव-कुस दुई बेटवन का जनम दिहिन जिनका बरनन बेद-पुरान मां कीन गवा है, दुनो भाई बड़े जोद्धा, बिनम्र, सुन्दर औ गुनन के धाम हैं मानो रामै के प्रतिबिम्ब अहीं।

989 ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार। 7.25.D1
990 सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार॥ 7.25.D2
जे ज्ञान, बानी, इंद्रिन ते परे, अजन्मा, माया, मन औ गुनन ते परे है वइ सच्चिदानंद भगवान यह सब आदर्स नर लीला कइ रहे हैं।

991 गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा। मैं सब कही मोरि मति जथा॥ 7.52.C1
992 राम चरित सत कोटि अपारा। श्रुति सारदा न बरनै पारा॥ 7.52.C2
सिव जी पारबती ते कहत हैं, "हे गिरिजा! सुनौ, हम तुमते राम केर यह निर्मल कथा अपनी मति के अनुसार सुनावा है, जबकि राम के चरित तौ सौ करोड़ या कहि लेयो कि इतने हवैं जिनका पार नाहीं पावा जा सकत। हियाँ तक कि बेद औ सारदौ वहिका बखान करे लगिहैं तौ पार न पइहैं, माने कहि न सकिहैं।"

993 राम अनंत अनंत गुनानी। जन्म कर्म अनंत नामानी॥ 7.52.C3
994 बिमल कथा हरि पद दायनी। भगति होइ सुनि अनपायनी॥ 7.52.C5
"काहे ते कि जउनी तना राम अनंत हवैं वही तना उनके गुन, नाम, जनम सब अनंत हवैं। उनकेर या पबित्तर कथा भगतन का उनके परम पद तक पहुँचावै वाली आय। एहिका सुने ते भगवान केरि अबिचल भगति प्राप्त होत है।"

995 भव सागर चह पार जो पावा। राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा॥ 7.53.C3
996 राम कथा गिरिजा मैं बरनी। कलि मल समनि मनोमल हरनी॥ 7.129.C1
"जो कोऊ भी भव सागर ते पार जावा चहत है वहिके बरे यह रामकथा मजबूत नाव की तना है। हे गिरिजा! हम जउनि राम कथा का तुमते बरनन कीन है यह कलजुग के सब दोसन का दूर करे वाली एवं मन के मइल का हरै वाली आय।"

997 रघुबंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं। 7.130.X13
998 कलि मल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं॥ 7.130.X14
"जउन मानुस रघुबंस मनी राम केर यह चरित कहत, सुनत अउर गावत हैं कलिजुग के साब पापन का अउर मन के सब दोसन का धोय के बिना श्रम कीन्हें राम के धाम का सिधारत हवैं।"

999 सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरै। 7.130.X15
1000 दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्री रघुबर हरै॥ 7.130.X16

"जो मनुस्य केवल पांच-सात चौपाइन का भी मनोहर जानि के अपने हिरदय माँ धारन करत हैं, उनके अबिद्या के कारण उपजे वाले पांचौ तरा के दारुन बिकार सिरी रघुबर हरि लेत हवैं।"

1001 सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो। 7.130.X17
1002 सो एक राम अकाम हित निर्बानप्रद सम आन को ॥ 7.130.X18

तुलसीदास कहत हैं, "अनाथन पर प्रीत करे वाले सुन्दर, सुजान औ किरपा के निधान एक रामै अहीं जो बिना कउनो स्वार्थ अउर कारन के सबका हित कइ के सबही का मोच्छ प्रदान करत हैं।

1003 जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ। 7.130.X19
1004 पायो परम बिश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥ 7.130.X20

जिनकी लेस मात्र किरपा के कारण मंद्बुद्धि वाला तुलसीदास तक परम सांति पाय गवा है, उन राम जस प्रभु कहूं, कतहूँ नाहीं हवै।

1005 मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर। 7.130a.D1
1006 अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर ॥ 7.130a.D2

फिर तुलसीदास कहत हैं, "हे रघुबीर! मोरे समान कउनो दीन नहीं ना औ तुम्हरे समान कउनो दीनन का कल्यान करै वाला नहीं ना। अइस बिचार कइ के हे रघुबंस के मणी! हमरे जनम-मरन रूपी येह भवसागर के दुखन का हरि लेयो।"

1007 कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम। 7.130b.D1
1008 तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥ 7.130b.D2

अन्त मां तुलसीदास कहत हैं, "जउनी तरा कामी पुरुस का मेहरिया प्रिय लागत है, लालची मानुस का धन पियार लागत है, हे रघुनाथ! तुम वही तना हमका सदा पियारे लागौ।"

श्री रामायण जी की आरती

आरति श्री रामायन जी की । कीरति कलित ललित सिय पी की ॥

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । बालमीक बिग्यान बिसारद ॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद । बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥1॥
आरति श्री रामायन जी की........

गावत बेद पुरान अष्टदस । छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस ॥
मुनि जन धन संतन को सरबस । सार अंस संमत सब ही की ॥2॥
आरति श्री रामायन जी की........

गावत संतत संभु भवानी । अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ॥
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी । कागभुसुंडि गरुड़ के ही की ॥3॥
आरति श्री रामायन जी की........

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी । सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ॥
दलन रोग भव मूरि अमी की । तात मात सब बिधि तुलसी की ॥4॥
आरति श्री रामायन जी की........

येह रामायण जी की आरती, सीतापति राम जी की सुंदर अउर मधुर कीरति आय।

येह आरती का ब्रह्मादि देव, ऋसि नारद, अत्यंत परम बिज्ञानी बाल्मीकि, सुकदेव जी, सनकादि, सेषनाग एवं सरस्वती गावत हैं अउर जेहिके जसु का बरनन हनुमान जी बड़ी नीकी तना ते किहिन है, वई रामायन जी की आरती हम करित हन ॥1॥

जेहिमा चारों बेद, अट्ठारह पुरान, छहों सास्त्र औ सब ग्रंथन का सार भरा है, वहै मुनि जनन का धन तथा संतन का सर्बस्व आय अउर वही मां सब का सार औ सम्मति है, हम अइसी रामायन जी की आरती करित हन ॥2॥

जेहिका सिउ औ पारबती नित्य प्रति गावत हैं, जेहिका ज्ञानी मुनिश्रेष्ठ अगस्त्य जी औ ब्यास आदि श्रेष्ठ कवि बखान किहिन है, औ जउन कागभुशुण्डी जी अउर गरुड़ जी के हिरदय मां सदा निवास करत हैं, अइसे श्री राम की रामायन की हम आरती करित हन ॥3॥

येह आरती कलियुग के बिसय-बासना के रस के स्वाद ते हम सब पंचेन का मुक्त करै वाली आय, मुक्तिरूप जुबती केर सुंदर सिंगार आय अर्थात् बाहरी आडम्बरन ते मुक्त कइके परम आंतरिक सौंदर्य दे वाली आय तथा सबै रोगन ते मुक्त करै वाली अमरित रूपी बूटी आय। तुलसीदास कहत हैं- यह आरती हर तना ते हमार मात-पिता आय। एहीते हम रामायण जी की आरती करित हन ॥4॥

श्रीराम स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नव कञ्ज लोचन कञ्ज मुख कर कञ्ज पद कञ्जारुणं ॥1॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरं ।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥2॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल चंद दशरथ नन्दनं ॥3॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अङ्ग बिभूषणं ।
आजानुभुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणं ॥4॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं ।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल गंजनं ॥5॥

मनु जाहि राचेउ मिलहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥6॥

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥7॥

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अङ्ग फरकन लगे ॥

॥ सियावर रामचंद्र जी की जय॥

हे मन! कृपालु श्री रामचन्द्र जी केर भजन कर। वइ संसार के जनम-मरन रूपी दारुन भय का दूर करै वाले हैं। उनकेर नेत्र नए खिले कमल की तरा लागत हैं। मुख-हाथ औ चरनौ लाल कमल की तरा हैं॥1॥

उनकर सुन्दरता केर छटा अनगिनत कामदेवन ते बढ़िके है। उनकेर शरीर नये नील-सजल मेघ जइस सुन्दर रंग का है। पीताम्बर मेघरूप सरीर पर मानो बिजली की तना चमकत है। राजा जनक की पुत्री सीतापति पावनरूप राम जी का हम नमन करित हन॥2॥

हे मन! दीनन के बन्धु, सूरज के समान तेजस्वी, दानव औ दैत्यन के बंस का समूल नास करै वाले, आनन्दकन्द कोसल-देसरूपी आकास मां निर्मल चन्द्रमा के समान दसरथनन्दन राम का भजन कर॥3॥

उनके मस्तक पर रत्नजड़ित मुकुट, कानन मां कुण्डल, भाल पर तिलक, औ हर अंग मां सुन्दर आभूषण सजि रहे हैं। उनकी भुजाएँ घुटनन तक लम्बी हैं। उइ धनुष-बान लेहे भए हैं, उइ संग्राम मां खर-दूषन का जीति लिहिन हैं॥4॥

उइ सिउ, सेष औ मुनिन के मन का परसन्न करै वाले अउर काम, क्रोध, लोभादि सत्रुन का नास करै वाले हैं। तुलसीदास जी प्रार्थना कर्त हैं कि वइ रघुनाथ जी मोरे हिरदय कमल मां सदा निवास करैं॥5॥

गौरी जी सीता जी का कहती हैं- जेहिमा तुम्हार मन अनुरक्त होइ गवा है, वहै सुभाव से सुन्दर साँवर वर (रामचन्द्र जी) तुमका मिली। वह जउन दया केर सागर औ सुजान (सर्वज्ञ) हवै, तुम्हरे सील औ सनेह का जानत है॥6॥

यहि तरा गौरी जी केर आसीर्बादु सुनि के जानकी जी समेत सबै सखियाँ हृदय मां हर्षित भयीं। तुलसीदास जी कहत हैं- भवानी जी का बार-बार पूजि के सीता जी परसन्न मन ते राजमहल का लउटि चलीं॥7॥

गौरी का अनुकूल जानि के सीता के हिरदय मां जउन हरस भा वह कहा नहीं जा सकत। सुन्दर मंगलन के मूल उनके बाँयें अंग फरकै लाग॥

पुस्तक मां आए नामन केर सूची

अंगद : बालि केर पुत्र
अगस्ति (अगस्त्य) : याक ऋषि
अच्छकुमारा (अक्षयकुमार) : रावन केर एक पुत्र
अज : ब्रह्मा
अत्रि : याक ऋषि
अनंत : लछिमन
अनुसुइया (अनुसूया) : अत्रि केरि पत्नी
अवध : अयोध्या, राम केर जनमस्थान
अवधपुर : अजोध्या
अवधपुरी : अजोध्या
असोक बन (अशोकवन) : वह बन जहाँ रावन सीता का राखिस रहै
अहल्या : गौतम ऋषि केरि पत्नी

इँद्रजीता (इंद्रजीत) : मेघनाद
इंदिरा : बिस्नु केर पत्नी लच्छमी
इंदु : चन्द्रमा
इंद्रजित (इंद्रजीत) : मेघनाद
ईसा (ईश) : सिउ
उमा : पारबती

कपटमृग : कपट ते बना भवा हिरन (मारीच)
कपिराई (कपिराय) : कपिराज, बानरन केर राजा, सुग्रीव
कपीस (कपीश) : सुग्रीव, हनुमान
कुंभकरन (कुम्भकर्ण) : रावन केर छोट भाई

कुंभज : अगस्त्य ऋषि
कुस (कुश) : सीता-राम केरे जेठ पुत्र
केवट : याक मल्लाह जौन राम का गंगा पार कराइस
केवटु (केवट) : केवट
कैकई (कैकेयी) : दसरथ केरि सबते छोट पत्नी; भरत कै महतारी
कैकयसुता (केकयसुता) : कैकेयी
कोसलपति : राम
कोसलपुर : कोसल देस केर रजधानी अजोध्या
कोसला (कोसल) : याक देस केर नाओं, जहाँ दसरथ केर राजु रहा
कोसलाधीस (कोसलाधीश) : राम
कोसलाधीसा (कोसलाधीश) : राम
कोसलेस (कोसलेश) : कोसल देस के राजा; दसरथ, राम
कौसल्या : दसरथ केरि बड़कइ पत्नी; राम केरि महतारी
कौसिक (कौशिक) : बिस्वामित्र

खगेस (खगेश) : पच्छिन केर स्वामी अउर भगवान बिस्नु कै बाहन गरुड़
खर : याक राच्छस
खरदूषन (खर-दूषण) : खर औ दूषन नाम केरे दुइ राच्छस
खरारी (खरारि) : खर राच्छस केरे सत्रु (राम)

गन नायक (गणनायक) : गनेस
गनपति (गणपति) : गनेस
गनेसु (गणेश) : सिउ औ पारबती कै पुत्र, पहिले पूजन के अधिकारी देउता
गाधितनय : गाधि मुनि केरे पुत्र बिस्वामित्र
गिरिजा : पारबती
गिरिबरराज (गिरिवरराज) : हिमाचल परबत
गीधपति (गिद्धपति) : जटायु

गीधराज (गिद्धराज) : जटायु
गुहँ (गुह) : सृंगबेरपुर केरे राजा
गोदावरी : याक नदी जेहिके तट पर पंचवटी नामक स्थान मां राम आसरम बनाइन रहैं
गौतम : याक ऋषि
गौरि (गौरी) : पारबती

चतुरानन : ब्रह्मा
चित्रकूट : याक परबत जहाँ राम निवास किहिन रहैं
चूड़ामनि (चूड़ामणि) : सिर पर पहिरे वाला याक गहना जेहिका सीता हनुमान का चिन्हारी की तना दिहिन रहैं
छीरसागर (क्षीरसागर) : भगवान बिस्नु एवं देवी लच्छमी केर निवास स्थान
जटायू (जटायु) : याक गिद्ध जो सीता का रावन ते बचावै खितिर वहिसे जुद्ध किहिस औ आपन प्रान दइ दिहिस
जनक : सीता कै पिता केर नांओ
जनकसुता : सीता
जनकु (जनक) : जनक
जानकी : सीता
जामवंत : ऋक्ष प्रजाति के राजा, राम केरी सेना मां सयाने योद्धा अउ सलाहकार

ताड़का : याक राच्छसी केर नांओ
तुलसिदास (तुलसीदास) : रामचरितमानस के रचैता
तुलसी (तुलसीदास) : तुलसीदास
त्रिकूट : तीन परबतनन केर समूह जिन पर लंका बसी रहै
त्रिपुरारि : सिउ
त्रिसिरा (त्रिशिरा) : याक राच्छस
त्रिसिरारि (त्रिशिरारि) : त्रिसिरा के सत्रु राम

दंडक बन (दंडक वन) : जेहि बन मां पंचवटी रहै अउ राम निवास किहिन रहै
दसकंठ : रावन
दसकंध : रावन
दसकंधर : रावन
दसमुख : रावन
दसरथ (दशरथ) : राम के पिता
दसरथु (दसरथ) : दसरथ
दससीसा (दससीस) : रावन
दसानन : रावन
दिग्गज : दिसान के हाथी
दूषन (दूषण) : याक राच्छस

नंदिगावँ (नन्दिग्राम) : अयोध्या के निकट याक अस्थान जहाँ राम बनवास के समय भरत 14 बरस तक निवास किहिन
नभगेस (नभगेश) : गरुड़
नल : बिसकरमा के वानर पुत्र जे अपैं भाई नील के साथे मिलिके समुद्र पर पुल बनाइन
नारदादि : नारद आदि (ऋषि)
नील : बिसकरमा के बानर पुत्र जे अपैं भाई नल के साथे मिलिके समुद्र पर पुल बनाइन

पंचबटी (पंचवटी) : गोदाबरी के तट पर याक अस्थान जहाँ राम आसरम बनाइन, हियैं ते रावन सीता केर हरन कीन्हिस रहै
पंपा : याक सरोवर केर नांओ
परसुधर (परशुराम) : बिस्नु के छठै औतार
परसुराम (परशुराम) : परसुराम
पवनकुमार : हनुमान

पवनकुमारा (पवनकुमार) : हनुमान
पवनतनय : हनुमान
पवनसुत : हनुमान
पुरारि : त्रिपुरारि, सिउ
प्रबरषन (प्रवर्षण) : याक परबत केर नांव
प्रभंजन : पवन
प्रभंजनसुत : पवनसुत हनुमान
प्रयाग : तीरथ अस्थान जहाँ गंगा, जमुना और सरसुती केर संगम माना जात है
प्रयागा : प्रयाग

फनीस (फणीश) : सेष
बसिष्ट (वसिष्ठ) : याक ऋषि, राम के गुरु, अयोध्या के राजगुरु
बसिष्ठ (वसिष्ठ) : बसिस्ठ
बामदेव (वामदेव) : याक ऋषि
बालमीकि (वाल्मीकि) : आदिकवि जे रामायन केरि रचना किहिन
बालि : किष्किन्धा केर राजा, सुग्रीव क बड़ा भाई, अंगद केर पिता
बालिकुमारा (बालिकुमार) : अंगद
बालितनय : अंगद
बाली (बालि) : बालि
बिदेह नगर (विदेह नगर) : जनकपुर
बिभीषन (विभीषण) : रावन के छोटे भाई जे राम भक्त रहे
बिभीषनु (विभीषण) : बिभीषन
बिरंचि : ब्रह्मा
बिराध (विराध) : याक राच्छस
बिस्वामित्र (विश्वामित्र) : याक ऋषि जे राम का अपैं आसरम केरि सुरच्छा खितिर साथे लइ गे रहैं
बीरघातिनी (वीरघातिनी) : याक सस्त्र केर नांव

बैदेही (वैदेही) : सीता
बैनतेय (वैनतेय) : गरुड़
ब्रह्म : परम सत्य, जगत क सार, परम तत्व
ब्रह्मा : सृष्टि के सरजक

भरत : कैकेयी के पुत्र
भरतु (भरत) : भरत
भरद्वाज : याक ऋषि
भवानी : पारबती
भुसुंडि (काकभुशुण्डि) : कउवा के रूप मां राम-भगत जे गरुड़ का राम कथा सुनाइन रहैं
भृगुपति : परसुराम
भौम : मंगलवार

मंथरा : कैकेयी केर दासी
मंदाकिनी : याक नदी जेहके किनारे चित्रकूट मां राम आसरम बनाइन रहैं
मंदोदरीं : रावन केर पत्नी मंदोदरी
मधुमासा (मधुमास) : चइत मास
मयन : कामदेव
महेस (महेश) : सिउ
मारीच : याक राच्छस; ताड़का केर पुत्र, रावन केर मामा
मारीचा (मारीच) : मारीच
मारुतसुत : हनुमान
मिथिलापति : राजा जनक
मिथिलेसू (मिथिलेश) : मिथिला के राजा, जनक
मेघनाद : रावन केर पुत्र
मैनाक : समुद्र के भीतर स्थित याक परबत

रघुकुल नाथ : राम
रघुकुलभानु : राम
रघुनायक : राम
रघुपति : राम
रघुबर (रघुवर) : रघुबंसिन मां श्रेष्ठ, राम
रघुबीरु (रघुवीर) : राम
रघुराई (रघुराय) : राम
रमानिवासा (रमानिवास) : राम
रमापति (राम) : राम
राम : बिस्नु के औतार, रामायन के नायक
रामचंद (रामचंद्र) : राम
रामचरितमानस : तुलसीदास द्वारा राम के जीवन पर लिखा गा महाकाव्य
रामा (राम) : राम
रामु (राम) : राम
रामेस्वर (रामेश्वर) : सिउ लिंग जेहिकी अस्थापना राम किहिन रहैं
रावन (रावण) : लंका केर राजा, राम से सत्रुता अउ सिया का हरन करै के कारन वहिका बध भवा
रावनु (रावण) : रावन
राहू (राहु) : याक ग्रह जेहिकी छाया चंद्रमा का ढांकि लेत है
रिपुदमनु (शत्रुघ्न) : सत्रुघ्न
रिष्यमूक (ऋष्यमूक) : याक पर्वत जहाँ सुग्रीव निवास कर्त रहें
रीछपति : रीछन के राजा, जामवंत
रीछेसा (रीछेश) : रीछन के राजा, जामवंत

लंका : याक द्वीप जहाँ रावन केर राज रहा
लंकापति : लंका केर स्वामी (रावन, बिभीषण)
लंकिनी : रावन कै पहरेदारिन

लंकेस (लंकेश) : लंका केर राजा, रावन, बिभीसन

लखन (लक्ष्मण) : दसरथ के पुत्र, सुमित्रा केर जेठ पुत्र, राम केर छोट भाई

लखनु (लक्ष्मण) : लछिमन

लछिमन (लक्ष्मण) : लछिमन

लव : सीता-राम केरे छोटे पुत्र

लिंग : सिउ केर परतीक

श्री : सीता

श्रुति : बेद

षडानन : सिउ के बड़कए पुत्र कार्तिकेय जे राच्छस तारकासुर केर बध किहिन रहैं

संकर (शंकर) : सिउ

संपाती : जटायु के बड़के भाई

संभु (शंभु) : सिउ

सृंगबेरपुर (श्रृंगवेरपुर) : याक नगर केर नांओ जहाँ केर राजा निषादराज गुह रहै

सृंगी (श्रृंगी) : याक ऋषि जे राजा दसरथ खितिर पुत्रकामेष्टि जग्य करवाइन रहैं, दसरथ केरि पुत्री के पति

सक्र (शक्र) : इन्द्र

सतानंद (शतानन्द) : राजा जनक केर पुरोहित, गौतम औ अहल्या केरे पुत्र

सत्रुहन (शत्रुघ्न) : सुमित्रा के छोट पुत्र, राम, लछिमन, भरत केरे छोट भाई

सबरी (शबरी) : राम भगत याक भीलनी स्त्री, जेहिका राम नवधा भगति क्यार उपदेस दिहिन रहै

सरऊ : सरजू नदी

सहसबाहु (सहस्त्रबाहु) : हजार भुजान वाला याक राजा जेहका बध परसुराम किहिन रहै

सारदा (शारदा) : सरसुती

सिय (सीय) : सीता

सियपति : राम

सिव : सिउ
सिवा (शिवा) : पारबती
सीता : राम केर पत्नी
सीय : सीता
सुग्रीव : बालि क छोट भाई, राम केर मित्र
सुग्रीवा (सुग्रीव) : सुग्रीव
सुतीछन (सुतीक्ष्ण) : ऋषि अगस्त केर याक शिष्य
सुपनखाँ (शूर्पणखा) : रावन केर बहिनी
सुबाहु : याक राच्छस
सुमंत्र : दसरथ के मंत्री
सुमंत्रु (सुमंत्र) : सुमंत्र
सुमित्रा : दसरथ केरि मान्झिल पत्नी, लछिमन औ सत्रुघ्न के महतारी
सुरपति : इन्द्र
सुरसरि : गंगा
सुरसा : सर्पन के महतारी
सुरेस (सुरेश) : इन्द्र
सुषेन (सुषेण) : लंका के बैद्य
सुषेना (सुषेण) : सुषेन
सूपनखा (शूर्पणखा) : सूपनखा
सौमित्रि : लछिमन

हनुमंत : हनुमान
हनुमंता (हनुमंत) : हनुमान
हनुमान : राम के अनन्य भक्त
हनुमाना (हनुमान) : हनुमान
हनूमान (हनुमान) : हनुमान
हर : सिउ
हरि : भगवान, प्रभु, परमात्मा, बिस्नु

अनुवादक कइती ते दुइ सब्द

गोस्वामी तुलसीदासजी लगभग साढ़े चार सै बरस पहिले 'श्रीरामचरितमानस' केर रचना किहिन रहैं, जउन पहिलेहे ते बाल्मीकी जी के द्वारा रची जा चुकी रहै। गोस्वामी जी रामायन कै रचना अवधी मां किहिन। जेहिते वेह बखत के सबुई जने सहजता से खुदै यहिका पढ़ि के राम के आदरसन का जानि सकैं।

समय आगे बढ़ा अउ हम इक्कीसवीं सदी मां पहुंचि गैन। तकनीकी बिकास कुल धरती बासिन का लगे लगे लइआवा। मुला हमते हमार नैतिक मूल्य औ संस्कृति हेरा गै। जउन मानस के कारन हमका मिली रहै। यह पुरिहि तरा न हेरा जाय यहिके बरे अनेक महापुरुस आपन आपन जोर लगावत रहे। यही कड़ी मां आवत हैं, 'श्री ओमप्रकाश गुप्ता'। भगवान राम के प्रेरे ते उइ गोस्वामी तुलसीदास केर श्रीरामचरितमानस का यह संछिप्त रूप लइ के आयें हैं। अगली पीढ़ी यहिका पढ़ि के, बेदन मां बखाने गे 'ब्रम्ह' का 'राम कथा' के रूप मां जानै-समुझै का जरूर ललायित होई।

यहि पुस्तक केर अवधी गद्य मां अनुवाद करै का हमका जउन सौभाग हासिल भा है वहिका हम सबते पहिले भगवान राम की किरपा मानित है। वहिके बाद यह सब ओम जी केर बिस्वासु आये, जउन उनका लाग कि हम येहि यज्ञ मां अपई कइती ते यह आहुति डारि पइबे। येह यज्ञ के परसाद के रूप मां हमका बहुतै आनंद औ संतोस मिला है।

जय सियाराम

विनीता मिश्रा

लखनऊ, भारत

US $5.45

ISBN 978-1-7362088-6-1

9 781736 208861